अंक तत्त्व दर्शन



वैद्य फूलचन्द्र शर्मा

अंक तत्त्व दर्शन

(पद्यात्मक प्रस्तुति)

आ० डा० प्रणव पण्ड्या जी एवं आ० दीदीजी
को सादर भेंट

लेखक

वैद्य फूलचन्द्र शर्मा

प्रकाशक

श्रद्धा आयुर्वेद केन्द्र

८/४८३, राजीव कोलोनी, गली नं० ६, सुभाष नगर

बरेली २४३००१

प्रथम संस्करण २००८ * * मूल्य ६०.००

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, दिल्ली-110093

धर्मो रक्षति रक्षितः   पंजीयन क्रमांक 1088/87   तमसो मा ज्योतिर्गमय

ब्रह्ममूर्ति श्री मौजी बाबा लोक कल्याण ट्रस्ट

श्री मौजी बाबा पावनधाम आश्रम, कोटा (राज.)

आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 जी के अन्तर्गत देय भेंट से मुक्त है।
रजि. 806/6/91–92/2474/94

संस्थापक, अध्यक्ष
म.मं. स्वामी रामानन्द सरस्वती

☎ : 500488 (आश्रम)

क्रमांक   दिनांक : 06/09/08



सन्देश

आत्मज श्री फूलचन्द्र जी शर्मा,

शुभ आशीर्वाद।

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आप द्वारा लिखित ''अंक तत्त्वदर्शन'' नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह छन्दों में विरचित है। पूर्व में इस पुस्तक को आपने मुझे सुनाया था, तभी मेरी हार्दिक इच्छा थी, कि इसका प्रकाशन होना चाहिए। क्योंकि अंकों की गरिमा शास्त्रों में भरी पड़ी है, और शास्त्र पढ़ने के लिए सामान्य जन के पास इतना अपेक्षित समय भी नहीं है। आपने अपने अथक प्रयास से १ से लेकर ९ तक के सभी अंकों पर विविध विषयों का प्रतिपादन करते हुए उन्हें एक स्थान पर संकलित करके सरल दोहों के रूप में छन्दोबद्ध किया है, जो अत्यन्त सराहनीय है तथा सामान्यजन उपयोगी भी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक जन-जन में अति प्रसिद्धि को प्राप्त करेगी। इसकी सफलता के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। मेरे आशीर्वाद सदैव आपके साथ बने रहेंगे। उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ।



समर्पण



गुरुदेव श्रीराम शर्मा

गुरु की गरिमा है बड़ी, गुरु ही सर्व महान।
रुके हुए भटके हुए, उनको दीना ज्ञान।।
देवतुल्य जीवन जिया, घोर तपस्या कीन्ह।
वरण किया तेजस विमल, कष्ट हरे सुख दीन्ह।।
श्री की कमी रही नहीं, आश्चर्यमय किये काम।
रात दिवस करते रहे, युग निर्माण के काम।।
मनसा वाचा कर्मणा, किया शिष्य उत्थान।
शरण जो आया दु:खी, दिया उसे अभयदान।।
रमे शिष्य में एकरस, छोटा-बड़ा न कोय।
माता के सम प्यार दे, प्रखर-प्रज्ञा सम होय।।

माता भगवती देवी शर्मा

मा ही सच्चा रूप प्रभु का, माँ सृष्टि की खान।
तार जोड़ ले जो चरणों से, करती मां उत्थान।।
भगवान की तुम शक्ति थीं, दायित्व तुमने सब निभाया।
गगन की छाया के नीचे, मातृत्व दे अमृत पिलाया।।
वन गमन श्रीराम जी के, क्षण मिशन आगे बढ़ाया।
तीर्थ गायत्री बनाकर, स्वयं को तिल तिल तपाया।।
दे गयीं तुम प्यार अविरल, सजल श्रद्धा में समाया।
वीर माता रूप उभरा, जब अनैतिक रूप पाया।।
शरण दी तुमने उन्हें, जो भटकते डगमगाते।
मान रक्खी, आन रक्खी, गीत तेरे गुनगुनाते।।

भूमिका

अंकों की महिमा

अंक से हमारा तात्पर्य संख्यागत १ से ९ अंकों का है। ९ का अंक पूर्णांक है, शेष सभी अंक उसके पूरक हैं। चराचर जगत में जो कुछ विद्यमान है, उसकी गणना या विस्तार-परिमाण आदि संख्या पर ही निर्भर करते हैं। संसार के विविध विषय यथा- साहित्य, दर्शन, ज्यौतिष, इतिहास-पुरातत्त्व आदि सभी विषयों में इन्हीं अंकों के माध्यम से ही इनके तात्त्विक अर्थों का ज्ञान हो सकता है। सांख्य दर्शन का तो मूल आधार ही संख्या (अंक) है। ज्यौतिष की संपूर्ण कालगणना इन्हीं अंकों पर आधारित है। विज्ञान और गणित के सभी व्यवहार अंकों से ही स्पष्ट होते हैं। इस प्रकार समस्त विश्व का लेन-देन इन अंकों पर ही आश्रित है। ये अंक विधाता की देन हैं–

अंक विधाता के लिखे, कोऊ न मेटन हार।
अलग अलग फल देत हैं, सुख दु:ख के आधार।।
अंकों की महिमा बड़ी, अंक सभी के भिन्न।
अंक तत्त्व का ज्ञान हो, यह जग बना अभिन्न।।
बीज रूप में लिख दिया, सब कुछ तेरे अंक।
क्यों चिन्ता करता है नर, राजा हो या रंक।।

ईश्वर के लिखे अंक मिटाना कठिन है, इनके ही फलों के कारण जीव दु:ख-सुख का अनुभव करता है। इनकी गरिमा एवं विभिन्न शक्ति का ज्ञान संसार में नित्य नवीन दृष्टिगोचर होता है। बीजरूप में ईश्वर ने सब अंक जन्म से पूर्व लिख दिये हैं अत: हे नर, तू चिन्ता न कर बल्कि अंकों पर चिन्तन कर, उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर।

बालकों को प्राथमिक कक्षाओं में अकों एवं अक्षरों का ज्ञान कराया जाता है। जोड़, घटा, गुणा-भाग आदि का अभ्यास और उसी के आधार पर व्यापार, धन्धा चलता है। खिलाड़ी, विद्यार्थी, राजनेता, जो भी ज्यादा अंक प्राप्त करता है, वही विजेता कहलाता है और कीर्ति यश पाता है। इसी व्यवस्थित प्रक्रिया से आर्थिक संतुलन चल रहा है।

भारतीय संस्कृति के अनेक धार्मिक ग्रन्थों में अंकों का रहस्यमयी ज्ञान, विज्ञान, गणित आदि का भण्डार है। भारतीय तत्त्ववेत्ता मनीषियों ने अंक पर बहुत शोध किया था। सांख्यदर्शन के निर्माता कपिल मुनि ने तत्त्वों की खोज के महत्त्वपूर्ण ज्ञान

का वर्णन इसमें किया जिनका सृष्टि की रचना में योगदान है। विषयों के गुणों की खोज कर विवेकसम्मत ज्ञान प्राप्त करना सांख्य कहलाता है।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान में अष्टक वर्ग की मान्यता को प्रथम स्थान प्राप्त है। इसी के द्वारा ग्रहों का बल निकाल स्पष्ट विवेचना की जाती है। जन्म कुण्डली में विराजमान ग्रहों का किससे क्या तालमेल है, क्या फल है आदि। इनका मूल अंक ही है। एक से नौ के अंकों में जो चुम्बकीय शक्ति एवं विद्युत का प्रवाह संचारित होता रहता है, वह अत्यधिक शक्तिशाली है।

१ अंक का सूर्य ग्रह है; २ अंक का चन्द्रमा ; ३ अंक का गुरु ; ४ अंक का सूर्य या हर्शल ; ५ अंक का बुध ; ६ अंक का शुक्र ; ७ अंक का वरुण या नेपच्यून ; ८ अंक का शनि, और ९ अंक का मंगल ग्रह है।

जैसे अणु आपस में मिलते हैं और उससे सृष्टि का विकास होता है, इसी प्रकार अंक भी अपने अपने अग्रसर व्यक्ति या वस्तु को अपनी ओर आकर्षित कर आत्मीयता उत्पन्न करते हैं। यह हमें अन्तिम परिणाम की ओर ले जाने में सहायक बनते हैं। इनकी गणना के आधार पर हम अपनी मनोवृत्तियों को एक स्पष्ट दिशा देने में समर्थ हो जाते हैं, यहाँ तक कि मानव जीवन के अन्तिम लक्ष्य को भी पाने के अधिकारी हो जाते हैं। राम नाम भी एक अंक है, जैसा कि कहा गया है—

राम नाम को अंक है, सब साधन है सून।
अंक गये कुछ हाथ नहिं, अंक रहे दस गून॥

एक का अंक राम नाम है, अन्य साधन शून्य के समान बेकार हैं। जैसे १ का अंक न रहे तो मात्र शून्य रह जाता है, परन्तु यदि १ का अंक शून्य से पहले हे तो दस गुना हो जाता है।

हमने यहाँ अंकों को आधार बनाकर जीवनोपयोगी सूत्र दिये हैं, जिसकी व्याख्या दोहों में लिखकर उस को समझाने का सरल प्रयास किया है।

अंक स्वयं में सिद्ध होते हैं इनका फल कब किसको मिल जाय, यह कहना संभव नहीं है —

सिद्ध अंक है मंत्र सम, कर्म सिद्धि मिल जात।
अंकों की गणना करो, अंक शास्त्र बन जात॥
शुभ होते हैं अंक कुछ, सुख शान्ति मिल जात।
अशुभ अंक हों कष्टमय, जीवन दुःखी कहात॥

अपने गुण-कर्म स्वभाव के अनुसार ही अंक भी प्रभावी होते हैं और उन्हीं के अनुसार सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। कोई एक अंक जो किसी एक को शुभ होता है, वही

अंक दूसरे को उपयुक्त नहीं होता– ये सब अंकों की विलक्षण शक्ति ही है।

इस पुस्तक में हमने अंकों पर आधारित जीवन व्यवहार के सूत्रों, सिद्धान्तों, आदर्शों, कथानकों, गूढ़ रहस्यों की परिभाषाओं को सरल दोहे-चौपाइयों में लिखने का प्रयास किया है। इसमें एक से नौ तक के नौ अध्याय हैं।

प्रो० कीरो जैसे विद्वानों ने अंक ज्योतिष पर अपने गहन विचार व्यक्त किए हैं। आधुनिक कम्प्यूटर, फोन, मोबाइल, केलक्यूलेटर आदि गणना की मशीनें अंकों के चमत्कार का ही खेल है। वैदिक गणित का मूल आधार अंकों पर ही निर्भर है।

अंक-तत्त्वज्ञान लेखन की प्रेरणा वेदमूर्ति परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा, आचार्य एवं वंदनीया माता जी की सूक्ष्म सत्ता से मिली। निम्न दोहे उनके पावन युगल चरणों में सादर समर्पित हैं–

गुरुवर की कृपा हुई, माँ का पाया प्यार।
अंक तत्त्वदर्शन लिखा, एक तुम्हीं आधार॥
एक प्रार्थना है प्रभु, अविरल पाऊँ प्यार।
सादर चरणों में करूँ, नमन है शत शत बार॥

"अंक तत्त्वदर्शन" पुस्तक को लिखने का श्रीगणेश २००७ की नवरात्र के प्रथम दिन हुआ। भगवती दुर्गा के नौ रूपों पर पाँच पाँच दोहे लिखे गये, वे ही आगे चलकर नौ अंक की गरिमा के विभिन्न विषय पर दोहों के रूप में बनते चले गये। इस प्रकार ९,८,७,६,५,४,३,२,१ का लेखन पूर्ण होता चला गया।

इस कार्य में "सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्" कल्याण विशेषांक, देवीभागवत पुराण अंक, एवं सैकड़ों पत्रिकाओं, शब्दकोषों आदि के स्वाध्याय अवसर मिला। इस हेतु आ० भाई गौरीदत्त त्रिपाठी, श्री नन्दकिशोर तिवारी एवं आ० श्री रामलाल जी शास्त्री जी द्वारा पुस्तकें उपलब्ध कराई गई। मैं उन सबका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। राम नाम की महिमा को प्रकट करते हुए किसी विद्वान् ने चमत्कारपूर्ण शैली में अंक महिमा का भी गुणगान किया है, जो द्रष्टव्य है–

नाम के अक्षर चौगुने कर,
पुनि पंच मिलाइ के दुगना कीजै।
आठ को भाग दे दो ही बचे।
यही राम है, प्यारे हृदय धरि लीजै॥

नवरात्रि पर्व (२००८) विनीत

वैद्य फूलचन्द्र शर्मा

विषयसूची

प्रथम अंक ११-१३

द्वितीय अंक १४-१७

तृतीय अंक १८-३४

त्रिदण्ड + त्रिदण्डी; त्रिपुटी; त्रिसंध्या; त्रिसुगंध; त्रिराम; त्रिशूल (आयुर्वेद); तीन चीजें आवश्यक; ३ अवस्थाएँ।

चतुर्थ अंक ३५-५०

चार मुख ब्रह्मा जी के; उपासना सफलता के ४ सूत्र; उपासना में सहायक चार बातें– १. सात्त्विक आहार; २. सत्य भाषण; ३. संयम; ४. सत्संग; चार पुरुषार्थ– १. धर्म; २ अर्थ; ३ काम; ४. मोक्ष; ४ व्यर्थ वस्तुएँ; चार आश्रम; ४ वेद; चार जातियाँ; जीवन के चार सूत्र; चतुर्भुजाकार प्लाट; चार आनन्द; चार दिशाएँ; १. पूर्व; २. पश्चिम; ३. उत्तर; ४. दक्षिण; ४ युग– १ सतयुग; २. त्रेता; ३ द्वापर; ४. कलियुग; ४ उपवेद– १. आयुर्वेद; २. धनुर्वेद; ३. गान्धर्ववेद; ४. तंत्रवेद; दुर्लभ चार वस्तुएँ; ४ परिभाषाएँ और उसके उत्तर; चार विकास के सूत्र; चार विभूतियों का सुनियोजन; ४ से बड़ी ४ चीजें; चार समिधाओं का हवन; यज्ञभस्म लेपन के ४ स्थान; संगीत में चार वर्ण; १. स्थायी वर्ण; २. आरोही वर्ण; ३ अवरोह वर्ण; ४ संचारी वर्ण; ४ मार्ग से जीवाणुओं का प्रवेश; चार प्रधान शत्रु; धर्म के चार रूप; ४ वस्तुएँ कभी नष्ट नहीं होती; शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित चार मठ; १. शृंगेरी मठ २. गोवर्द्धन मठ; ३. शारदा मठ;४. ज्योतिर्पीठ; ४. प्रकार का दान (जैन धर्म); आत्मज्ञान के ४ प्रकार; चार मुखी रुद्राक्ष; चार चीजों की तुलना; ४ से ४ का नाश; ४ बातें नहीं होती; मनुष्य देह के ४ द्वार ४ दिक्पाल; ४. दिशाओं के ४ दिक्पाल; ४ प्रकार की दीक्षा (योग में); विवेकचिन्तामणि में ४ दीक्षाएँ; ४ प्रकार का प्रेम; ४ वेद ४ उपाधियाँ; प्रणाम से ४ लाभ; ४ बातों की पहचान करें; ४ लाभ आचार के; ४ चीजों को समूल नष्ट करें; ४ शत्रु; जल के गुण चार; भारतीय संस्कृति के ४ अंग; १ ईश्वरीय सत्ता; २. ईश्वरीय न्याय; ३. कर्मानुसार दण्ड; ४ गुणकर्म स्वभावानुसार समाज व्यवस्था; वाणी के चार प्रकार; ४ धाम; स्त्रियों की ४ अवस्थाएँ; ४ अंक ज्योतिष; ४ प्रकार का जप; ४ दुर्गुण; ४ प्रमाण; ४ प्रकार के प्राणी; भारतीय संस्कृति के ४ आधार; ४ पहलू।

पंचम अंक ५१-७३

गायत्री के पाँच मुख; ५ प्रकार से आसनों का नामकरण; ५ हिंसा के स्थान; ५ प्रकार श्राद्ध; ऊँ नमः शिवाय (पंचाक्षरी मंत्र); ऊँ भूर्भुवः स्वः (गायत्री पंचाक्षरी); पंचायत; ५ माताएँ ; ५ पिता ; ५ तत्त्व; ५ ज्ञानेन्द्रियाँ; ५ कर्मेन्द्रियाँ; ५ प्राण; शक्ति पंचक; ५ व्यक्ति मरे के समान; ज्योतिष के पाँच अंग; ५ रत्न; पंच गव्य; पंचामृत; योग के पाँच नियम; पंच महायज्ञ; पंच तत्त्व; पंच महाव्रत (जैनधर्म) (यम के पांच

भाग); इस्लाम धर्म के ५ नियम; सिख पंथ के पंच प्यारे ; प्राकृतिक चिकित्सा (पंचकर्म); पंच बलि ग्रास; पाँच उँगुलियाँ; पंच नदियाँ; ५ श्रद्धा सूक्त (ऋग्वेद का दशम मण्डल); ५ बातें किसी से न कहें; इन्द्र द्वारा रोहित को ५ शिक्षाएँ; ब्रह्मा की पांचवेदी; ब्राह्मणों के पाँच भेद; पाँच द्रव्य देवताओं पर चढ़ाए जाते हैं; ५ संस्कृत के महाकवि; ५ पल्लव; ५ मुखी रुद्राक्ष; पाँच चीजें सदा नवीन लगती हैं; पंचकर्म चिकित्सा; साधकों के लिए ५ का त्याग; रास पञ्चाध्यायी में नाम संकीर्तन स्वरूप; संस्कृति के ५ प्रतीक; ५ सकार; पंच शील (बौद्ध धर्म); त्रिपिटक के पाँच शील; भारत-चीन संधि (पंचशील सिद्धान्त); पंचशील पं०श्रीराम आचार्य; भारतीय संस्कृति के पाँच प्राण; पंच ककार (क); पंच गकार (ग); पंच मकार (म); पंच प्रयाग; पंचदेव; पंच पुष्प; पांच स्वर; पंच बदरी; अभिनय के ५ अंग; औषधि के ५ अंग; ब्राह्मण की ५ प्रकार की जीविका; ५ अंक ज्यौतिष; पंच महाव्याधियाँ; ५ अमूल्य वस्तुएँ; पाँच की असाधारण उत्पत्ति; पंच केदार; पंच कोष; जीव की ५ अवस्थाएँ; मनुष्य जीवन की ५ अवस्थाएँ; स्त्री जीवन की ५ अवस्थाएँ; ५ पवित्र कन्याएँ; ५ दैवी प्रकोप; ५ साहित्य के दोष; ५ धान्य; नाटक के ५ अंग; पंचक दोष; पंचानन।

षष्ठम अंक ७४-८६

बरेली महानगर की ६ दिशाओं में ६ नाथ; षडानन; ६ दर्शन; छह वेदाङ्ग; षट् ऋतुएँ; षट् कर्म (यज्ञ पूर्व); षड्रस; दैनिक षट्कर्म; छह बातें विचारणीय; षट् तीर्थ; आध्यात्मिक षट् सम्पत्तियाँ; षट्कोण; आयु काटने वाले ६ दोष; गृहमहिमा के ६ सूक्त; ६ शत्रु ६ समाधान; ६ मुखी रुद्राक्ष; षट्-चक्र (कोष); षष्ठी सूर्य व्रत; षट्कर्म— गृहणी के होते हैं; जैन धर्म में ६ कर्म; संन्यासियों के ६ कर्म; हठयोगियों के ६ कर्म; छह वीर छह-शंख; ६ चीजें बिना आग के जलाती रहती है; ६ अंक ज्योतिष; ६ वस्तुएँ शाश्वत नहीं होती; कुल की परीक्षा ६ प्रकार से करे; जीव के ६ गुण; ६ प्रकार से वनस्पति की सृष्टि हुई।

सप्तम अंक ८७-९८

गायत्री महामंत्र की ७ शक्तियाँ; ७ वस्तुएँ अभिमान का कारण; सप्तपदी; ७ ईश्वर कृत आश्चर्य; ७ मुखी रुद्राक्ष; ७ सप्तबदरी; सप्त धातुएँ; ७. सप्त घृतमातृकाएँ; ७ करन्यास; ७ सात आज्याहुतियों; राजा प्रियव्रत के ७ पुत्रों के सात द्वीप; सात चिरंजीवी; सात ऋषि; सात समुद्र; सात पर्वत; सात ऋषि (महाभारत); सप्त पालात; सात जगह मौन रखें ; विवाह पूर्व ७ गुणों का विचार; ७ अंक ज्योतिष; सात लोक; सात स्वर संगीत; सूर्य के ७ रंगों से चिकित्सा (जल द्वारा); स्वर्ग के कारणभूत ७

गुण; ७ 'वार' में जन्मे जातक का फल; ७ मुक्ति के आधार; सृष्टि निर्माण में ब्रह्मा की सात सहायक शक्तियाँ; सात मातृकाएँ (तन्त्रानुसार); गंगा की सात धाराएँ।

अष्टम अंक ९९-११२

आठ सिद्धियाँ; अष्टांग प्रणाम; अष्ट वसु; अष्टछाप कवि; कुम्भक प्राणायाम के ८ प्रकार; आयुर्वेद चिकित्सा के आठ अंग; आठ अंग (निघण्टु अनुसार); अष्टांग योग; (यम; नियम; आसन; प्राणायाम; प्रत्याहार; धारणा; ध्यान और समाधि); बौद्ध धर्म की साधना के आठ अंग; आठ प्रकार के विवाह; उक्त विवाह के परिणाम (प्रथम ४ शुभ); शेष ४ अशुभ; आठ गुणों का मिलान (ज्योतिष); श्री विदुर जी द्वारा कथित आर्य जाति के आठ गुण; आठ मुखी रुद्राक्ष; आठ लोकपाल; आठ दिशाएँ; अष्ट विनायक; अष्टगंध; अष्टावक्र; अष्टमूर्ति; महानाद के ८ भेद; आठ अंग गोदावरी के; गायत्री के आठ अंग; गायत्री के आठ छन्द; आठ प्रकार की लक्ष्मी के स्वरूप; आठ के लिए मार्ग छोड़ना चाहिए; अष्टधातु; आठ भुजा का मकान; आठ शूल; ८ अंक ज्योतिष।

९ का अंक ११३-१५२

९ का पहाड़ा पढ़िए; गायत्री मंत्र में नौ शब्द— यज्ञोपवीत में नौ धागे; ९ प्रकार का विनियोग; नौ दुर्गा पूजन (नवरात्र पर्व में); यज्ञोपवीत के नौ धागे; नौ गुण; नवग्रह; नवरात्र पर्व; नौ रत्न ; नव धातु; नवग्रह यज्ञ हेतु नौ वृक्षों की समधाएँ ; साहित्य के नौ रस; नवपत्रिका; नवधा भक्ति; श्रीमद्भागवत पुराण में नवधा भक्ति; शरीर के नौ द्वार; नौ मुखी रुद्राक्ष; नौ कन्याएँ पूज्य होती हैं; नव शक्तियाँ; आयुर्वेद में नौ विष; नौ धान्यो के नौ ग्रह; नौ नाद (शिव उमा संहिता); ब्राह्मण के नौ गुण (मानव मात्र); जम्बूद्वीप में ९ नौ वर्ष हैं (नव खण्ड); इन नौ विभागों के उपास्य नौ हैं; नव ब्रह्मा; विक्रमादित्य की सभा के नौ पण्डित; ९ सूक्त (दीर्घायु की प्रार्थना) (अथर्ववेद पैप्पलाद शाखा ६/१८); नौ गुण चारों वर्णों के लिए; अकबर के नौ रत्न; नवनिधियाँ; नव नाथ; ९ अंक ज्योतिष।



प्रथम अंक

ॐ

एकाक्षर ब्रह्म ॐ है, बोले ईश मनाय।
देह त्याग कर जात जो, परम गति पा जाय।।

एक ब्रह्म

एक ब्रह्म दूजा नहीं, जाने सकल जहान।
सकल विश्व में रम रहा, फिर भी है अनजान।।

एक आनन

एकानन श्री विष्णु हैं, पालें सब संसार।
चींटी से हाथी तलक, भरे सभी भंडार।।

एक धर्म ही मित्र है

धर्म ही ऐसा मित्र है, जाय मृत्यु के साथ।
शेष नष्ट हो जात हैं, ज्यों शरीर चलि जात।।
ॐ ही केवल ब्रह्म है, प्राणायाम तप जान।
गायत्री महामंत्र है, मौन अधिक सच मान।।

एक मुखी रुद्राक्ष

परब्रह्म का रूप है, एक मुखी रुद्राक्ष।
अर्द्धचन्द्राकार में, एक प्रभु ही साक्ष।।
शिव स्वरूप है एक मुख, करे पाप का नाश।
अंगुष्ठाकार हृदमध्य में, दुर्लभ दर्शन की आस।।

जो आँखों से दीखता, रूप रंग आकार।
प्रकृति दृश्य को देखते, कहते हैं साकार।।
एक ओंकार कहावता, ईश्वर का है नाम।
जपो निरन्तर प्रेम से, उसको आठो याम।।
आकार में न बँध सके, बने न कोई चित्र।
निराकार ईश्वर कहें, बात है बड़ी विचित्र।।

एक स्वरूप

एक अग्नि, सूर्य एक है, ऊषा एक ही जान।
आत्मा सब में एक है, ईश्वर एक समान।।

एक दण्डी

एक दण्डी ब्राह्मण ही, दण्डी स्वामी कहाय।
दसनामी संन्यासियों में, आधिकारिक कहलाय।।

एक दन्त

परशुराम से युद्ध में, टूट गया एक दांत।
एक दंत प्रसिद्ध भये, गणपतिजी भये शान्त।।

एक पत्नी

पति की सेवा में लगी, याचक दिया न ध्यान।
क्रोध किया चिड़िया मरी, एक पत्नीव्रत जान।।

एकलव्य

द्रोणाचार्य की मूर्ति बना, धनुर्विद्या भये निष्णात।
कुत्ते का मुख सीं दिया, अंगुष्ठ दान कर शान्त।।

एकलिङ्ग जी

शैवतीर्थ एकलिंग जी, उदयपुर मण्डल मांय।
चतुर्मुखी मूर्ति मेवाड़ में, नृप आराध्य कहाय।।

ऐकेश्वरवाद

एक ही ईश्वर रूप है, करता जो विश्वास।
उत्पत्ति-स्थिति-संहार में, शिवजी से एक आस।।

एकाकी

एक धारा चरित्र की, नाटकीय रचना एक।
एक प्रसंग का दृश्य ही, एक पक्ष सम देख।।

अर्धनारीश्वर

वायें भाग में पार्वती, दक्षिण में शिव स्थान।

अर्धनारीश्वर रूप है, जाने सकल जहान॥

अर्धलक्ष्मीश्वर

आधे में लक्ष्मी वसे, आधे हरि विद्यमान।
अर्धलक्ष्मीश्वर रूप में, विष्णु रूप को मान॥

१ अंक ज्योतिष

जन्म तारीख और वर्ष का, मूल अंक एक जान।
दृढ़ निश्चय और सक्रिय, विचार धारा जातक मान॥
एक अंक है सूर्य ग्रह, सब का अधिपति होय।
तेजस्वी और उग्र है, आत्मसिद्धि फल होय॥
रवि, सोम, शुभ होत हैं, अंक देत विश्वास।
अभय रहो जग मध्य में, कर ईश्वर में आस॥
पीला रंग एक अंक, जातक शक्ति पात।
पूर्वाभास हो जात है, भार बड़े सुन तात॥

कन्याकुमारी

सूर्य एक समुद्र से, उदित होत छिपजात।
दक्षिण पूर्व भाग में, कन्याकुमारी विख्यात॥
कन्यारूप में पार्वती का, है सुन्दर स्थान।
हिन्दु तीर्थ पावन बना, करते नमन सुजान॥

ब्रह्मा जी का मन्दिर

ब्रह्मा जी का एक है, मन्दिर पुष्कर स्थान।
पुष्कर तीर्थ महान है, गाये सब गुणगान॥



द्वितीय अंक

२ रूप

शब्द, स्पर्श, दो रूप हैं, दो गुण जाने जात।
वायु का आभास हो, नयना नाहिं दिखात।।

दो द्वारपाल (विष्णु भगवान के)

महल के बाहर रहते थे, दो ही द्वारपाल।
जय-विजय नाम था, चौकस थे हरकाल।।

द्विदेह

शिर गणेश का काटकर, हाथी मस्तक लगाय।
तब द्विदेह के नाम से, गणपति जी कहलाय।।

द्विज

मातृ उदर से जन्म हो, दूजा गुरु से होत।
यज्ञोपवीत पहनावते, द्वितीय जन्म ही होत।।

दो कुम्भक

१. आन्तरिक–

श्वास खींचने की क्रिया, रुके जब अन्दर जाय।
आन्तरिक कुम्भक कहत है, दोष कटे क्षण माय।।

२. बाह्य कुम्भक –

बाहर निकले वायु जब, बिना सांस ठहराव।
बाह्य कुम्भक जानिए, दूषित वायु घुल जाव।।

२ प्रकार के संगीत –

१. भाव संगीत

भावों की अभिव्यक्ति का, भाषा शब्द आधार।
रुचिकर सुनने में लगे, करता बेड़ा पार।।

२. शास्त्रीय संगीत –

राग रागिनी, शास्त्रविधि, गायन वादन जान।
स्वर की रहे प्रधानता, यही मूल पहचान।।

२. प्रकार के नाद होते हैं

१. आहत

आघात घर्षण वायु से, आहत हो जब यन्त्र।
ढोल सारंगी, बांसुरी, मधुर गूंजते मन्त्र।।

२. अनाहत

प्रकृति में ध्वनियाँ उठें, कर्ण नहीं सुन पाय।
नाम अनाहत कहत है, योग अनुभूति भाय।।

२. प्रकार के स्वर

१. अचल

निज स्थान से जो स्वर, नीचे न ऊँचे होत।
षड्ज और पंचम सुनो, दोऊ अचल ही होत।।

२. चल-अचल

अपने स्वर से नीचे के, कोमल स्वर कहलाय।
ऊँचा हो स्वर तीव्र कहें, स्थिर शुद्ध कहाय।।

२ अंक ज्योतिष

दो अंक हो मूल वे, कलाकृति होशियार।
शारीरिक बल कम रहे, मस्तिष्क तेज अपार।।
रवि सोम और शुक्र है, शुभकारी तू जान।
दो, ग्यारह, बीस, उन्तीस का, मूल योग दो जान।।
मन में आये विचार यदि, करें सुनिश्चित होय।
चन्द्र ग्रह स्त्री जातक है, लाभ या हानि होय।।
गहरा नीला रंग ही, दो अंक का होय।
ज्ञान और विज्ञान दे, अन्वेषक नर होय।।

२ पक्ष

१. कृष्ण पक्ष

शुरू माह की पड़वा से, तिथि अमावस जान।
कृष्ण पक्ष कहलावता, निशा अंधेरी मान।।

२. शुक्लपक्ष

अमावस तिथि के बाद ही, पड़वा से पूनम जान।
शुक्लपक्ष कहते सभी, रात उजाली मान।।

धर्म के २ अंग

प्रथम ज्ञान है धर्म का, तत्त्वज्ञान प्रधान।
आचरण में धारण करो आचार उसे पहचान।।

२ मुखी रुद्राक्ष

शिव शक्ति, माया ब्रह्म का, संयुक्त स्वरूप दर्शाय।
बुद्धि विवेक जागे सदा, प्रेम शान्ति मिल जाय।।

दिन-रात

सूर्य की साक्षी दिन कहें, जग में हलचल होय।
प्राण शक्ति पा जीव खुद, कार्य अधिकतम होय।।
रात्रि साक्षी चन्द्र की, मन का धनी कहाय।
हलचल होय समाप्त निशि, नयन नींद छा जाय।।

शुभ (गणेश) और लाभ (लक्ष्मी)

कारज शुभ मिलके करो, फल अच्छा हो तात।
चिन्तन जिसका शुभ रहे, शुभ ही शुभ दिखलात।।

लाभ मिले हर कार्य में, मंगल हो सब साज।
लक्ष्मी की किरपा मिले, ऊँचा उठे समाज।।

२ अवस्थाएँ

सुख दुःख दो ही अवस्था, पाये जीव जहान।
पूर्ववाल्य-तारुण्य है, उत्तर पौढ़ वार्धक्य जान।।

जीव की दो अवस्था

साधनामय जीवन जिये, साधनावस्था मान।
सिद्धि को जो पा सके, सिद्धावस्था जान॥

जीवन के दो पहलू

दो पहलू को जान ले, जीवन पहला जान।
दूजा मृत्यु को कहें, सारे चतुर सुजान॥

दो प्रकार की मृत्यु

काल मृत्यु

जीव रहे जब तक यहाँ, पा शरीर जग मांय।
समय पूर्ण कर जात है, काल मृत्यु कहलाय॥

अकाल मृत्यु

बिना नष्ट प्रारब्ध के, देह को करता त्याग।
अकाल मृत्यु कहावती, नष्ट होय सब राग॥

विश्व की दो अवस्था

जड़ चेतन दो अवस्था, सकल विश्व की मान।
जड़ पदार्थ की स्थिति, चेतन रमा जहान॥

दो गुप्त गंगा

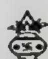
गया जी की फल्गु नदी, जहां करते हैं स्नान।
प्रयाग की माँ सरस्वती, गुप्त गंगा को मान॥

नल और नील

विश्वकर्मा के पुत्र दो, वानररूप धरि आय।
रामेश्वर लंका मध्य में, सेतुबंध बन जाय॥

दो विद्यायें- परा-अपरा

आत्मविद्या, ब्रह्म विद्या, परानाम से जान।
वेद और वेदांग को, अपरा विद्या मान।



तृतीय अंक

भारतीय संस्कृति के ३ स्तम्भ

१. संत — आदर्शों की प्रस्तुति, करते निज गुण मान।
सज्जनता, शालीनता, मानवता पहचान।।
२. सुधारक — भ्रष्ट होत चिन्तन जब, मानव होत निराश।
दुराचरण से जूझते, प्रवल सुधारक आश।।
३. शहीद — स्वार्थ ढले परमार्थ में, यह शहीद का काम।
तन परिवार को भूलते, विश्व बने सब धाम।

स्टेट मार्डन ने तीन बातें कही हैं

१ शान्ति Peace जीवन में शान्ति मिले, यह सब जन की चाह।
कर्म सदा अच्छे करो, जग में हो वाह वाह।।
२ शक्ति Power अन्तर्मुखी साधना से, शक्ति भक्त पा जात।
वाह्य जगत चिन्ता तजो, मौन जाप कर तात।।
३. सम्पत्ति Plenty आध्यात्मिक सम्पत्ति बड़ी, भौतिक है नाशवान।
जो इसका संचय करे, जानो चतुर सुजान।।

तीन पवित्र धाराएँ

१. गंगा गंगा जल का पान कर, परम औषधि जान।
जीवित, मृत, पितृ तरें, मुक्ति देत धन धान।।
२. यमुना श्रीकृष्ण की प्रिया है, कृष्ण रंग छवि होय।
ध्यान, पान, स्नान से, मुक्त भक्त तव होय।।
३. सरस्वती हो अदृश्य माँ सरस्वती, संगम कर स्नान।
भक्त शक्ति को पात है, धरता तेरा ध्यान।।

अध्यात्म की तीन सीढ़ियाँ

१. उपासना ईश पास बैठो सुजन, पाओ शक्ति महान।
प्रतिदिन उसका ध्यान कर, तप से हो कल्याण।।

२. साधना साधे इन्द्रिय मन सदा, साधक वही सुजान।
दृढ़ संकल्पी होय जन, सिद्धि मिले महान।।

३. आराधना परोपकार सेवा करो, मन में करुणा धार।
आराधना है विराट की, मिले सभी का प्यार।।

धन की तीन गतियाँ

प्रथम दान जो न करे, धन का करे न भोग।
धन का अन्तिम नाश हो, तीन गति का योग।।

भगवद्प्राप्ति के तीन साधन

१. भक्ति बिना भक्ति के भक्त को, मिले न ईश जहाँन।
भजन बिना भगवान के, जीवन न आसान।।

२. ज्ञान ज्ञान बिना इस जगत् में, मुश्किल हैं सब काम।
अर्जित जो करता इसे, सुख हो आठो याम।।

३. कर्म यह जग कर्मों से बंधा, सूरज, चन्द्र, आकाश।
जल बरसे, वायु चले, सब में कर्म का वास।।

भगवद्प्राप्ति के तीन फल

१. शान्ति शान्ति शक्ति अपार है, सब में शान्ति होय।
मौन शान्ति का मंत्र है, ध्यान करो सब कोय।।

२. तुष्टि तुष्ट नहीं होता स्वयं, सब कुछ पाके जीव।
असंतोष ही रम रहा, प्रभु के नहीं करीब।।

३. तृप्ति तृप्त रहो हर हाल में, ईश्वर का वरदान।
जो पाया उसकी कृपा, तृप्ति पाय सुजान।।

नैतिक उत्थान के ३ सूत्र

१ चिन्तन चिन्तन जैसा जो करे, वैसा ही फल पाय।
प्रभु के चिन्तन में रमे, राम उसे मिल जाय।।

२ चरित्र चरित्रवान को पूजते, जग के चतुर सुजान।
चरित्र भ्रष्ट जिनने किया, उनका कहाँ सम्मान।।

३ व्यवहार — व्यवहारिक जीवन बनें, वे जन जन प्रिय होंय।
सब से अच्छी पूंजी है, मनन करे यदि कोय॥

युग निर्माण के तीन सूत्र

१ व्यक्ति — व्यक्तित्व करले ठीक तू, बन अच्छा इन्सान।
तेरे अन्दर रम रहा, आदर्शी भगवान्॥

२. परिवार — एक परिवार के लोग जो, रहते खाते साथ।
छाया में जीवन रहे, दुःख सुख काटे साथ॥

३. समाज — व्यक्ति और परिवार से, निर्मित होत समाज।
दोनों में यदि सुधार हो, बनता सभ्य समाज॥

तीन का त्याग करें

काम, क्रोध और लोभ, ये तीनों को तू मार।
नष्ट आत्मा को करें, तीन नरक के द्वार॥

तीन देवता

१ ब्रह्मा — दुनियाँ को पैदा किया, ब्रह्मा नाम कहाय।
चतुर्मुखी तव ज्ञान है, अद्भुत सृष्टि रचाय॥

२ विष्णु — चींटी से हाथी तलक, पालें सब संसार।
चार भुजा धारण करें, हैं सबके दातार॥

३ महेश — पातक बढ़ते जगत में, करते तुम संहार।
उथल पुथल कर सृष्टि में, देते दण्ड अपार॥

जीवन के तीन मूल्य

१. सत्यम् — सत्य नाम है ईश का, सत्य ही जग आधार।
बिना सत्य सब व्यर्थ है, सत से करले प्यार॥

२. शिवम् — कल्याणक शिव नाम है, करता बेड़ा पार।
सच्चे मन से जपे जो, उन्हें नमन शतवार॥

३. सुन्दरम् — सुन्दर छवि है ईश की, सुन्दर सबहिं लखात।
दृष्टि सुन्दर तू बना, सब सुन्दर बन जात॥

तीन गुण

१. सत	विकृत ना होता कभी, गुण रहता विद्यमान। सतोगुणी कहावता, सत को जान सुजान।।
२ रज	मानस में जब भाव ये, रज के आयें सुजान। जीवन राजसिक होत है, भोगे भोग महान।।
३ तम	तमोगुणी वृत्ति बने, तन मन करती नाश। आधि व्याधि पैदा करें, जन जन पाये त्रास।।

शरीर की तीन प्रकृति

१. वात	वात संचय हो ग्रीष्म में, शमन शरद में जान। प्रकोप वर्षा ऋतु बढ़े, वायु रजोगुण जान।
२. पित्त	संचय वर्षा ऋति सुनो, शमन हेमन्त मान। शरद में प्रकुपित होत है, पित्त वृद्धि तू जान।।
३. कफ	कफ संचय हेमन्त में, शमन ग्रीष्म ऋतु होय। प्रकुपित होय बसंत में, रोग में वृद्धि होय।।

धर्म के ३ अंग

तीन धर्म के अंग हैं, प्रायश्चित्त, व्यवहार।
आचरण शुद्धि जो करे, कहलाये सदाचार।।

तीन शरीर

१ स्थूल	दृश्य जगत को देखते, सारे चतुर सुजान। छाया मस्तक.पर रहे, करते सब गुणगान।।
२ सूक्ष्म	सूक्ष्म दृष्टि से परे है, यंत्र ही होत सहाय। मनन करे मन से सदा, जीवन पवित्र बनाय।।
३ कारण	कारण सत्ता कब कहाँ, करती है क्या काम। पता किसी को न चले, दुःख सुख न आराम।।

तीन क्रान्तियाँ (युग निर्माण हेतु)

१ नैतिक	नीति से जीवन जियो, पाओगे सम्मान। पूँजी सबसे है बड़ी, नैतिक हो उत्थान।।

२ बौद्धिक	बौद्धिक उन्नति पाइके, ऊँचा हो इंसान। बुद्धिमान को पूजते, सारे जग दरम्यान।।
३. सामाजिक	सामाजिक स्तर बढ़े, राष्ट्र पाये सम्मान। ये गौरव की बात है, जानो चतुर सुजान।।

गायत्री माता के तीन रूप

१ वेदमाता	चार वेद हैं, पुत्र सम, वेदमाता कहलात। ऋग, यजु, साम अथर्व की, ज्ञान शक्ति विख्यात।।
२ देवमाता	माँ के आंचल में पले, देव सभी बलवान। ममता पाकर पुष्ट हों, देय निरन्तर दान।।
३ विश्वमाता	विश्व पूजता रूप तब, देती निज अनुदान। विश्वमाता के नाम से, जाने सकल जहान।।

व्यक्ति के तीन आधार

१ स्वस्थ शरीर	स्वस्थ शरीर के रहन से, कारज सारे होत। क्रियाशील तन यदि रहे, ये शक्ति का स्रोत।।
२ स्वच्छ मन	निर्मल मन कर लीजिए, प्रभु हों तेरे पास। स्वच्छ सफल जीवन बने, आत्मा में हो विकास।।
३ सभ्य समाज	स्वस्थ शरीर की प्रक्रिया, स्वच्छ मन हो जाय। सभ्य समाज बनता तभी, जब तीनों मिल जाय।।

मुक्ति के ३ मार्ग

असत छोड़ सत ले चलो, छोड़ अंधेरा प्रकाश।
मृत्यु से पा अमरता, ले चल प्रभु के पास।।

यज्ञ के तीन सूत्र हैं

१ देवपूजन	देवों का पूजन करो, दुष्टों का प्रतिकार। प्रथम सूत्र है यजन का, सत्कर्मों से प्यार।।
२ संगतिकरण	देव संगठित हों यदि, मिलके करें जो काम। द्वितीय सूत्र कलिकाल में, संघ शक्ति आयाम।।

३ दान	श्रेष्ठ कार्य हित दान दे, उत्तम दान कहाय।
	एक दाना बोवे कृषक, सौ दाने पुनि पाय॥

तीन वचन

एक वचन	बोध एक का होय जहाँ, एक वचन कहलाय।
द्विवचन	जिसमें दो का बोध हो, द्विवचन कहलाय।
बहुवचन	दो से ज्यादा होंय जो, बहुवचन में आय।
	उक्त तरीके से सुनो, तीन वचन कहलाय॥

जैन धर्म में ३ मोक्ष के मार्ग

१ सम्यक् दर्शन —	श्रद्धा जिनकी हो यदि, ज्ञान यथार्थ वे पात।
	सम्यक दर्शन होत ही, मोक्ष सहज पा जात॥
२ सम्यक् चरित्र	उचित कर्म कर ले मना, कर्म बंधन कट जात।
	सम्यक् चरित्र से जीव को, मुक्ति तुरत मिल जात॥
सम्यक् ज्ञान	नष्ट कर्म जब होत हैं, मन निर्मल हो जाय।
	सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति, साधक को मिल जाय॥

बौद्ध धर्म के तीन भाग

१ हीन यान	महापुरुष के रूप में, गौतम बुद्ध को जान।
(पाली भाषा)	निर्वाण साधना से मिला, निवृत्ति प्रमुख हीनयान॥
२ महायान	हीनयान के भक्त जो, भावुक किया प्रसार।
	संस्कृत में साहित्य है बोधिसत्व आधार॥
३ वज्रयान	बुद्धावतार सब मानते, तन्त्र साधन प्रधान।
	तृतीय मत जो मानते, शाखा है वज्रयान॥

त्रिस्थली

तीन तीर्थ सर्वश्रेष्ठ हैं, काशी, गया, प्रयाग।
इनके दर्शन के बिना, अर्ध यात्रा का भाग॥

अग्नि के तीन गुण

अग्निदेव में तीन गुण, कहते चतुर सुजान।
शब्द, स्पर्श, और रूप है, महिमा करूँ बखान॥

तीन सात्त्विक देव जातियाँ

१ देवता पदार्थों के अधिष्ठाता, नित्य देवता मान।
लोकपाल और प्रजापति, ग्राम देवता महान।।
महाविद्या और योगिनी, स्वर्गदेव स्थान।
देते हैं निशिदिन हमें, दिव्यशक्ति अनुदान।।

२ गन्धर्व गान विद्या में निपुण जो, वे गन्धर्व कहलाय।
अधिपति इनके चित्ररथ, सुख देवों सम पाय।।

३ अप्सराएँ स्वर्गलोक में जो रहें, अप्सराएँ दिव्य कहलाय।
नित्य कुमारियाँ नृत्य करें, उर्वशी रम्भादि मन भाय।।

राजसिक

१. कुबेर के अनुचर यक्ष हैं, असुर श्रेणी में आय।
२. किन्नर गाते देव हित, स्तुति कर हुलसाय।।
३. दैत्यों में अहंभाव रह, क्रूर विलासी कहाय।
ऋषि कश्यप के पुत्र हैं, ज्येष्ठ देव कहलाय।।

तामसिक

१. राक्षस दैत्यों की सेवा करें, राक्षस वे कहलाय।
महाक्रूर करनी करे, राक्षसी वृत्ति भाय।।

२. नाग दिव्य जाति में नाम है, अधोलोक करें निवास।
कर्कोटक और वासुकी, शेषनाग का वास।।

३. प्रेत प्रेत पिशाच और डाकिनी, शाकिनी भूत वैताल।
कूष्माण्ड भैरव विनायक, रुद्रगणों की क्रूर चाल।।

त्रिकूट

तीन चोटियों युक्त है, पर्वत एक सुजान।
स्वर्ण रजत हिम से भरी, सूर्य चन्द्र विद्यमान।।
तृतीय चोटी बर्फ की, दरश संत कर पाय।
लंका स्थित त्रिकूट है, रूपसुंदरी सिद्धि पाय।।

पदार्थ के तीन रूप

१. ठोस — ठोस रूप कहलात इक, दृष्टि परत लखात।
किसी नाम से जानते, रूप अनेक बनात।।

२. द्रव्य — गर्म करे तो द्रव्य बन, बहता है तत्काल।
अनेक पात्र में आइके, होता स्वयं निहाल।।

३. गैस — उच्च ताप देते इसे, गैस रूप बन जात।
पदार्थ वही तो ठोस था, द्रव्य न ठोस दिखात।।

तीन काल

१ वर्तमान — समय आज जो चल रहा, वर्तमान कहलाय।
कर लो सदुपयोग तुम, आगे कछु न लखाय।।

२ भूत — बीता कल था समय जो, वह अब हाथ न आय।
याद शेष रह जात है, भूतकाल हो जाय।।

२ भविष्य — आने वाला कल है, कैसा हो गुण जान।
ये भविष्य के गर्भ में, काल भविष्यत मान।।

गाँयन के तीन अंग

१ गायन — गायन गीतों का करें, मुग्ध होय संसार।
सारंगी, वायलिन, बांसुरी, हारमोनियम, गिटार।।

२ वादन — वायु प्रभाव से बाजते, सहे आघात दिन रात।
वादन यन्त्र से बाजते, होय प्रफुल्लित गात।।

३ नृत्य — कत्थक नृत्यों में प्रमुख, कठिन, कला प्रवीण।
ताण्डव नृत्य शिव ने किया, नाग नाचता बीन।।

तीन प्राणायाम

१ पूरक — प्राण वायु को खींचते, फैफड़े सांस भरि जात।
पूरक क्रिया कहावती, बल इनको मिल जात।।

२ कुम्भक — सांस फैफड़े रोकते, अन्तःशुद्धि होय।
सांस बड़ी है कीमती, इनकी गणना होय।।

३ रेचक बिना कष्ट के जब हवा, क्रमश: बाहर आय।
रेचक क्रिया नाम है, सिकुड़ फैफड़े जाय।।

त्रिकोण

भुजा तीन सम जानिए, कोण तीन सम होय।
त्रिभुजाकार गृह अधम है, दूर रहे हर कोय।।

त्रिफला

१. हरड़ (बड़ी) मृदु विरेचक द्रव्य है, सेवन हानि न होय।
पीली जीर्ण ज्वर अतिसार में, नेत्र अजीर्ण प्रमेह होय।
त्रिदोषनाशक गुण भरे, मींगी मधु, रेशे अम्ल।
छिलका कटु, वृत्त तिक्त है, गुठली कषाय बल।।

२ बहेड़ा मधुर कषाय रस युक्त है, कफ पित्त नाशक जान।
उष्ण वीर्य शीतल छुये, मल निष्कासन मान।।
नेत्ररोग बल रक्षा करे, कास कृमि रहे न नाश।
प्यास वमन को रोकता, वायु कफ का करे नाश।।

३ आँवला रक्त, पित्त, प्रमेह दूर कर, वीर्य वृद्धि रसायन जान।
अम्ल, मधुर रस युक्त है, वायु पित्त पलायन जान।।
रूक्ष कषाय भरपूर है, कफ को दूर भगाय।
च्यवनप्राश में प्रमुख है, विटामिन सी अधिकाय।।

त्रिकुटा

सौंठ उत्तम पाचक, कफवात हर, उत्तेजक द्रव्य जान।
उदरशूल, वायु शमन हो, अन्न पचा ही मान।।
शिर नाड़ी दन्तशूल में, चूर्ण गर्म जल पान।
सौंठ गुण के साथ में, अर्श अजीर्ण बलवान।।

२ मिर्च (काली) कटु रसयुक्त तीक्ष्ण है, वात कफ दूर होय।
उष्णवीर्य पित्त रूक्ष है, शूल कृमि नष्ट होय।।
आमाशय रस वृद्धि हो, जीर्ण सुजाक मिट जात।
जुकाम कास में लेत हैं, आख दाँत लाभ पात।।

३ पीपर (छोटी) अग्निदीप्त, पाकमधुर रस, उष्ण रसायन जान।
श्वास कास, ज्वर उदर में, उम्दा इस को मान॥
आमवात नाशक शोथहर, दुगना गुड़ से खाय।
कफ का निस्सारण करे, प्रसूति ज्वर भग जाय॥

तीन नाड़ियाँ

१ इड़ा (चन्द्र नाड़ी) नाक के बांयी ओर जो, इड़ा नाड़ी कहलाय।
विचार को नियंत्रित करे, शीतलता दरसाय॥
२ पिंगला (सूर्य नाड़ी) नासिका दांयी तरफ, सूर्य नाड़ी शुभ नाम।
प्राणशक्ति का नियंत्रण, दांये भाग का काम॥
३ सुषुम्ना मध्य नाड़ी को जानिऐ, न ठंड़ी है न गर्म।
तालमेल करती दोऊ, ज्ञान प्रकाश का मर्म॥

तीन मुखी रुद्राक्ष

तीन गुणों से युक्त यह, उद्भव, पालन, संहार।
त्रिकाल द्रष्टा हो मनुज, तेजस्वी हो व्यवहार॥
दुष्प्रवृत्तियाँ नष्ट हों, पाप होत सब दूर।
रचनात्मक वृत्ति बढ़े, सुख मिलता भरपूर॥

तीन श्रेणी के मनुष्य

निम्न श्रेणी के जन यहाँ, भय से करें न काम।
बीच विघ्न के आत ही, छोड़े अधूरा काम॥
जग में उत्तम व्यक्ति ही, कहते उनको लोग।
बाधा सारी पार कर, कार्य पूर्ति का योग॥

३ अंक ज्योतिष

तीन अंक के अधिष्ठाता, बृहस्पति भगवान।
सरल, सहयोगी, लाभप्रद, संतति राज सम्मान॥
अनुशासन पाले स्वयं, ओरों से करवाय।
छह और नौ सहयोगी है, मूल में तीन कहाय॥

गुरु, शुक्र और मंगल, शुभ हैं तीनों वार।
गृह क्लेश से दूर हों, जीवहिं सुख अपार।।
अंक तीन का प्रतीक है, हल्का नील रंग।
युक्ति संगत बात की, अच्छा न्याय प्रसंग।।

तीन ऋण

१ देव ऋण — यज्ञ से देव प्रसन्न हों, ऋण से मुक्ति होय।
पहला ऋण है जीव पर, शास्त्र बताये सोय।।

२ ऋषि ऋण — करते जो स्वाध्याय है, ज्ञान वृद्धि मिल जाय।
दूजा ऋण ऋषि का कहे, मुक्ति सहज पा जाय।।

३ पितृ ऋण — संतति पाते नर यहाँ, पितृऋण से हो मुक्ति।
तृतीय ऋण उतरे सहज, करना है अभिव्यक्ति।।

तीन ऐषणाएँ

१. पुत्रेषणा — पुत्र इच्छा सब में प्रबल, पिण्डदान नहीं होय।
पुत्रेषणा से दुःखी नर, ईश करे सोइ होय।।

२ वित्तेषणा — पैसा आता काम में, जाने सब संसार।
वित्तेषणा में लिप्त नर, करता नहीं विचार।।

३ लोकेषणा — जग में कीर्ति के लिए, लोक दिखावा जान।
लोकेषणा भरपूर है, न अपनो की पहचान।।

तीन प्रकार की सूर्य-किरणें

ताप निकलता है सदा, तापक नाम कहात।
जो प्रकाश देतीं सदा, कही प्रकाशक जात।।
कीटाणु को नष्ट कर, आरोग्य करें प्रदान।
सूर्य किरण के नाम से, जाने सकल जहान।।

फारसी की तीन बातें

१. इज्जत — इज्जत उसको ही मिले, करते अच्छे काम।
परोपकार की भावना, महके चारो धाम।।

२ दौलत	दौलत आती काम है, बुरे वक्त इंसान।
	रहती स्थिर है नहीं, इसे चंचला जान॥
३ हुकूमत	करे हुकूमत लोग जो, अंहकार बढ़ जान।
	जो उस रव् को मानते, करे उसी का ध्यान॥

तीन चीजों का समय नहीं

समय और मृत्यु सुनो, ग्राहक कब आ जाय.
ध्यान सदा मन में रखो, करे प्रतीक्षा नाय॥

तीन चीजें वापस नहीं आती

तीन चीज नहीं लौटती, पहला तीर कमान।
दूजी बात जुवान से, तीजी देह से प्राण॥

तीन का सदा सम्मान करो

मात, पिता और गुरु का, सदा करो सम्मान।
आयु विद्या यश मिले, बनो सदा बलवान॥

तीन से काम करो

मनसा, वाचा, कर्मणा, हो पवित्र कर काज।
शक्ति प्रभु से पाओगे, सुलभ होंय सब काज॥

3 W अंग्रेजी में तीन नाश के कारण हैं

Wine मदिरा	जो मदिरा सेवन करे, बुद्धि भ्रष्ट हो जात।
	दुराचार है फैलता, जीवन भर दुःख पात॥
Wealth धन	जड़ है सारे दुःख की, करवाती है बैर।
	धन के पीछे युद्ध हों, नाश हो देर सवेर॥
Women स्त्री	झगड़ों की जड़ नारी है, जो अज्ञानी होत।
	हर युग में घटना हुईं, बीज विषय के बोत॥

तीन नुकसान

अपूज्य की पूजा जहाँ, पूज्यों का अपमान।
मृत्यु अकाल और डर वहाँ, होय तीन नुकसान॥

जीवन के तीन सार्थक कार्य

धन को अर्जित न किया, विद्या सीखी नाय।
नहीं तपाया स्वयं को, आयुष विरथा जाय।।

त्रिजटा

त्रिजटा नाम राक्षसी, राम भक्ति में लीन।
सीता की सेवा करी, स्वप्न कथा कह दीन।।

त्रिपुर एवं त्रिपुरारि

स्वर्ण रजत और लोहमय, नगर तीन निर्माण।
तारकाक्ष, कामराक्ष और, विद्युन्माली बलवान।।
पिता तारकासुर हुए, ब्रह्मा दियो वरदान।
त्रिपुर नष्ट जो भी करे, अपने एक ही बाण।।
अहंकार जब बढ़ गया, करे बहुत उत्पात।
देव दुःखी भारी भये, कष्ट सहा न जात।।
शिवजी ने जानी व्यथा, तीर चलाया तान।
नष्ट नगर तीनों किये, मरे तीन बलवान।।
नाम त्रिपुरारि हो गया, सुख हुआ चारो धाम।
शिव की महिमा अमर है, जीव पाये विश्राम।।

त्रिपुंड्र

शैव शाक्त संप्रदाय का, धार्मिक चिह्न महान।
तीन भस्म ही रेख हैं, मस्तक धरे सुजान।।

त्रियुगी नारायण

केदारनाथ के सन्निकट, गौरी कुंड स्थान।
शिव पार्वती व्याहे यहाँ, अखण्ड अग्नि विद्यमान।।
शाकसहस्त्र वर्ष कियो, तपी भगवती मात।
शाकंम्भरी के नाम से, पार्वती ही कहलात।।
नारायण के क्षेत्र से, यह जग में विख्यात।
जो इनकी पूजा करे, ओजस तेजस पात।।

त्रिशूल

तीन नुकीले फल लगे, नाम पड़ा त्रिशूल।
दैहिक, दैविक भौतिक ये, तीन ताप ही मूल।।
शिव जी का सबसे प्रिय, अस्त्र यही कहलाय।
धारण करें त्रिशूल को, तीन ताप मिट जाय।।

३ अवतार वासुदेव के

मध्वाचार्य और भीमसेन, तीजे श्री हनुमान।
तीन हुए अवतार हैं, श्री वासुदेव के जान।।

तीन प्रकार के कीर्तन

१. गुण कीर्तन — प्रभु के गुण को प्रेम से, भक्त करत बखान।
धारण जो करते उन्हें, पाये पद निर्वाण।।

२ लीला कीर्तन — ईश्वर की लीला महा, गायें श्रद्धावान।
भक्त करें यदि अनुगमन, पाये शान्ति महान।।

३ नाम कीर्तन — नाम प्रभु का जो रटे, भाव विह्वल कई बार।
प्रभु प्रसन्न होते सदा, भक्त पाये प्रभु प्यार।।

जीव की ३ अवस्थाएँ

१ जलचर — जल में जो विचरण करें, जल ही प्राण आधार।
जलचर पहली अवस्था, पर्यावरण सुधार।।

२ थलचल — पृथ्वी पर जीवन जियें, स्थूल शरीर को पाय।
मां धरती गोदी बसें, थलचर जीव कहाय।।

३ नभचर — पक्षी सारे पंख से, उड़ते हैं आकाश।
इनकी शक्ति अपार है, नभ में करते वास।।

महाशक्ति के तीन रूप

महाशक्ति के तीन रूप, जाने सकल जहान।
महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती को जान।।

तीन मातृ शक्तियाँ

मातृ भूमि सबको प्रिय, देव तुल्य ही जान।
मातृभाषा उन्नति रहे, मातृ संस्कृति पहचान।।

तीन (स) से प्रतिष्ठा बढ़ती है

१ सम्पत्ति — आध्यात्मिक भौतिक जगत, पैसा आवत काम।
सम्पत्ति जिसके पास है, होय प्रतिष्ठित नाम।।

२ सम्मान — करते अच्छे काम जो, मिलता है सम्मान।
सादा जीवन, सोच बड़ा, मेहनत कश इंशान।।

३ समता — समता का स्तर हो बड़ा, दु:ख न पाये जीव।
एक समान व्यवहार कर, सुख की है ये नीव।।

तीन को जानिए

प्रभु को पहला मानिए, दूजा यह संसार।
तीजा खुद पहचान ले, ये जीवन के सार।।

(वेदत्रयी)

कर्मकाण्ड में आत है, ब्राह्मण ग्रन्थ सुजान।
यजन मंत्र और विधान का, संगम तू पहचान।।
ज्ञान काण्ड उपनिषद् है, बन्धन काटे जान।
सूत्रों में संकेत हैं, उपासना ही मान प्रधान।।
उपासना काण्ड को जानिए, पूजा उपासना जान।
ज्ञान कर्म का समन्वय, उत्तम स्वरूप को मान।।

त्रिदण्ड + त्रिदण्डी

मनसा वाचा कर्मणा, निग्रह करत प्रचंड।
मन वाणी, तन को कसे, उसे कहें त्रिदण्ड।।

त्रिपुटी

ज्ञाता ज्ञेय औरं ज्ञान है, ध्याता ध्येय और ध्यान।
द्रष्टा, दृश्य दर्शन करे, त्रिपुटी का विज्ञान।।

त्रिसंध्या

रात्रि के अवसान पर, ब्रह्म मुहूर्त शुभ योग।
प्रातः संध्या नाम से, जाने सारे लोग॥
दोपहर के समय को, मध्याह्न संध्या जान।
सूर्यास्त गोधूलि समय, सायं संध्या पहचान॥

त्रिसुगंध

दालचीनी और इलायची, तेजपान लेत समान।
त्रिसुगन्ध कहते इसे, मसाला कर निर्माण॥

त्रिराम

दशरथनंदन राम हैं, परशुराम भगवान।
कृष्ण भ्रात बलराम जी, त्रिराम कहत सुजान॥

त्रिशूल (आयुर्वेद)

१ कटिशूल — कमरदर्द रोगी दुःखी,उठा न बैठा जाय।
शयन करे भी न मिटे, कटिशूल कहलाय॥

२ पेटशूल — उदर दर्द न सहन हो, व्याकुलता बढ़ जाय।
मछली सम तन तड़फता, पेटशूल दुःख पाय॥

३ मस्तक शूल — मस्तक फटता दर्द से, रोगी हो बेचैन।
चन्दन लेपन से मनुज, मिलता है कुछ चैन॥

तीन चीजें आवश्यक

१. रोटी — रोगी को ज्यों औषधि, करती स्वास्थ्य प्रदान।
भूखे को रोटी मिले, तन में आती जान॥

२. कपड़ा — गर्मी सर्दी धूप में, वस्त्र बचावे अंग।
रुचिकर कपड़े पहनिए, ढँके रहें सब अंग॥

३. मकान — गृह आवश्यक है, सुजन, रहे सुरक्षित लोग।
मानव, पशु मिल के रहें, ये प्राकृतिक योग॥

३ अवस्थाएँ

१. बालकपन	अंग सभी कोमल रहें, वाणी मीठी होय। रोग रहित मुख दीखता, मन भी निर्मल होय।।
२. जवानी	अंगों की वृद्धि होय, जवानी का हो जोश। ओजस तेजस से भरा, दाढ़ी मूँछ और रोश।।
३. वृद्धावस्था	सारे अंग ढीले पड़े, सौंदर्य मिट जात। दृष्टि क्षीण, दंत हीन हो, केश सभी पक जात।।



चतुर्थ अंक

चार मुख ब्रह्मा जी के

चतुरानन ब्रह्मा कहे, चार दिशा का ज्ञान।
सृष्टि के निर्माण में, लगे बुद्धि विज्ञान।।

उपासना सफलता के ४ सूत्र

१. विश्वास — लक्ष्य प्राप्ति हित रत रहो, करना ना संदेह।
मन में दृढ़ विश्वास हो, उपवन हो या गेह।।

२. व्याकुलता — व्याकुलता मन में रहे, लक्ष्य पूर्ण हो जात।
पल भर चैन न पा सके, सिद्धि ओर पहुँचात।।

३. संकल्प-त्याग — कल्प विकल्प न ऊपजे, चित्त मुक्ति पा जात।
ब्रह्म रूप साधक लखे, लक्ष्य स्वयं मिल जात।।

४. समता — चित्त में समता आये जब, फल की इच्छा नाय।
संतोषी साधक सदा, सिद्धि प्रभु से पाय।।

उपासना में सहायक चार बातें

१. सात्त्विक आहार

न्याय से करे उपार्जन, सात्त्विक भोजन खाय।
ईश्वर में श्रद्धा बढ़े, आत्मिक शक्ति आय।।

२. सत्य भाषण

सदा सत्य ही बोलना, हितकारक कहलाय।
प्रेमभरी वाणी सदा, सुख सबको पहुँचाय।।

३. संयम

साधक, संयमशील हो, इन्द्रिय निग्रही जान।
शक्ति का संग्रह करें, पाये पद सम्मान।।

४. सत्संग

अच्छों की संगत करो, निश्छल कर लो प्यार।
मन पवित्र होता तभी, सुसंगत उपहार।।

चार पुरुषार्थ

१. धर्म

इह लोक ऊँचा उठे, आगे का कल्याण।
धर्म यही कहलावता, जाने चतुर सुजान॥
धर्म हनन को मारता, धर्म धारिए जान।
रक्षक की रक्षा करे, साथी हरक्षण मान॥

२ अर्थ

अर्थ बिना भौतिक जगत, सूना पड़े दिखाय।
पर ये सब कुछ है नहीं, धर्म ही मूल बताय॥
अर्थ काम की लालसा, दिन दिन बढ़ती जाय.
धर्म विरोधी न रहें, अर्थ अमर हो जाय॥

३ काम

काम धर्म हित में करो, काम ही ईश कहात।
काम वासना पशुवत, घृणा द्वेष, फैलात॥
इन्द्रियों की तृप्ति कहाँ, विषय भोग से होय।
कामदेव को क्षार कर, धर्मयोग मत खोय॥

४. मोक्ष

ईश्वर भक्ति में लगा, परमानन्द पा जाय।
ऐसी हो वस साधना, जीव लक्ष्य मिल जाय॥
धर्म अर्थ और काम को, साधे जो विद्वान।
देव कोटि तक पहुँच के, मोक्ष पाये इंसान॥

४ व्यर्थ वस्तुएँ

दूषित भोजन पाइके, दिवस कष्टमय जाय।
दुष्ट पत्नि के साथ में, रात्रि व्यर्थ कट जाय॥
दुर्जन बेटा हो यदि, खानदान मिट जाय।
न भोगे न दान दे, धन चौपट हो जाय॥

चार आश्रम

१. ब्रह्मचर्य
ब्रह्म में विचरण जो करें, शक्ति प्रभु की पात।
रक्षा करते वीर्य की, ब्रह्मचर्य आश्रम कहात।।
विद्या अध्ययन रत रहें, विषय वासना दूर।
हो चरित्र चिन्तन निरत, सद्व्यवहार भरपूर।।

२. गृहस्थ
द्वितीय आश्रम गृहस्थ है, धन्य सभी में मान।
प्रीति रीति और नीति का, धरता है जो ध्यान।।
इसे तपोवन मान जो, सहनशील बन जात।
संयम से साधे कुटम्ब, सद्गृहस्थ कहलात।।

३. वानप्रस्थ
पचास वर्ष पूरण होंय, जब गृहस्थ के बीच।
वानप्रस्थी आश्रम जियो, कमल रहे जल बीच।।
तन मन से सेवा करे, सामाजिक हो उत्थान।
तप, ज्ञान, अर्जित करो, जन जन को कल्यान।।

४. संन्यास
गृह का करके त्याग जो, हो विरक्त संन्यास।
शेष आयु पूरी लगे, सत का करले न्यास।।
जीवन की अनुभूतियाँ, आयें सबके काम।
शत आयु पायें स्वयं, ब्रह्मलोक तब धाम।।

४. वेद

ऋग्वेद प्रथम वेद है, सब में बड़ा तू जान।
तिनके से ईश्वर तलक, भरा ज्ञान और विज्ञान।।
श्रेष्ठ कर्म यज्ञीय क्रिया, का है इसमें स्थान।
धर्म, अर्थ, राजनीति का, जन्म मरण का ज्ञान।।
वेदों में सामवेद है, उपासना काण्ड प्रधान।
गायन मंत्रों से करें , जीवन का उत्थान।।
ज्ञान कर्म उपासना की, त्रिवेणी संगम जान।
मूढ़ प्रकृति रहस्य को, संग्राम जीवन मान।।

चार जातियाँ

१. ब्राह्मण	ब्राह्मण कुल में जन्म ले, ब्रह्म कर्म सब जान। षड् कर्मों में विज्ञ हो, पढ़े पढ़ाये सुजान॥ यजन करें करवाये जो, दान लेत और देत। परब्रह्म की प्राप्ति, मूल रूप से लेत॥
२. क्षत्रिय	क्षात्र धर्म को पालते, क्षत्रिय वे कहलात। रक्षा करते राष्ट्र की, छतरी बचाए गात॥ यज्ञ दान पालन करें, शौर्य शक्ति आगार। दण्डित दुर्जन को करें, सज्जन का सत्कार॥
३. वैश्य	वैश्य कर्म कर पालता, करता है व्यापार। शुद्ध वस्तु देता सदा, पाता जन जन प्यार॥ पेट में पचता अन्न है, पोषण हों सब अंग। वैश्य धर्म पाले सही, लोभ मोह हो भंग॥
४. शूद्र	बड़ा महत्त्व है, शूद्र का, चरण विराट तू जान। है आधार शरीर का, इसे विशिष्ट ही मान॥ श्रम की पूजा विश्व में, करते सब इंसान। पत्थर हैं ये नींव के, होय न भवन निर्माण॥

जीवन के चार सूत्र

साधना	तन मन को जो साधता, पाता सिद्धि सुजान। वीरों का है काम ये, समर साधना मान॥
स्वाध्याय	अपना अध्ययन नित करो, पठन, मनन पहचान। स्वाध्याय यही कहलावता, होवे हर क्षण भान॥
संयम	संयम जीवन में पले, पग पग उन्नति होय। बिन इसके जीवन वृथा, दुःख नित नूतन होय॥
सेवा	सेवा करना है कठिन, साधना ही है अंग। नम्रभाव, निश्छल हृदय, होवे ज्यों बजरंग॥

चतुर्भुजाकार प्लाट

नब्बे अंश के कोण पर, लम्बा चौड़ा, समान।
वर्गाकार कहलावता, कष्ट मिटे, सुख जान॥

चार आनन्द

आनन्द है सबमें प्रधान, परमानन्द कर मान।
ब्रह्म मिले ब्रह्मानन्द है, सहजानन्द तू जान॥

चार दिशाएँ

१. पूर्व

सूर्य उदित होवे जभी, सन्मुख मुख कर ठाढ़।
पूर्व दिशा का बोध ही, इससे होय प्रगाढ़॥

२. पश्चिम

पीठ तरफ की दिशा को, कहते हैं सब लोग।
पश्चिम जानो सुजन तुम, ये प्राकृतिक योग॥

३. उत्तर

बांया हाथ संकेत है, दिशा तीसरी जान.
अचल हिमालय दीखता, उत्तर दिशा का भान॥

४. दक्षिण

दांया हाथ कहता यही, लंका दक्षिण जान।
चौथी दिशा मानो इसे, तृप्त पितर तू जान॥

४ युग

१ सतयुग

सत्तरह लाख अठ्ठाईस हजार, सतयुग करे निवास।
श्रेष्ठ प्रवृत्तियाँ फैलती, घटघट सत का वास॥

२. त्रेता

श्रीराम जी अवतरित हुए, मर्यादाओं का धर ध्यान।
बारह लाख छियानवे हजार, सौरवर्ष त्रेता पाया मान॥

३ द्वापर

श्रीकृष्णचन्द्र योगी रहे, द्वापर युग तू जान।
आठ लाख चौसठ हजार, सौ वर्ष मिले प्रमाण।।

४. कलियुग

चार लाख बत्तीस हजार को, कलियुग गणना मान।
कल प्रधान, कर काम कर, भज ले प्रभु का गान।।

४. उपवेद

१. आयुर्वेद

ऋग्वेद का उपवेद है, आयुर्वेद कहलाय।
रोगों की पहचान का, कारण उत्पत्ति पाय।।
शरीर रचना का ज्ञान है, औषधि चिकित्सा जान।
आयु वृद्धि की विधा है, भरा ज्ञान विज्ञान।।

२. धनुर्वेद

यजुर्वेद की शाखा ही, धनुर्वेद को जान।
अस्त्र शस्त्र निर्माण विधि, व्यूह रचना का ज्ञान।।
धनुष मुख्य था उन दिनों, दिव्य बाण संधान।
युद्ध सम्बन्धी विद्या का, विस्तृत अनुसंधान।।

३. गान्धर्ववेद

सामवेद से लिया है, गान्धर्व वेद पहचान।
उदात्त, अनुदात्त भेद की, विद्या बड़ी महान।।
सप्त स्वरों की सरगम से, होता स्वर का ज्ञान।
गायन और बादन कला, ये हैं सुख की खान।।

४. तंत्रवेद

अथर्ववेद से निकलती, तंत्र वेद की तान।
पूजन की नाना विधि, मंत्र उपासना विधान।।
मारम, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण तू जान।
विशद ज्ञान भण्डार है, स्तम्भन अनुदान।।

दुर्लभ चार वस्तुएँ

दान हो मीठे वचन से, ज्ञान रहित अंधकार।
शौर्य क्षमा से युक्त हो, धन हो दान आधार।।

४ परिभाषाएँ और उसके उत्तर

दया प्राणियों पर करो, सही धर्म कहलाय।
नीरोगी काया रहे, वो ही सुखमन भाय।।
शुभ चिन्तन का नाम ही, शुद्ध प्रेम कहलाय।
अच्छे बुरे को जानिए, विवेक मन को भाय।।

चार विकास के सूत्र

१. इन्द्रिय संयम — इन्द्रियों का संयम करो, शक्ति पाये इंसान।
इनमें शक्ति असीम है, नर बनता भगवान।।

२. समय संयम — समय बड़ा ही कीमती, साधे चतुर सुजान।
समय साधना से हुए, वेदव्यास महान।।

३. अर्थ संयम — अर्थ कमाओ नीति से, खर्च सोचकर तात।
व्यसनों में कौड़ी नहीं, ये आवश्यक बात।।

४. विचार संयम — श्रेष्ठ विचारों से सदा, होवे अच्छे काम।
सफल सुदृढ़ जीवन बने, सुख हो आठोयाम।।

चार विभूतियों का सुनियोजन

१. समझदारी — दूर दृष्टि जिसमें रहे, करे ठीक से काम।
समझदारी का सूत्र है, सदा मिले आराम।।

२ जिम्मेदारी — कर्त्तव्यों की पालना, करते जो धीमान।
जिम्मेदार कहावते, होती है पहचान।।

३ बहादुरी — अवांछनीय ग्राही नहीं, करते जो संघर्ष।
दबाव में आते नहीं, कष्टों में भी हर्ष।।

४ ईमानदारी — रखते जो ईमान को, करता ईश सहाय।
सौ मनकों में चमकता, हीरा वही कहाय।।

४ से बड़ी ४ चीजें

क्षमा बराबर तप नहीं, संतोष सुख कहाय।
तृष्णा सम कोई रोग नहीं, दया बड़ा धर्म नाय।।

चार समिधाओं का हवन

चारों आश्रम पूर्ण हों, मानव देह महान।
पहली समिधा भेंट है, स्वीकारो भगवान।।
धर्म अर्थ काम मोक्ष का, लाभ पाये इंसान।
दूजी समिधा होमते, यज्ञदेव भगवान।।
अबलम्बन है चार का, साधना, स्वाध्याय मान।
संयम सेवा साथ हो, देय स्वयं भगवान।।
शरीर मनोबल पाइए, आत्मब्रह्मबल जान।
चौथी समिधा कह रही, पुरुषार्थ करे इंसान।।

यज्ञभस्म लेपन के ४ स्थान

जमदग्नि ऋषि सुमिर कर, सुदुर्लभ नर पाय।
मस्तक भस्म धारण करूँ, शान्तिसुख मिल जाय।।
कण्ठ भस्म लेपन करूँ, कश्यप ऋषि धर ध्यान।
ग्रीवा को शक्ति मिले, करें सार्थक बयान।।
यज्ञ भस्म धारण करूँ, दाये हाथ के मूल।
कर्म सभी में कर सकूँ, इन्द्रदेव अनुकूल।।
हरक्षण अच्छे कार्य मैं, करूँ हृदय में धार।
यज्ञ भस्म धारण करूँ, हृदय बने आधार।।

संगीत में चार वर्ण

गायन वादन क्रिया में, करते जो अभ्यास।
कंठ, वाद्य, स्वर, एकता, सबको आती रास।।

१. स्थायी वर्ण

बार बार अभ्यास कर, बोले स्वर यदि एक।
स्थायी क्रिया कहें, स स स, रे रे रे, टे क।।

२. आरोही वर्ण

स से श्री गणेश कर, ध्वनि, क्रम ऊँचा जान।
आरोहण स्वर का करें, जाने चतुर सुजान॥

३ अवरोह वर्ण

सप्तस्वरों पर पहुँच के, लौटे क्रमशः आय।
उल्टी गिनती स्वरों की, अवरोही वर्ण कहाय॥

४ संचारी वर्ण

तीनों का मिश्रण होय, उलट पुलट स्वर होय।
गायन वादन की क्रिया, अधिक नियंत्रित होय॥

४ मार्ग से जीवाणुओं का प्रवेश

१. उच्छ्वास — जीवाणु वायु संग मिल, देह भीतर जब जात।
काली खाँसी, क्षयरोगादि, करें बड़ा उत्पात॥

२. जल भोजन — दूषित जल और अन्न से, रोग संक्रमित होत।
हैजा, आन्त्रज्वर, कामला, स्वस्थ भी रोगी होत॥

३. कीड़ों द्वारा — रोग युक्त कीड़े यदि, काटें स्वस्थ इंसान।
प्लेग, मलेरिया, ज्वारादिये, कीट संक्रमण जान॥

४. संसर्ग — शरीर, वस्त्र संसर्ग से, रोग फैलाते जाल।
दाद खाज खुजली अरु, चले आपनी चाल॥

चार प्रधान शत्रु

१. काम — काम भाव उत्पन्न हो, मन कलुषित हो जाय।
भक्ति काम से दूर है, काम शत्रु बन जाय॥

२. क्रोध — क्रोध मोह पैदा करे, साधक अंधा होय।
ज्ञान दूर भग जात है, क्रोध पार न होय॥

३. लोभ — राग द्वेष दोऊ जन्मते, लोभ ही कारण जान।
जीते जी ये नरक हैं, गड़बड़ हो सब ज्ञान॥

४. मोह — मोह ग्रसित नर होत जब, शुभ न अशुभ लखात।
संकुचित बुद्धि होत है, सीमा में बंध जात॥

धर्म के चार रूप

१. नित्यकर्म दैनिक जीवन हो सुलभ, करलो ये उपचार।
संध्या वंदन नित करो, पाओ शक्ति अपार।।

२. नैमित्तिक कर्म ग्रहण और संक्रांति पर, धार्मिक कर्म जो होय।
नाम नैमित्तिक जानिए, दान पुण्य सब होय।।

३ काम्य कर्म सुख समृद्धि कैसे मिले, जग में चतुर सुजान।
स्वर्ग प्राप्ति हित जो करे, काम्यँ कर्म तू जान।।

४. प्रायश्चित कर्म जाने और अनजाने में, गल्ती सबसे होय।
दोष मिटे जिस विधा से, प्रायश्चित कर्म होय।।

४ वस्तुएँ कभी नष्ट नहीं होती

बैठन को आसन मिले, शयन भूमि आसान।
पीने को पानी मिले, वाणी मीठी जान।।

शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित चार मठ

१. शृंगेरी मठ तुंगभद्र दक्षिण दिशा, शृंगेरी पीठ है नाम।
रामेश्वरम् का क्षेत्र है, वाराह देव अभिराम।।

२. गोवर्द्धन मठ महोदधि तीर्थ कहावता, पूर्व जगन्नाथ स्थान।
पुरुषोत्तम क्षेत्र नाम है, गोवर्द्धन पीठ महान।।

३. शारदा मठ गोमती तीर्थ पश्चिम में, शारदा पीठ निर्माण।
सिद्धेश्वर है देवता, क्षेत्र द्वारिका प्रधान।।

४. ज्योतिर्पीठ उत्तर अलकनन्दा तीर्थ है, ज्योतिर्पीठ नारायण वास।
अथर्व वेद जहां मान्य है, बद्रिका क्षेत्र का धाम।।

४. प्रकार का दान (जैन धर्म)

१. आहार दान भूखे को आहार से, करता तृप्त सुजान।
प्रथम दान कहते इसे, सारे ही विद्वान।।

२. ज्ञान दान ज्ञान दान सबमें बड़ा, दूर करे अज्ञान।
वितरण इसका नित करो, पाओगे अनुदान।।

३. औषधिदान रोगी को जो दवा दे, स्वस्थ होय इंसान।
औषधि दान महान है, रखना इसका ध्यान॥

४. अभय दान पशु पक्षी की जिन्दगी, बचाये जो इंसान।
सबसे अच्छा पुरुष है, इसे कहें अभय दान॥

आत्मज्ञान के ४ प्रकार

इच्छाशक्ति हो प्रबल, प्रज्ञा जागृत होय।
हो अटूट श्रद्धा यदि, नीति ज्ञान, सुखहोय॥

चार मुखी रुद्राक्ष

चार वर्ष, आश्रम चतुर, धर्म अर्थ काम मोक्ष धार।
वेद चतुर्मुखी ज्ञान है, ब्रह्मा जग आधार॥

चार चीजों की तुलना

क्रोध यम के तुल्य है, तृष्णा वैतरणी जान।
विद्या ही कामधेनु है, संतोष नन्दन वन मान॥

४ से ४ का नाश

अकाल नष्ट खेती करे, पाप जपे से जाय।
मौन रखे झगड़ा मिटे, सावधान डर नाय॥

४ बातें नहीं होती

गृह मोही, विद्या विमुख, मांस खाय, दया नाहिं।
धन लोभी, सच न कहे, कामी पतिव्रता नाहिं॥

मनुष्य देह के ४ द्वार ४ दिक्पाल

पूर्वद्वार मुख को कहें, गुदा है पश्चिम द्वार।
मस्तकान्त उत्तर दिशा, शिश्न है दक्षिण द्वार॥

४. दिशाओं के ४ दिक्पाल

पूर्व सुधर्मा रक्षा करे, पश्चिम में शंखपाद।
केतुमान उत्तर बसें, हिरण्यरोमा दक्षिण आत॥

४ प्रकार की दीक्षा (योग में)

स्पर्श दीक्षा है, प्रथम, शब्द दीक्षा द्वितीय कहाय।
चाक्षुसी दीक्षा दृष्टि से, संकल्प ध्यान कहलाय।।

विवेकचिन्तामणि में ४ दीक्षाएँ

देह दीक्षा पहली कही, मंत्र दीक्षा पहचान।
आज्ञा दीक्षा मान ले, उपमा मन से मान।।

४ प्रकार का प्रेम

लालन प्रेम, वात्सल्य है, सख्य प्रेम उपचार।
चार प्रकार के प्रेम है,माधुर्य प्रेम आधार।।

४ वेद ४ उपाधियाँ

ऋग्वेद से होता बने, यजु से अध्वर्य जान।
साम से उदगाता हुआ, अथर्व से ब्रह्मा मान।।

प्रणाम से ४ लाभ

करते अभिवादन सदा, वृद्धो का सम्मान।
आयु बल विद्या बढ़े, यश को पात सुजान।।

४ बातों की पहचान करें

आचरण व्यक्ति का कहता है किस कुल में जन्मा होगा।
शरीर देखकर लगता है, खाना कैसा खाया होगा।।
बोलीचाली कह देती है, विद्वता का ज्ञान।
आँखे बतलाती हैं निश्चय, स्नेह है कितना जान।।

४ लाभ आचार के

आचार सम्पत्ति देत है, यश वृद्धि हो जाय।
आयुष बढ़ती है सदा, त्रुटि नष्ट हो जाय।।

४ चीजों को समूल नष्ट करें

ऋण, अग्नि शत्रु और व्याधि के अवशेष।
नष्ट करे सोइ प्रज्ञ है, पाये सुख हमेश।।

४ शत्रु

ऋण लेता शत्रु पिता, व्यभिचारिणी हो मात।
सुन्दर पत्नी नाश करे, मूर्ख पुत्र रिपु तात॥

जल के गुण चार

शब्द, स्पर्श, रूप, अरु, रस का होता ज्ञान।
जल में ये गुण चार हैं, जल बिन सूना जान॥

भारतीय संस्कृति के ४ अंग

१. ईश्वरीय सत्ता

आस्तिकता ईश्वर प्रति, भारतीय की पहचान।
सारे जग में व्याप्त है, ईश्वर एक समान॥
वेदशास्त्र गुण गावते, ऋषि मुनि करे बखान।
जड़ चेतन में रम रहा, वह विराट भगवान॥

२. ईश्वरीय न्याय

विधि का बना विधान है, पूरा निश्चित जान।
जो करता विश्वास है, राह होत आसान॥
न्याय सभी का वो करे, न्यायधीश कहलाय।
ऊँच नीच, छोटा, बड़ा, समदर्शी बन जाय॥

३. कर्मानुसार दण्ड

कर्म करे शुभ या अशुभ, इसका न प्रतिबंध।
दण्ड व्यवस्था रच दई, जिससे हो अनुबंध॥
श्रेष्ठ कर्म जो यज्ञ सम, देते सुख अपार।
गलत कर्म के गलत फल, दु:खों के आगार॥

४ गुणकर्म स्वभावानुसार समाज व्यवस्था

गुण का संचय जो करे, प्रतिभा विकसित होय।
कर्म बनाते राह को, भावी उज्ज्वल होय॥
गुणकर्मों का समन्वय, श्रेष्ठ स्वभाव बन जात।
तीनों के इस योग से, समाज सभ्य हो जात॥

वाणी के चार प्रकार

क्रिया, शक्ति, अभिव्यक्ति, और स्फुरणा को जान।
तालु आदि उच्चारण ही, बैखरी वाक् अभिधान।।

वाग्वृत्ति हो मध्यमा ज्ञान शक्ति की उद्गार।
बैखरी वाक् से सूक्ष्म है, मध्यमा वाक् का सार।।

मध्यमा से है सूक्ष्म अति, बाह्य प्रसरण तू जान।
परावाक् अवलोकन करे, पश्यन्ती पहचान।।

सभी वाणियाँ एकरस, होती इसमें आय।
परमेश्वर की वाणी है, सूक्ष्मा परा कहाय।।

४ धाम

पूर्व में जगन्नाथ है, पश्चिम में द्वारकेश।
उत्तर में केदारनाथ, दक्षिण रामेश्वरवेश।।
गंगोत्री जमनोत्री है, बदरी और केदार।
चार धाम की यात्रा, परमधाम आधार।।

स्त्रियों की ४ अवस्थाएँ

बारह वर्ष बाला कहें, युवती चौबीस की होय।
मुग्धा बत्तीस तक रहे, चालीस प्रगल्भा होय।।

४ अंक ज्योतिष

चार अंक का अधिपति, हर्शल ग्रह तू जान।
काम करे अचरज भरे, जीवन में उत्थान।।
रवि, सोम, शनि शुभ है, स्थिर विदेश हो जाय।
सौम्य भाव, गृहस्थ सुख, नया मार्ग दर्शाय।।
मूल अंक तारीख हो, माह एक सा होय।
सहनशीलता मूल गुण, कोऊ न शत्रु होय।।
गहरा रंग लाल जो, गर्म जो खिन्नमय होय।
धार्मिक कार्य में शुभ कहे, खतरे का चिह्न होय।।

४ प्रकार का जप

१ मानस	मन ही मन में मनन कर, मंद गति स्वर उच्चार। जीभ होठ गति न रहे, मानस जप आधार।।
२ उपांशु	जिह्वा ओष्ठ हिलते दिखें, कछुक सुनन में आत। कहते हैं विद्वान यह, मंत्र उपांशु जपात।।
३. वाचिक	मंत्रों के जो वर्ण हैं, जपते सही सुनात।। तीजा जप जाने सभी, वाचिक जाप कहात।।
४. जिह्वा	चौथे जप जिह्वा हिले, होठ रहत हैं बंद। जिह्वा जप कहलावता, जपने का अनुबंध।।

४ दुर्गुण

आलस जीवन में रहे, नींद अधिक जो सोत।
विस्मृति की आदत रहे, दीर्घ सूत्री जन होत।।

४ प्रमाण

मुख्य कारण है ज्ञान का, वही प्रमाण कहलाय।
प्रत्यक्ष अनुमान उपमान है, चौथा शब्द कहाय।।

४ प्रकार के प्राणी

अण्डज, जारज, स्वेदज और, उद्भिज जीव जान।
चार प्रकार पैदा किये, प्राणी जग दरम्यान।।

१ उद्भिज	भूमि फाड़ पैदा हुए, वनस्पति सब जान। उद्भिज नाम से जानते, सारे चतुर सुजान।।
२. स्वेदज	पसीने से जो जन्मते, कृमि कीट पहचान। स्वेदज जीव कहावते, अल्पायु के मान।।
३. अण्डज	अंडे से उत्पत्ति हो, पक्षी जग दरम्यान। अण्डज नाम से जानते, मुर्गी कपोतादि मान।।
४. जरायुज	गर्भाशय से जन्म ले, क्रमशः वृद्धि होत। झिल्ली के भीतर पलें, जरायुज ही है स्रोत।।

भारतीय संस्कृति के ४ आधार

नश्वर तन है जानिए, अमर आत्मा जान।
कर्मफल निश्चित है बना, सत्य पुनर्जन्म मान।।

४ पहलू

शारीरिक और मानसिक आध्यात्मिक नैतिक जान।
चार पहलू संस्कृति के कहते सब विद्वान।।



पंचम अंक

गायत्री के पाँच मुख

१. ॐ

ॐ ब्रह्म का नाम है, जाने सब संसार।
जग उत्पत्ति का यही, है यह मूलाधार।।

२. भूर्भुवः स्वः

तीन लोक कहते इसे, ईश्वर करे निवास।
जगह कोई ऐसी नहीं, कण कण में है वास।।

३. तत्सवितुर्वरेण्यम्

उस ईश्वर का वरण हम, ज्योति रूप कर पाय।
हृदय गुहा अंधकार है, कर प्रकाश फैलाय।।

४. भर्गो देवस्य धीमहि

मिल जाये प्रकाश तो, पाप नष्ट हो जाय।
धारण हम उसको करे, देव स्वरूप बन जाय।।

५. धियो यो नः प्रचोदयात्

हे प्रभो हमारी बुद्धि को, सही मार्ग ले चाल।
यही प्रार्थना कर रहे, जीवन होय निहाल।।

५ प्रकार से आसनों का नामकरण

१. रहन-सहन, उठ-बैठना, सब प्राणियों का भिन्न।
इसी बात का ध्यान कर, आसन बने अभिन्न।।
शलभ, मयूर भुजंग और कुक्कुट बक हंस काग।
मकर सिंह वृश्चिक सुनो, मत्स्य कूर्म अनुराग।।

२. विशेषाकृति की वस्तुएँ, मिलती जुलती होय।
धनु, चक्र और वज्र हल, नौका शिलासन होय।।

३. वनस्पतियों के नाम से, कई आसन विद्यमान।
पद्मासन, लतासन और, ताड़ासन वृक्षासन मान।।

४. शीर्ष, गर्भ अंग-पुष्टि कर, रोग करे अवसान।
सर्वाङ्गासन, एकपाद ग्रीवा हस्तपादासन जान।।
५. महायोगी और तपस्वी, विशेष नाम पहचान।
मत्स्येन्द्र, अर्द्ध मत्स्येन्द्र, महावीर ध्रुवासन जान।।

५ हिंसा के स्थान

१ चूल्हा	चूल्हे पर भोजन बने, अग्नि ऊर्जा होय। कीट पंतगें जलत हैं, हिंसा सहज होय।।
२. चक्की	जहाँ अनाज को पीसते, जीव चपेट में आय। हिंसा का कारंण बने, चक्की नाम कहाय।।
३. बुहारी	घर बाहर की स्वच्छता, झाड़ू से ही होय। जीव अनेक मरते रहत, तीजी हिंसा होय।।
४. ओखली	धान आदि जहाँ कूटते, ओखल जानी जाय। घर गृहस्थ में यह क्रिया, हिंसक ही कहलाय।।
५. जल के घड़े का स्थान	जल का घड़ा रखते जहाँ, नाम परिन्डा जान। मृत्यु पायें जीव लघु, हिंसक हो स्थान।।

५ प्रकार श्राद्ध

१. नित्य	नित्य उपासना जो करत, इष्टदेव का ध्यान। श्रद्धा से अभिव्यक्त कर, नित्य श्राद्ध मन जान।।
२. नैमित्तिक	ऐकोद्दिष्ट प्रभृति हित, मन संकल्पित मान। नैमित्तिक श्राद्ध नाम है, जीव करें कल्याण।।
३. काम्य	निज इच्छा की पूर्ति हित, श्रद्धा अर्पित होत। काम्य श्राद्ध इसको कहें, वांछित ही फल होत।।
४. वृद्धि	पुत्र जन्म या विवाह में, वृद्धि काल कहलात। श्राद्ध पुण्य फल देत हैं, वृद्धि श्राद्ध विख्यात।।
५. पार्वण	श्राद्ध पक्ष निश्चित तिथि, पितर अमावश जान। पर्वों के शुभ क्षणों में, पार्वण श्राद्ध प्रधान।।

ॐ नमः शिवाय (पंचाक्षरी मंत्र)

ॐ नाम सबसे बड़ा, इससे बड़ा न कोय।
न-मन करे संसार सब, सुखी जीव सब होय॥
मो-ह माया के फंद से, काटे सारे पाश।
शि-व को जो सुमिरन करे, दूजी छाड़े आश॥
वा-तावरण पुनीत हो, पावे आतमज्ञान।
यह महिमा जग में सदा, गाये चतुर सुजान॥

ॐ भूर्भुवः स्वः (गायत्री पंचाक्षरी)

ॐ ब्रह्म का नाम है, व्यापक सकल जहान।
शब्द ब्रह्म कहते इसे, गाये प्रभु गुणगान॥
तीन लोक में व्याप्त, भूर् भुवः स्वः जान।
प्राण शक्ति देता हमें, है इसकी पहचान॥
कष्ट दूर जग के करे, न कोई दूजा गान।
सुखदाता ये मंत्र है, नित प्रति जपो सुजान॥

पंचायत

ग्रामीण स्तर पर पाँच जन, मिल कर करते न्याय।
पंच कहें सो मानना, मूर्त स्वरूप स्वराज्य॥

५ माताएँ

गुरुपत्नी, रानी, भाभी, पत्नीमात, निजमात।
ये माता कहलावती, शास्त्रों में विख्यात॥

५ पिता

जन्मदाता, उपनयन गुरु, विद्या देते तात।
अन्नदाता, निर्भय करे, पाँच पिता कहलात॥

५ तत्त्व

शब्द, स्पर्श, रूप मय, सरस गंध का भान।
तत्त्वों से परिपूर्ण है, पृथ्वी गुणों की खान॥

५ ज्ञानेन्द्रियाँ

जिनसे होता ज्ञान नित, ज्ञानेन्द्रियाँ नर जान।
कर्ण, नासिका जीभ और नेत्र, त्वचा को मान॥

५ कर्मेन्द्रियाँ

वाणी, हाथ और पैर ये, लिंग गुदा कहलाय।
कर्म स्वभाविक होत हैं, कर्मेन्द्रिय कहाय॥

५ प्राण

१. प्राणवायु
हृदय फैफड़े कण्ठ सिर, जिह्वा नाक मुख द्वार।
प्राण वायु रहती यहाँ, जीवन की दातार॥

२. अपान वायु
पक्वाशय मुख्य स्थान है, अपान वायु का जान।
मूत्र, गुदा और शिशिन, अंडकोश नाभि मान॥
सभी वेग निकले समय, रक्षा करे अपान।
अगर असुंतलन हो कभी, दुःख पाये इंसान॥

३. समान वायु
जठाराग्नि सम रहत है, भोजन जब पच जात।
रस दोष मल मूत्रादि, उचित अंग पहुँचात॥
प्रकुपित होवे वायु जब, अपच दर्द अतिसार।
आमाशय, पक्वाशय, स्वेद, जल दोष करे विहार॥

४. व्यान वायु
मुख्य कर्म है व्यान का, दिल सिकुड़े विस्तार।
रक्त प्रवाहित होत है, व्यान क्रिया आधार॥
सब शरीर की क्रियाएँ, सिकुड़न अंग प्रसार।
आँख मीचना, वक्रगति, व्यान के अनेक प्रकार॥

५. उदान वायु
नाभि उदर, फुफ्फुस अरु, कंठ, हृदय स्थान।
ऊपर सांस जब खींचते, उदान कहत सुजान॥

शक्ति पंचक

१. आत्मिक शक्ति प्रकाश रूप, चित्त शक्ति कहलाय।
शिव जी स्वयं प्रकाशमय, ज्योतिर्मय मन भाय॥

२. आनन्दमय जीवन बने, आनन्द शक्ति होय।
आनन्द का साक्षात् हो, शिव आनन्दमय होय॥
३. इच्छा शक्ति से सभी, जगत के कारज होत।
जगत सृष्टि संहार में, शिव ही करें सो होत॥
४. ज्ञान शक्ति बिन शून्य है, ज्ञान ही सबसे महान।
ज्ञानस्वरूप शिव जी स्वयं कर तू उनका ध्यान॥
५. जड़ चेतन में क्रिया होय, क्रिया शक्ति है नाम।
इस शक्ति को धार कर शिवजी जपते नाम॥

५ व्यक्ति मरे के समान

दरिद्री, रोगी, मूर्ख और विदेश में करता वास।
आजीवन सेवा करें, जिये मरे की आस॥

ज्योतिष के पाँच अंग

तिथियाँ सोलह होत हैं, सात वार पहचान।
नक्षत्र अठ्ठाईस जानिएं, योग सत्ताईस मान॥
सात करण चर में रहें, चार को स्थिर जान।
पाँच अंग पंचाङ्ग के, जाने चतुर सुजान॥

५ रत्न

सोना रत्न कहावता, चाँदी शीतगुण होय।
तांबे में गुण बहुत हैं, मूँगा मोती दोय॥

पंच गव्य

१. दूध — गाय, दूध अमृत सदृश, पौष्टिक तत्त्व भरपूर।
स्वर्ण तत्त्व पीली झलक, हृदय रोग करे दूर॥
२. दही — दूध जमे स्थिर रहे, चंचलता होवे दूर।
गर्भवती की रक्षा करे, पाचन हो भरभूर॥
३. गोघृत — गोघृत औषधि प्राण है, नश्य रोग उपचार।
दिल दिमाग बलवान हो, देह पुष्टि आधार॥
४. गोमूत्र — सर्वोत्तम है औषधि, प्रतिरोधक गुण पाय।
विष प्रभाव सब दूर हों, संजीवनी कहलाय॥

५. गोबर	पर्यावरण को ठीक कर, विकीरण दूर भगाय। त्वचा रोग कीटक मरें, गैस काम में आय।।

पंचामृत

१. दूध	दुग्ध धवल निर्मल करे, अमृत तुल्य ही जान। बलवर्द्धक आहार है, सर्वगुणों की खान।।
२. दही	शीतल गाड़ा रूप है, उदर रोग मिट जात। गुणी बने गम्भीर हो, नित्य जो दधि खाय।।
३. घृत	गोघृत स्नेह युक्त है, गंध भी मन को भाय। प्रेम भाव उमड़े स्वयं, जो सेवन कर पाय।।
४. शहद	प्राकृतिक मिठास और, रोग निवारक जान। शक्ति देय जो वापरे, स्वास्थ्यवर्द्धक मान।।
५. तुलसी	तुलसी अद्‌भुत औषधि, दिव्य तत्त्व की खान। पृथ्वी का अमृत कहे, रोग अनेक अवसान।।

योग के पाँच नियम

१. शौच	सात्त्विक भोजन स्नान कर, शरीर शुद्धि कर जान। मन शुद्ध जब होत है, राग द्वेष अवसान।।
२. सन्तोष	कर्त्तव्यों को पालिए, करो कभी न रोष। सन्तुष्टि हर हाल में, इसे कहें संतोष।।
३. तप	सोना अग्नि निखरता, तन-मन प्राण निखार। चान्द्रायण व्रत जो करे, तप धर्माचरण का सार।।
४. स्वाध्याय	अध्ययन अच्छे शास्त्र का, अच्छी संगति होय। वैचारिक शुद्धि मिले, स्वाध्याय कहें सब कोय।।
५. ईश्वर-प्रणिधान	ईश नाम कीर्तन श्रवण, नाम मनन कर लेत। ईश्वर प्रणिधान कहें, शक्ति भक्त को देत।।

पंच महायज्ञ

१. देवयज्ञ	देव प्रवृत्ति जग में बढ़े, विश्व हो स्वर्ग समान। देवों के ही प्रकाश से, अन्तर्मन शुद्ध जान।।

२. पितृयज्ञ	मातुपिता सेवा करो, पितृ हो करें पयान।
	श्रद्धा से तर्पण करो, पितृयज्ञ कहें सुजान॥
३. नृयज्ञ	अतिथि का सत्कार कर, यह कृत यज्ञ समान।
	तृप्त होय यदि आत्मा, पूर्ण यज्ञ तू जान॥
४. ब्रह्मयज्ञ	अन्तर्मन दीपक जले, साधक करता ध्यान।
	वेदज्ञान पा जाय तो, ब्रह्मयज्ञ पहचान॥
५. भूत यज्ञ	भूतों की संतुष्टि हित, दैनिक यज्ञ विधान।
	पंचग्रास का होमकर, बलिवैश्व तू जान॥

पंच तत्त्व

१. पृथ्वी	पृथ्वी तत्त्व की अधिकता, अस्थिरूप में जान।
	अन्य तत्त्व सीमित रहे, पृथ्वी गुण की खान॥
२. जल	जल के बिन सब सून है, माने सब विद्वान।
	रक्त परिभ्रमण देह में, जल ही प्राण समान॥
३. तेज	ऊर्जा देह चलावती, स्नायु करें सब काम।
	जठराग्नि यदि मंद हो, पचे न हो आराम॥
४. वायु	प्राण वायु धारण करें, त्वचा फैफड़े जान।
	वायु रुके मृतक कहें, ले जायें शमशान॥
५. आकाश	देह बीच स्थान जो, कोष अनन्त दिखात।
	अणु आकाश कहात है, बिन इसके मृत पात॥

पंच महाव्रत (जैनधर्म) (यम के पांच भाग)

१. अहिंसा	सभी जीव सुखमय रहे, पीड़ा कोऊ न पाय।
	मानसा वाचा, कर्मणा, अहिंसा व्रत कहाय॥
२. सत्य	सत्य तत्थ्य जो जानते, सत मारग गतिमान।
	इसे महाव्रत मान कर, सत है ईश समान॥
३. अस्तेय	चोरी की वृत्तिबुरी, पाता दुःख महान।
	त्यागो ऐसी आदतें, अस्तेय इसको जान॥
४. ब्रह्मचर्य	संयम से इन्द्रिय कसें, संकल्पी दृढ़ मान।
	ओजस, तेजस से भरे, ब्रह्मचर्य तू जान॥

५. अपरिग्रह	संग्रह की आदत बुरी, दु:ख पायें सब लोग। ईश्वर पर विश्वास नहीं, अपरिग्रह न योग।।

इस्लाम धर्म के ५ नियम

१. कलमा	कलमा इनका मूलमंत्र, एक ही मुहम्मद जान। तौहीन ये कहलात हैं, सुख शान्ति की खान।।
२. नमाज	पाँच वक्त अदा करें, करते रव का ध्यान। सलात नाम से जानते, नमाज पढ़े सुजान।।
३. जकात	जो समाज उत्थान में, ढ़ाई प्रतिशत दान। अंजुमन की प्रक्रिया को, जकात कहें विद्वान।
४. रमजान	पाक महीना में करे, खान पान जआम जान। सुबह से लेकर शाम तक, रखें रोजा, रमजान।।
५. हज	काबा यात्रा जो करे, मक्का मदीना जाय। पाक तीर्थ में रहें नित, हज़ कबूल हो जाय।।

सिख पंथ के पंच प्यारे

सिखधर्म में अमर हैं, पाँच प्यारों का मान।
गुरुगोविन्द सिंह जलसा किया, धर्महित कौन दे प्राण।।
भरी सभा में एक दम, सन्नाटा गया छाय।
गर्दन सबकी झुक गई, प्राण पखेरू उड़ जाय।।
शूर वीर हमें चाहिए, जगो सपूतों, कहो नाम।
मोहमकचन्द धोबी रहा, साहिबचन्द नाई नाम।।
धर्मदास था जाटसुत, हिम्मतराम था कुम्हार।
दयाराम कुल के खत्री थे, पाँचों थे हिम्मत दार।।
एक एक अंदर ले गये, खड्ग की सुनी आवाज।
पाँच बलि कर आ गये, बहा खून क्या राज।।
सभी शान्त और दु:खी थे, पाँचों गये सिधार।
पाँचों जिन्दा सिंह थे, सिख धर्म से जिन्हें प्यार।।

प्राकृतिक चिकित्सा (पंचकर्म)

१. आकाश	कोषों की शक्ति घटे, करो सदा उपवास। कम भोजन और योग से, फल खा, सुख आभास।।
२. वायु	वायु असंतुलन जान के, स्वच्छ वायु कर स्नान। श्वास लो गहरी स्वजन, प्राणायाम विधि जान।।
३. सूर्य	स्नायु बलवान हों, धूप प्रभात गुण मान। सूर्य स्नान कहते इसे, क्षति पूर्ण हो जान।।
४. जल	कमी यदि जल की रहे, कृश तन कष्ट महान। जल पीवे स्नान कर, सब्जी फल रस पान।।
५. पृथ्वी	पुतला मिट्टी का बना, मिट्टी लेपन योग। लवणयुक्त जो खाद्य हों, इसका कर तू भोग।।

पंच बलि ग्रास

१. गो-ग्रास	तीन लोक की मातु हो, पुण्य, पवित्र हितकार। प्रथम ग्रास गो मातु को, जनेऊ सव्य ले धार।।
२. श्वान	द्वितीय पत्तल भोग की अर्पण श्वान निमित्त। जनेऊं कण्ठ धारण करो, मन हो श्रद्धासिक्त।।
३. काक बलि	तीजी बलि भूमि पर करो, जनेऊ अपसव्य धार। भाव सहित अर्पित तुम्हें, कर लेना स्वीकार।।
४. देवादिबलि	सव्य होय के कर क्रिया, देवहिं भोग लगाय। ग्रहण करो है प्रार्थना, चौथा यज्ञ कहाय।।
५. पिपीलिका	चींटी पतंगादि के लिए, पंचम ग्रास निकाल। स्वीकारो इस भोग को, तृप्ति होय तत्काल।।

पाँच उँगुलियाँ

१. तर्जनी	उँगली प्रथम उठाइए, सोच समझ और जान। संकेतक हैं जानिऐ, भ्रम फैले अनजान।। तर्जनी का उपयोग सुन, वादन करत सुजान। भोग विलास उच्चपद, निष्ठुर प्रशंसक जान।।

२. अंगूठा — अंगूठा सहायक हर काम में, तिलक करे इंसान।
दस्तावेजों पर सुनो, अनपढ़ करे निशान॥
अंगूठा दिखा दिया अगर, चिढ़ते चतुर सुजान।
अगुष्ठ प्रमाण ये जीव है, कहें सभी विद्वान॥

३. मध्यमा — गायन वादन में लगे, तर्जनी, से बड़ी जान।
औसत कद में ठीक है, बड़ी चित्तभ्रम मान॥
अनामिका मध्यम सम रहे, अशिष्ट करे, व्यवहार।
ज्यादा लम्बी होय तो, आलस्य, रोग आधार॥

४. अनामिका — नाम रहित उंगली यही, पाती बहु सम्मान।
स्वर्ण अंगूठी पहनते, पूजन तिलक में मान॥
लम्बाई हो अधिक यदि, सुख ऐश्वर्य पा जात।
तर्जनी सम ऊँची रहे, सम जीवन चल जात॥

५. कनिष्ठिका — चार अंगुल की कनिष्ठा, ज्यादा लम्बी होत।
विचार तेजस के मिलें, नेतृत्व शक्ति स्रोत॥
ज्यादा लम्बी हो यदि, मनुज बने गम्भीर।
छोटी पर कम बोलता, कमियों से हो पीर॥

पंच नदियाँ

पाँच नदी पावन बनी, भारतभू पुण्य महान।
उत्तर पश्चिम प्रदेश में, नदियाँ है विद्यमान॥
सतलज, व्यास रावी हैं, चिनाव नाम मशहूर।
झेलम नाम कहते इसे जल से है भरपूर॥

५ श्रद्धा सूक्त (ऋग्वेद का दशम मण्डल)

श्रद्धा से अग्निहोत्र मे ही, अग्नि प्रज्ज्वलित हो जाती है।
हवि आहुति देते हैं जब, धन, ऐश्वर्य एकत्व कहाती है॥
दाता को मुँहमांगा फल दो, इच्छुक को प्यार बाँटना माँ।
ऐश्वर्यों के फल भी भोगें, यात्री इच्छित फल पायें माँ॥
असुरों के नाश हेतु कीन्हा, देवों ने निश्चित जब विचार।
श्रद्धालु याज्ञिकों पर कर दी, इच्छित भोगों की बौछार॥

बलवती वायु रक्षा करती, सुर नर श्रद्धा से पूजा करते।
श्रद्धा से धन यहाँ मिलता है, संकल्पों से उपासना करते।।
प्रात: की पूजा अर्चा हम, श्रद्धा मध्याह्न में करते हैं।
श्रद्धा से युक्त हो माता, श्रद्धा से सूर्य को भजते हैं।।

५ बातें किसी से न कहें।

१.धन का नाश — कभी किसी से न कहो, धन नष्ट की बात।
पहली शिक्षा मान लो, यह तुमको सौगात।।

२. मन की पीड़ा — पीड़ा मन में होय जब, सहन करो मन मार।
कहो किसी से न कभी, कोई न हो मददगार।।

३. घर की बुराईयाँ — किसी प्रकार की कमी का, करना मत उद्गार।
लोग हँसें सुनके इसे, मन में दु:ख अपार।।

४. ठग जाना — कभी किसी ने ठगा हो, सह लेना चुपचाप।
ध्यान सदा आगे रखो, गोपनीय यह बात।।

५. अपमान — सहन करें अपमान जो, कहे किसी से नाय।
भूल जाय, होना ही था, न भूले दु:ख पाय।।

इन्द्र द्वारा रोहित को ५ शिक्षाएँ

सम्पत्ति मिलती है उनको, जो खूब परिश्रम करते हैं।
बैठे पापों से दबते हैं, विद्वज्जन ऐसा कहते हैं।।
हे रोहित! इन्द्र मित्र हूँ मै, जो निरन्तर चलता जाता है।
जो न बैठे निराश होकर, थकता पर चलता जाता है।।

चलते रहने से व्यक्ति की, पिंडलियाँ फूल ही जाती है।
आत्मा प्रसन्न होती उसकी, आरोग्य फल पा जाती हैं।।
धमार्थ कार्य हित जो चलते हैं, गति में व्यतिरेक न सहिए।
तीर्थाटन से अपराध पाप, सब नष्ट होत चलते रहिए।।

जो बैठे रहते हैं जग में, किस्मत उनकी स्थिर होती है।
उठने वालों की किस्मत भी, स्वयमेव ऊँची उठ जाती है।।

सोने वालों की सोती है, चलते के भाग्य को क्या कहिए।
चमके प्रतिपल आगे बढ़कर, इसलिए सदा चलते रहिए।।

जो सोता है कलयुग मानो, अंगड़ाई ले द्वापर मानो।
उठकर जो खड़ा हो जाए, त्रेता युग का स्वरूप जानो।।
जिसमें आशा उत्साह भरा, निश्चित मारग पर चलता रह।
सतयुग के दर्शन करता है, दिन रात मित्र तू चलता रह।।

संकल्पी के चल पड़ने पर, वह ही मधु को पा जाता है।
जो चले निरन्तर डगर सदा, मीठे रस का फल पाता है।।
देखो सूरज को जो निशिदिन, बिन आलस के चलते पहिए।
भौतिक आत्मिक उन्नति हेतु, संघर्ष करो चलते रहिए।।

ब्रह्मा की पांचवेदी

पूर्व वेदी को गया कहा, पश्चिम को पुष्कर जान।
उत्तर वेदी पंचक कही, विर्जा को दक्षिण मान।।
मध्यम वेदी प्रयाग है, नित उठकर स्नान।
ब्रह्मा की पाँच वेदियाँ, ऐसा शास्त्र प्रमाण।।

ब्राह्मणों के पाँच भेद

१. पंच गौड़ — सारस्वत और कान्यकुज, गौड़, उत्कल मैथिल जान।
विंध्याचल उत्तर बसें, पांच गौड़ पहचान।।

२. पंच द्राविड़ — कर्णाटक, तैलंग, द्रविण, महाराष्ट्र और गुर्जर साँच।
दक्षिण विंध्याचल रहे, द्राविड़ विप्र है पाँच।।

पाँच द्रव्य देवताओं पर चढ़ाए जाते हैं

१. गंध — गंध युक्त केशर तिलक, चन्दन प्रभुहिं चढ़ात।
शीतल हो मस्तक प्रभु, पृथ्वी से उपजात।।

२. पुष्प — जीवन हँसता खेलता, सुगंध चहु दिशि होय।
ईश्वर अर्पित कर रहे, आकाश रूप फूल तोय।।

३. धूप	वायु भूत होती सदा, धूप समर्पित नाथ।
	वातावरण मधुर बने, देना अपना साथ॥
४. दीप	ज्योति जागृत होय प्रभु, मिटे सदा अंधकार।
	अग्निरूप तेजस मिले, दीप देव नमस्कार॥
५. नैवेद्य	देते तुम संसार को, अमृत तुल्य प्रसाद।
	अर्पित तेरा ही तुझे, सब होवें आबाद॥

५ संस्कृत के महाकवि

कालिदास, भवभूति हैं, भारवि को पहचान।
माघ कवि और हर्ष को, महाकवि तू जान॥

एवं

कालिदास भवभूति हैं, दण्डी, सुबंधु, बाण।
संस्कृत के पंच कवि हैं, कहते सब विद्वान॥

५ पल्लव

१. वट	शीतल गुरु ग्राही जानिए, कषाय रस से युक्त।
	कफ, पित्त, विसर्प दाह हरे, योनि रोग से मुक्त॥
	वट पूजन करते स्वजन, पंचांग आता काम।
	हवा जड़ों के स्वरस को, पुंसवन में लो काम॥
२. गूलर	छाल स्तम्भन जानिऐ, पका फल शीतल होय।
	मधुमेह की बीमारी, मूलफल से ठीक होय॥
३. पीपल	पूजनीय यह वृक्ष है, सर्वांग काम में आय।
	कषाय रस पचता कठिन, योनि शोधन हो जाय॥
	मूत्र रक्त संग्राहक है, पौष्टिक शीत स्वभाव।
	छाल मूल फल कोपलों से, वाजीकरण के भाव॥
४. आम्र	मधुर कषाय रस युक्त है, अम्ल किंचित् मान।
	वमन अतिसार दूर कर, हृदय हाद अवसान॥
	मींजी चूरन लीजिए, प्रदर रोग हो दूर।
	फल राजा कहते इसे, पना, रस खा भरपूर॥

५. पिलकन — व्रण रोपक शीतल सहज, योनि रोग नशाय।
रक्त पित्तघ्न गुण युक्त है, प्लक्ष द्वीप अधिकाय॥

५ मुखी रुद्राक्ष

पंच मुखी धारण करें, गायत्री शिव, हनुमान।
पंचाक्षरी मंत्र जाप कर, शिव की कृपा महान॥
पंचमुखी रुद्राक्ष की, संख्या की बहु तात।
हृदय रोग नियंत्रण करे, पाप सकल मिट जात॥

पाँच चीजें सदा नवीन लगती हैं

सूर्योदय, पत्ता पान का, कथा महाभारत जान।
पत्नी प्रिय लागे सदा, अच्छा मित्र तू जान॥

(पंचकर्म चिकित्सा)

१. वमन — मल दोषादिक कष्ट दें, शरीर तंत्र रोगी होय।
प्रकुपित वायु निकलती, वमन कहाती सोय॥

२. विरेचन — वमन के सोलहवें दिन करे, उचित विरेचन विधान।
दोष सभी मलद्वार से, निकलें शीघ्र सुजान॥

३. निरुहवस्ति — तरल पदार्थ को भरो, वस्तियंत्र तैयार।
गुदा मार्ग से पक्वाशय में, कर प्रवेश संचार॥

४. अनुवासन वस्ति — गुदा द्वार से औषधि क्वाथ, ग्रहणी आमाशय जात।
कब्ज ठीक हो जात है, दोष सकल मिट जात॥

५. शिरोविरेचन (नस्य) — ज्ञानेन्द्रिय शक्ति बढ़े, मुख आभा बढ़ जाय।
नस्य क्रिया से श्लेष्मिक, कलाक्षुब्ध श्लेष्मा पाय॥

साधकों के लिए ५ का त्याग

१. व्यर्थ चिन्तन — ईश नाम स्मरण कर, लीला और गुण गाय।
भाव भरा चिन्तन करो, व्यर्थ चिन्तन मिट जाय॥

२. व्यर्थ भाषण — मिथ्या भाषण बंद कर, सार युक्त कर बात।
मौन व्रत सुख देत है, कीर्तन मुख पर आत॥

३. व्यर्थ दर्शन	दृश्य जगत अद्भुत बना, तुरत खिलावे खेल। घूम जाये मस्तक मन, इष्ट गुरु को देख।।
४. व्यर्थ श्रवण	शब्द नष्ट होते नहीं, सदा अमर बन जात। व्यर्थ वचन को मत सुनो, कथा ईश सुख पात।।
५. व्यर्थ भ्रमण	निरूद्देश्य का घूमना, हानिकारक होय। ईश, भक्त, पीड़ित व्यथित, चले लोक हित जोय।।

रास पञ्चाध्यायी में नाम संकीर्तन स्वरूप

१. प्रतीक्षा	जो आनन्द प्रतीक्षा में, मिलने पर न होय। ईश मिलन की आस में, सुकृत करो मन गोय।।
२. श्रवण	अन्तर्वाणी जब उठे, ईश स्वयं रम जाय। मुरली तान सुनावता, है गोपिन को भाय।।
३. उत्कण्ठा	प्रिय वस्तु की लालसा, प्रबल होत ही जात। उत्कण्ठा कहलावती, कारज गौण हो जात।
४. गृहकर्म त्याग	ईश भजन रस डूबता, लोक लाज छुट जाय। गृह कारज न लख परत, लक्ष्य एक सा जाय।।
५. परिसर्पण	ईश्वर से मिलना प्रमुख, ढोंग भक्त का जाय। बिना कहे गोपी चलीं, कृष्ण मिलन सुखदाय।।

संस्कृति के ५ प्रतीक

दीपकज्ञान प्रतीक है, कमल जन्म स्थली जान।
वटवृक्ष औदार्य बना, स्वस्तिक करे कल्याण।।
संस्कृति उद्गम ओम है, व्यापक सब संसार।
अ, उ और म के मिले, प्राकृत स्वर संचार।।

५ सकार

१. सत्संग	अच्छों की संगत करो, रहो बुरों से दूर। जीवन में सुख पाओगे, दुनियाँ में मशहूर।।
२. सदाचार	आचार अच्छे हों यदि, पूछें सारे बात। सदाचार है कीमती, बिन पैसे मिलजात।।

३. संतोष जिनको है संतोष जग, सुखी उसे ही जान।
बिन संतोष दुखी नर, निशि न नींद दिनमान।।
४. सरलता सरल चीज लगती सरस, प्यार करें सब कोय।
ईश्वर रखते लाज है, नर जो सीधे होय।।
५. सत्य सत्य धर्म का मूल है, सत में ईश दिखात।
सत से नैया पार हो, सत ही पूजा जात।।

पंच शील (बौद्ध धर्म)

पाँच नियम धारण करे, बौद्ध धर्म अपनाय।
नियत समय भोजन करे, स्वस्थ शरीर बन जाय।।
नाच गान से दूर रहें, संयम इन्द्रिय पाय।
अलंकार, सुगंध द्रव्य से दूरी रखो बनाय।।
सादा जीवन अंग है, आराम देय शैय्या नाय।
सोना चाँदी जो न गहे, पंचशील कहलाय।।

त्रिपिटक के पाँच शील

हानि प्राणि की न करो, बिना दिये न लेय।
अनैतिक यौन से दूर रह, झूँठ बने नहि ध्येय।।
मादक द्रव्यों से बचे, स्वस्थ शरीर का राज।
त्रिपिटक के पंचशील हैं, इनसे सजते साज।।

भारत-चीन संधि (पंचशील सिद्धान्त)

प्रादेशिक अखण्डता और, प्रभु सत्ता का सम्मान।
एक-दूजे को चाहिए, रखना इसका ध्यान।।
आक्रामक कार्यवाही को, न करे इक दूजे विरुद्ध।
आन्तरिक हस्तक्षेप है, दोनों को है निषिद्ध।।
आपसी लाभ समनीति का, पालन है अनिवार्य।
शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व से, विश्वसनीय कर कार्य।।

पंचशील पं०श्रीराम आचार्य

१. मितव्यता कंजूसी का नाम नहीं, कर विवेक उपयोग।
मितव्यता कहते इसे, व्यर्थ बने न योग।।

२. श्रमशीलता मेहनतकश नर पात है, सदा उच्च स्थान।
श्रमशील विजयी रहें, जग में पाते मान॥

३. शालीनता जीवन सरल सौम्य हो, दे सबको सम्मान।
सहनशील विनम्र जो, शालीन उनको जान॥

४. सुव्यवस्था करते जो निज अन्य को, बंधे व्यवस्था तंत्र।
श्रेष्ठ व्यवस्था का सुनो,यह है सच्चा मंत्र॥

५. सहकारिता धनुष तीर दोनों मिलें, सहकारिता कहाय।
इक दूजे की मदद कर, कार्य सफल हो जाय॥

भारतीय संस्कृति के पाँच प्राण

विचार, भावना, कल्पना, कला, नीति का धाम।
संस्कृति के यह प्राण है, विश्व पाय विश्राम॥

पंच ककार (क)

कच्छा, केश, कृपाण, कड़ा, कंघा सिर पर धार।
सिख धर्म जो मानते, उनके मुख्य आधार॥

कच्छा इन्द्रिय संयम जो रखें, वे ही चतुर सुजान।
तन मन दोनों पुष्ट हों, होते हैं बलवान्।

केश केश शीश धारण करें, फैशन से हैं दूर।
धारण जो करते इन्हें, शक्ति मिले भरपूर॥

कृपाण रक्षण संरक्षण करो, जग में जो कमजोर।
दुष्ट होय भयभीत लख, तेज कृपाण की कोर॥

कड़ा कड़ा हाथ में धारते, दृढ़ संकल्पी कहात।
धर्म हेतु बंधन यही, निशि दिन याद दिलात॥

कंघा बालों की है सुरक्षा, गंदगी दूर भगात।
सिख धर्म जो पालते, नियम पालो तात॥

पंच गकार (ग)

गंगा, गीता, गायत्री, गो और गुरु को जान।
हिन्दू धर्म में प्रमुख हैं, पंच गकार तू मान॥

गंगा	गंगा जल का पानकर, आत्मा हो बलवान। अमृत सम औषधि यही, माने सभी सुजान।।
गीता	गीता सर्वोपरि निधि, भरा ज्ञान विज्ञान। जो नर पढ़ता या सुने, होत परम कल्याण।।
गायत्री	आदिशक्ति माँ गायत्री, जग का कर उद्धार। सात शक्तियों से भरी, सृष्टि का आधार।।
गौ	गौ माता कहलावती, ऋषि मुनि पूजें ध्याय। अमृत सम तव दुग्ध है, कृपा चतुर्दिशि छाय।।
गुरु	गुरु को सब जग मानता, बिन गुरु ज्ञान न होय। सद्‌गुरु में तीनों मिलें, ब्रह्मा विष्णु शिव होय।।

पंच मकार (म)

मद्य रूप अमृत पय, ब्रह्मरंध्र से पाय।
वासना को जो मारता, ज्ञान खड्ग को पाय।।
श्वास प्रश्वास की गति चले, इड़ा पिंगला मत्स्य जान।
साधक प्राणायाम से, मांस सेवे प्रमाण।।
दुष्ट संग का त्याग कर, सत्संग जो अपनाय।
मुद्रा क्रिया कहावती, ब्रह्मलोक पहुँचाय।।
कुण्डलिनी और शिव मिलन, मैथुन क्रिया कहाय।
पंच मकार है तन्त्र के, कोई योगी ही अपनाय।।

पंच प्रयाग

विष्णु गंगा का मिलन जब, अलकनन्दा से होय।
विष्णु प्रयाग प्रसिद्ध है, ये जाने सब कोय।।
अलकनंदा और नंदा से, नंदप्रयाग शुभ जान।
अलकनंदा पिण्डर को, कर्णप्रयाग ही मान।।
मंदाकिनी अलकनंदा को, रुद्र प्रयाग पहचान।
अलकनंदा भागीरथी मिलन, देव प्रयाग तू जान।।

बदरीनाथ की ओर से अलकनंदा है आत।
केदारनाथ से शुरु हो, मंदाकिनी का प्रपात॥
भागीरथी गंगोत्री से, देवप्रयाग तक जात।
यहां से संगम बाद में, गंगा पवित्र है तात॥

पंचदेव

गणपति सब में पूज्य हैं, सबेसे प्रथम मनाय।
रिद्धि सिद्धि देते सदा, श्रद्धा से गुण गाय॥
दुर्गा दुर्गविनाशिनी, हरे शोक संताप।
शिव की महिमा क्या कहें, सबसे ऊँचे आप॥
विष्णु जग पालन करें, पिता तुल्य ही मान।
ब्रह्मा माता रूप है, जग रचना पहचान॥

पंच पुष्प

चम्पा, आम, शमी अरु, कमल तथा कनेर।
देवों पर अर्पण करे, पुष्प सांझ सवेर॥

पांच स्वर

सात स्वरों में पाँचवां, पंचम स्वर कहलात।
वर्ण ब्राह्मण, रंग श्याम है देव महादेव कहात॥
इन्द्र रूप क्रोञ्च द्वीप है, तीन मूर्च्छनाएँ जान।
गायन में नाभि, उरु, हृदय, कंठ, मूर्धा मान॥
संकेतक स्वर प कहे, पंचम से विख्यात।
जो साधे स्वरसाधना, गायक वह कहलात॥

पंच बदरी

पंच बदरी के धाम हैं, बद्रीनारायण कहाय।
कुम्हार चट्टी के पास में, आदि बदरी कहलाय॥
ऊखीमठ के निकट है, वृद्ध बदरी का धाम।
बीस कि०मी० दूर है, जोशीमठ का धाम॥
भविष्य बदरी नाम है, पवित्र भूमि स्थान।
पाण्डुकेश्वर उत्तराखण्ड में, योग बद्री पहचान॥

अभिनय के ५ अंग

नेत्र, भोंह, हाथ, पैर और मन आवे जब संग।
अभिनय की इस कला का, स्वाभाविक सा रंग।।

औषधि के ५ अंग

छाल, पत्र और फूल ले, मूल फल सभी समान।
पांच अंग से काम लें अलग अलग गुण जान।।

ब्राह्मण की ५ प्रकार की जीविका

१. ऋत — खेतों में जो बिखर गये, अन्न चुने तत्काल।
बालियों में जो शेष हों, उन्हें लगाये भाल।।

२. अमृत — बिन मांगे जो भी मिले, श्रद्धा से ले लेत।
कहे मनु जी ये वचन, अमृत ही पा लेत।।

३. भृत — भिक्षा वृत्ति से मिले, संतोषी कहलाय।
संग्रह की वृत्ति बुरी, त्यागी विप्र कहाय।।

४. प्रभृत — कृषि कार्य से विप्र जो, पाले निज परिवार।
ईश वंदना, यज्ञ, तप, जीवन हो साकार।।

५. सत्यानृत — आवश्यक समझे यदि, करे सही व्यापार।
सत्यानृत कहलावता, अंतिम ही आधार।।

५ अंक ज्यौतिष

पाँच अंक का अधिष्ठाता बुध ग्रह खास प्रभाव।
मिलना जुलना सहज ही, जन जन मैत्री के भाव।।
सफल होय व्यापार में, मूल तारीख शुभ होय।
बुध, गुरु, शुक्र के दिन, मूल तारीख शुभ होय।।
स्नायु की सक्रियता से, चिंतित अधिक न होय।
कुष्ठ रोग संग्रहणी से, क्रोध के लक्षण होय।।
अंक पाँच रंग बैंगनी, कपड़े रत्न सुहाय।
ज्ञान शक्ति का स्रोत है, भाग्य उदय हो जाय।।

पंच महाव्याधियाँ

पंच महाव्याधि प्रबल, दु:ख पायें वे लोग।
अर्श, कुष्ट, प्रमेह नित, क्षय, उन्माद का भोग॥

५ अमूल्य वस्तुएँ

पांच चीज हैं कीमती, धन बिन भी तू जान।
स्वास्थ्य ठीक होवे यदि, पहली सम्पत्ति मान॥
दूजी विद्वत्ता कही, सज्जन सखा बनाय।
ऊँचे कुल में जन्म ले, स्वतन्त्रता सुख पाय॥

पाँच की असाधारण उत्पत्ति

ऋषि, नदी और महात्मा, खानदान उद्गम जान।
चरित्रहीन नारी उपज, समझ परे तू मान॥

पंच केदार

महिष रूप धारण किया, शंकर ने एक बार।
पांच अंग स्थिर हुए, पांच जगह केदार॥
प्रथम पृष्ठ केदारनाथ, नाभि मध्यमेश्वर जान।
तुंगनाथ में बाहु है, शिव की शक्ति की महान॥
मुख स्थापित है किया, रुद्रनाथ में जाय।
कल्पेश्वर स्थित जटा, महिषरूप शिव पाय॥

पंच कोष

१. स्थूल — स्थूल शरीर को अन्न से, पोषण मिलत सुजान।
अन्नमय कोष विख्यात है, सृजन प्रक्रिया प्रधान॥

२. प्राणमय — पंच कर्मेन्द्रिय साथ में, प्राणरूप रम जात।
इससे ऊर्जा उपजती, प्राणमय कोश कहात॥

३. मनोमय — ज्ञानेन्द्रिय पांचों करें, विधिवत् अपना काम।
मन इनका है देवता, मनोमय है निष्काम॥

४. विज्ञानमय — पांचो इन्द्रियों सहित, बुद्धि बने प्रधान।
विज्ञान कोश जाग्रत सुनो, कहे योग विज्ञान॥

५. आनन्दमय अंहकार गलता जभी, अविद्यात्मक दर्शाय।
बाहर भीतर आनन्द ही, आनन्दमय कहाय।।

जीव की ५ अवस्थाएँ

जगता रहता जीव जग, जागृत की पहचान।
शयन समय देखे स्वप्न, द्वितीय अवस्था जान।।
न जागे, न सोवता, सुषुप्ति स्थिति मान।
मूर्च्छित हो फिर से जगे, मृत्यु क्षण करे पयान।।

मनुष्य जीवन की ५ अवस्थाएँ

पुत्र, बंधु और पति है, पिता पितामह मान।
मानुष जीवन है बंधा, पांचों को पहचान।।

स्त्री जीवन की ५ अवस्थाएँ

कन्या, भगिनी, पत्नी को, माता, पितामही जान।
स्त्री जीवन के रूप हैं, उक्त पाँच तू मान।।

५ पवित्र कन्याएँ

अहिल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा, मंदोदरी जान।
पांच कन्या पावन कही, शास्त्रों में है विधान।।

५ दैवी प्रकोप

आग लगे, अतिवृष्टि हो, बीमारी का रोग।
महामारी फैले यदि, दुष्काल का बनता योग।।

५ साहित्य के दोष

पद दोष, पद्यांश दोष, वाक्य दोष, पहचान।
अर्थ और रस दोष ही, पांच कमी को जान।।

५ धान्य

गेहूं, जौ, चावल, और तिल मूँग विख्यात।
पंच धान्य कहते इन्हें यज्ञ हेतु काम आत।।

नाटक के ५ अंग

कथानक, स्वभाव और भाषा शैली जान।
विचार सजावट संगीत ये, पांच अंग पहचान।।

पंचक दोष

धनिष्ठा, शतभिषा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र।
उत्तर भाद्रपद और रेवती कुछ कार्य हों सर्वत्र।।

पंचानन

पंचानन महादेव हैं, पंचमुखी हनुमान।
गायत्री मुख पाँच हैं, पंचकोष पहचान।।



षष्ठम अंक

बरेली महानगर की ६ दिशाओं में ६ नाथ

शिव की प्रार्थना

कानों में कुण्डल सोहें, सुन्दर भ्रकुटि भाल।
मुख प्रसन्न शिव का लखे, नयना बड़े विशाल।। १।।
विष पीकर नीलकण्ठ भये, देव हित भए दयाल।
सिंह चर्म धारण करें, गल शोभित मुण्डमाल।। २।।
ऐसे परम दयालु शिव, सबको करें निहाल।
अर्चन वंदन हम करें, जय जय जय महाकाल।। ३।।
बरेली नगर है घिरा छह ओर हैं नाथ।
धोपा, अलख और त्रिवटी, मढ़ी तपेश्वर नाथ।।
बनखण्डी संग क्षेत्र सब, कीलित रुद्रहि जान।
क्यों अनाथ होयें नगर, जहाँ नाथ विद्यमान।। २।।
सभी सुखी नर नारि हों, अशिव त्याग नादान।
शिव जी की शक्ति मिले, दूर होय अज्ञान।। ३।।

(१) (पूर्वदिशा) बनखण्डीनाथ

बनखण्डी पूरब बसें, इन्द्र, वराह के नाथ।
रक्षा करते हैं यहां, शिव बनखण्डी नाथ।। १।।
विशाल जंगल खण्ड का, नाम पड़ा बनखण्ड।
कहते हैं इतिहासकार, शिव की मूर्ति प्रचण्ड।। २।।
पांचाली स्थित करी, पिण्डी यहीं तत्काल।
मनोकामना पूरण करें, भक्तों की महाकाल।। ३।।
बनखण्डी प्रसिद्ध है, द्वापर युग से आज।
जो इनकी पूजा करें, सारें उनके काज।। ४।।
योगियों के योगी महा, शिवजी ही कहलाय।
सब देवों के देव हैं, महादेव हुलसाय।। ५।।

२. मढ़ीनाथ (पश्चिम)

पश्चिम में वरुण देवता, मढ़ीनाथ का स्थान।
जल की कमी न होयगी, रामगंगा पावन मान।। १।।
मणीनाथ के नाम से, पूरा क्षेत्र कहात।
स्थान बहुत प्राचीन है, चतुर्दिशा विख्यात।। २।।
मणिधारी कोई सर्प था, रहता इस स्थान।
चर्चा चारो ओर थी, दुग्ध पिलाय सुजान।। ३।।
नागदेव पूजन करें, श्रद्धा सिद्धि पाय।
आसपास का इलाका, मढ़ीनाथ कहलाय।। ४।।
कई सिद्धों की समाधि है, तप और त्याग महान।
शिव मन्दिर की मान्यता, दिन दिन बड़े सुजान।। ५।।

३. त्रिवटी नाथ (उत्तर)

उत्तर दिशा विराजते, कैलाशपति भगवान।
शक्ति निरन्तर मिल रही, कुबेर दिशा प्रधान।। १।।
त्रिवट स्थित है यहाँ, नाम त्रिवटीनाथ।
शिवलिंग प्रकटा यहाँ, नाथों के भी नाथ।। २।।
विशाल शिव मन्दिर बना, नव दुर्गाशक्ति अपार।
दर्शन परसन जो करें, फल देते दातार।। ३।।
त्रिताप मिट जात हैं, तीन वटों की छांह।
त्र्यम्बक की पूजा करें, पकड़े भक्त की बांह।। ४।।
जन्म मृत्यु बन्धन कटें, जीवन करें प्रदान।
मुक्ति का यह धाम है, टीवरी नाथ भगवान।। ५।।

४. तपेश्वर नाथ (दक्षिण)

दक्षिण में यम रूप है, भूतनाथ का वास।
पद्मनाभ रक्षा करें, घट घट करे निवास।। १।।
रेलवे लाइन पार में, सुभाष नगर स्थान।
मन्दिर भव्य बना यहाँ, तपेश्वर नाथ पहचान।। २।।

तपोभूमि प्राचीन है, जप, तप, त्याग महान।
द्वापर युग में ये जगह, जंगल था वीरान॥ ३॥
शिवलिङ्ग बड़ा प्राचीन है, तपे मुनीश्वर दास।
श्रीराम दास बाबा तपे, शिवशंकर के पास॥ ४।
शीतला माता पूजते, बालक रक्षा पात।
रोगों से मुक्ति मिले, सहज योग पा जात॥ ५॥

५. धोपेश्वर नाथ (पूर्व-दक्षिण -अग्निकोण)

पूर्व दक्षिण के मध्य में, अग्नि कोण है जान।
धोपेश्वर का निवास है, गरुड़ध्वज रक्षक मान॥ १॥
अत्रि ऋषि के शिष्य थे, धूम ऋषि था नाम।
धूमेश्वर के नाम से, शिव मन्दिर अभिराम॥ २॥
स्थापना द्वापर में भई, सघन बन दरम्यान।
धोपा मन्दिर पड़ गया, सब करते गुणगान॥ ३॥
रामजानकी मूर्तियाँ हैं, अति ही शालीन।
रायसती मन्दिर और, रामगंगा कुण्ड प्राचीन॥ ४॥
श्रावण मास मेला लगे, जनता का सैलाव।
नाथ योग में सिद्ध थे, बना रहे सद्भाव॥ ५॥

६. अलखनाथ (उत्तर-पश्चिम वायव्य कोण)

उत्तर-पश्चिम दिशा में, अलखनाथ भगवान।
वायव्य कोण रक्षा करें, आँधी और तूफान॥ १॥
किला इलाके में बना, मन्दिर अति प्राचीन।
अलखिया बाबा तप किया, शिव भक्ति में लीन॥ २॥
अलख जगाते नाम का, अलखनाथ पड़ा नाम।
देश विदेश के यात्री, पाते यहाँ विश्राम॥ ३॥
जीवित समाधि गुरु लई, तलेवृक्ष वट जान।
शिवलिंग स्थापित हुआ, रामेश्वर रूप महान॥ ४॥
नागा सम्प्रदाय करत है, संचालन शुभ मान।
आनन्द अखाड़ा नाम से, जाने सब विद्वान॥ ५॥

षडानन

कार्तिकेय शिव पुत्र की, कृतिका पत्नी मान।
छै कृतिका पालन किया, छह मुख हुए महान।।

६ दर्शन

१. मीमांसा
वेद व्यास के शिष्य थे, जैमिनि ऋषि नाम।
अथातो धर्म जिज्ञासा, सूत्र रचे अभिराम।।
अपूर्व नियम परिसंख्या, वेदवाक्य अर्थ महान।
मीमांसा दर्शन बना, अद्भुत नहीं आसान।।

२. न्याय
न्याय दर्शन रचयिता, गौतम ऋषि को जान।
षड् पदार्थ भावरूप है, द्रव्यगुण कर्म मान।
सामान्य और विशेष को, समवाय पदार्थ महान।
प्रमाण प्रमेय न्याय है, सोलह तत्त्व प्रमाण।।

३. सांख्य
कपिल मुनि हैं रचयिता, सांख्यशास्त्र है नाम।
संख्या निश्चित तत्त्व की, पच्चीस इनके नाम।।
आधि दैविक भौतिक और, आध्यात्मिक ताप जान।
सांख्य सूत्र सिद्धान्त में, अनुपम भरा है ज्ञान।।

४. वैशेषिक
वैशेषिक दर्शन बना, कणाद किया उद्धार।
खेत में बिखरे कण खा, पाई शक्ति अपार।।
प्रत्यक्ष और अनुमान को, माने सही प्रमाण।
अन्य का अन्तर्भाव है, सप्तम अभाव लो जान।।

५. वेदान्त
वेदान्त सूत्र प्रसिद्ध है, श्री नारायण भगवान।
जात विजात और सर्वविधि, स्वगत भेदन मान।।
नित्य निरञ्जन ब्रह्म ही, मन में अपने धार।
जग असत्य प्रपञ्च है, सर्प रज्जू आधार।।

६. योग
योग दर्शन शास्त्र में सूत्र योग दर्शात।
पंतजलि ऋषि नाम है, चित्तवृत्ति रुक जात।।
यम, नियम आसन और प्राणायाम विधिज्ञान।
प्रत्याहार और धारणा, ध्यान समाधि का भान।।

छह वेदाङ्ग

१ शिक्षा नासिका वेदमन्त्र कैसे पढ़े, कंठ और तालु स्थान।
उदात्त आदि स्वर भेद से, ह्रस्व दीर्घ का ध्यान।।
पठन विधि शिक्षा कही, भिन्न भिन्न तू मान।
ग्रन्थ नाम शिक्षा पड़ा, वेदघ्राणेन्द्रिय जान।।

२. कल्प (दोनों हाथ)
कल्प नाम दूजा कहा, श्रौत स्मार्त जान।
श्रौत कल्प ब्राह्मण कहे, कर्म विभाग का ज्ञान।।
स्मार्त कल्प संस्कारमय, अन्य है विधि विधान।
दोऊ हाथ है वेद के, अलग अलग पहचान।।

३. व्याकरण (मुख)
धातु और प्रत्यय सुनो, संधि, समास, लिंग जान।
शब्दों की व्युत्पत्ति को, करते सुगम सुजान।।
व्याकरण वेद का मुख है, शुद्धाशुद्ध का ज्ञान।
पाणिनि की व्याकरण पढ़े, संस्कृत के विद्वान।।

४. निरुक्त (कान) निरुक्त नाम को जानिए, संस्कृत कोष कहाय।
निष्कर्षों से कथन का, वर्णन मधुर सुहाय।।
अर्थ सहित जो वाक्य है, संग्रह उसका जान।
वेद शब्द सुअर्थमय, कहे वेद के कान।।

५. छन्द (पैर) मगण आदि के भेद से, पद्य रचना की जात।
गायत्री वैदिक छंद अरु, आर्या लौकिक कहात।।
पंचम अंग है वेद का, वेद चरण कहलात।
पिङ्गल सूत्र प्रधान है, छन्द ग्रन्थ लखात।।

६. ज्यौतिष (नयन) नक्षत्र ग्रह का ज्ञान सब, ज्यौतिष विद्या जान।
भूत भविष्य, वर्तमान की, गतिविधि का अनुमान।।
बोध काल का होत है, ज्यौतिष नाम कहाय।
नयन वेद का जानिए, गणित फलित कहलाय।।

षट् ऋतुएँ

१. वसंत ऋतु (मार्च, अप्रैल)

चैत्र वैशाख दो मास है, ऋतु वसंत कहलाय।
ठंड गुलाबी पड़त है, मौसम बदला जाय॥
नूतन पल्लव आत हैं, फूल फल वृद्धि होय।
सरसों, अरहर मसूर हो, मन वसंती होय॥

२. ग्रीष्म ऋतु (मई, जून)

ज्येष्ठ, आषाढ मास में, ताप उच्च हो जाय।
वायु दाब कम होत है, ओला वृष्टि हो जाय॥
उष्ण शुष्क आँधी चले, मैदानीं में जाय।
खरबूजे तरबूज और साग, ककड़ी फसल लहराय॥

३. वर्षा ऋतु (जुलाई अगस्त)

श्रावण भादों मास में, तापमान घट जात।
न बरसे लम्बे समय, वायु मण्डल गरमात॥
पश्चिम तट आये पवन, मानसून गहराय।
भारी वर्षा होत है, चतुर्दिश जल दिखाय॥
खरीब फसलें होत हैं, चावल मक्का ज्वार।
कपास तिल और मूँगफली करते हैं काश्तकार॥

४. शरद् ऋतु (सितम्बर,अक्टूबर)

आश्विन कार्तिक माह को, शरद ऋतु ही जान।
प्रत्यावर्तन काल मानिए, मानसून अवसान॥
तापमान कम होत है, रबी की फसलें होंय।
गेहूँ चना मटर जौ, गन्ना कपास दें बोय॥

५. हेमन्त ऋतु (नवम्बर दिसम्बर)

मार्गशीर्ष और पौष का, हेमन्त में बनता योग।
उत्तम खेती फसल बढ़े, उपजे न कोई रोग॥
पुष्टिकर भोजन करो, मधुर अम्ल नमकीन।
शरीर स्वस्थ के सूत्र हैं, मालिश व्यायाम ऊन॥

६. शिशिर ऋतु (जनवरी, फरवरी)

माघ फाल्गुन माह है, कफ संचय हो जाय।
प्रथम मास सर्दी अधिक, दूजे कम ह्वै जाय॥
पतझड़ होता वृक्ष से, पवन सरल क्रम चाल।
शीतकाल को त्यागकर, नवरात्रा है भाल॥

षट् कर्म (यज्ञ पूर्व)

१. पवित्रीकरण पवित्रता प्रथम मंत्र है, जीवन बने महान।
शुभ्र कमल नेत्र, प्रभु, करता तेरा ध्यान॥
पवित्र या अपवित्र हो, किसी रूप में जान।
बाहर या भीतर सभी, शुद्ध करो भगवान॥

२. आचमन मन वाणी अन्तःकरण, शुद्धि बना विधान।
तीन बार आचमन कर, शुद्धोदक जल पान॥
तुम आच्छादन बनो, तुम ढक्कन बन जाव।
सत्य तुम्ही शोभा बनो, सम्पत्ति सब मिल जाय॥

३. शिखा बंधन सद्विचार का केन्द्र है, लघु बृहत् मस्तक बीच।
दिव्य शक्तियाँ खींचता, जल से इसको सींच॥
महामाया के रूप में, चक्र सहस्र का निवास।
तन मन बुद्धि तीव्रकर, तेजस, करत प्रकाश॥

४. प्राणायाम प्राणों का आयाम है, खींचों साँस सुजान।
पूरक अन्तः कुम्भक है, बाहर रेचक जान॥
बिना साँस की क्रिया को, बाह्य कुम्भक पहचान।
भूर्भुवः स्वः और महः, जनः, तपः सत मान॥

५. न्यास दस इन्द्रियों की शुद्धता,न्यास क्रिया कहलाय।
सही कार्य संलग्न हों, तो प्रभु दौड़े आय॥
मुख नासिका, आँख दो, कान हाथ पद जान।
संकट से मुक्ति मिले, स्थित प्रभु को जान॥

६. पृथ्वीपूजन	माता देती अन्न जल, वस्त्र खनिज, सामान। मातृभूमि पूजन करें, श्रद्धा हो बलवान। जगत धारिणी हो तुम्हीं, धारे विष्णु भगवान। आसन करो पवित्र तुम, अपना लो नादान।।

षड्रस

१. मधुर	पृथ्वी जल प्रधान है, वात पित्त शामक जान। साधक हित ये मुख्य हैं, शीतल, कफ वर्द्धक मान।
२. अम्ल	पृथ्वी अग्नि प्रमुख हैं, पित्त बढ़ाय सुजान। गौण साधकों हेतु है, उष्ण, वातहर जान।।
३. लवण	जल-अग्नि ये मुख्य हैं, कफ पित्त करे सहाय। उष्ण वातहर जानिए, साधक गौण कहाय।।
४. तिक्त	वायु आकाश प्रधान है, नष्ट पित्त कफ होय। आवश्यक सेवन करो, शीत वायु वृद्धि होय।।
५. कटु	वायु अग्नि प्रधान सुन, वायु पित्त बढाय। कफ नाशक और गर्म है, साधक गौण दिखाय।।
६. कषाय	वायु पृथ्वी प्रधान है, कफहिं दूर कर देत। शीतल वात बढ़ावता, जरूरत हो तो लेत।।

दैनिक षट्कर्म

१. स्नान	शरीर शुद्धि के लिए, नित प्रति करे स्नान। धुले वस्त्र धारण करो, निर्मलता रख ध्यान।।
२. संध्या	षटकर्मों के बाद में कर शक्ति का आह्वान। प्रात: सायं दो समय, ब्रह्म संध्या तू जान।।
३. जप	गायत्री का जप करो, निश्चित संख्या मान। शक्ति भक्ति को पाओगे, जीव का हो कल्याण।।
४. देवपूजन	पूजन पंचोपचार या, षोडशोपचार कर तात। सब सामग्री अपर्ण करो, दिव्य गुण मिल जात।।
५. बलिवैश्व	पंच ग्रास का भोग कर, जीव हिंसा से दूर। घी शक्कर या गुड़ मिला, नित यज्ञ कर जरूर।।

६. अतिथि सत्कार अतिथि का सत्कार कर, छठा कर्म कहलाय।
श्रद्धा भाव पूजन करो, भोजन मधुर खिलाय।।

छह बातें विचारणीय

कैसा समय स्थान है, कौन मित्र है साथ।
आमदनी क्या खर्च है? कौन, शक्ति क्या तात।।

षट् तीर्थ

१. भक्ततीर्थ हिरदे में निशिदिन बसें, देत सदा वरदान।
भक्ततीर्थ कहलावते, भक्त होय भगवान।।
२. गुरुतीर्थ गुरु की भक्ति जो करे, शक्ति उसे मिल जात।
गुरुतीर्थ हृदय बसे, शान्ति सुख आ जात।।
३. मातातीर्थ माँ के चरणों में बसे, सारे तीरथ आय।
उऋण कभी न हो सके, कोटि जनम पा जाय।।
४. पितातीर्थ पिता सदा पोषण करे, नित उठ राखे ध्यान।
पिता तीर्थ सम मानिऐ, समझो विष्णु समान।
५. पतितीर्थ पत्नी को पति देव ही, होता तीर्थ समान।
तीर्थ पुण्य मिलते उन्हें, करती जो सम्मान।।
६. पत्नी तीर्थ भार्या हो गुणवान यदि, पति रहता निष्काम।
तीर्थ लाभ घर में मिले, बाहर तीर्थ न काम।।

आध्यात्मिक षट् सम्पत्तियाँ

१. शम मन को चंचल जानिए, पलक झपकते जाय।
वश में करना है कठिन, सतत अभ्यास कर पाय।।
२. दम जो इन्द्रिय वश में करे, अनुशासन कर पाय।
दुष्प्रवृत्ति के दमन की, क्रिया दम कहलाय।।
३ तितिक्षा गर्मी सरदी बरसात में, कष्ट स्वयं सह जात।
मन में दु:खी न होत जो, तितीक्षा सफल कहात।।
४. समाधान प्रश्न बहुत, उत्तर बहुत फिर भी है व्यवधान।
साँच कहे को आँच क्या, मिले सही समाधान।।

५. उपरति — जो विषयों से मुक्त हो, जीवन निर्मल होय।
इन्द्रिय शुद्ध पवित्र हों, उपरति कहें सब कोय।।

६. श्रद्धा — श्रद्धा की जागृति होय, मन में हो विश्वास।
ईश प्राप्ति होती उसे श्रद्धा जिसके पास।।

षट्कोण

षट्कोण के आकार की, भूमि करे जो वास।
प्रगतिशील जीवन जिये, इष्ट करे विश्वास।।

आयु काटने वाले ६ दोष

१. अति अभिमान — ऊँचे कुल पद पाइके, करते जो अभिमान।
पूर्ण आयु पाते नहीं, मध्य ही करे पयान।।

२. अधिक बोलना — बक झक करते हैं सदा, करे न कोई विश्वास।
सत से रहते दूर हैं, कोई न आवे पास।।

३. त्याग का अभाव — त्याग बिना नीचे गिरे, बड़े-बड़े बलवान।
शास्त्र विरुद्ध न करें, तो होवे उत्थान।।

४. क्रोध — दुश्मन सबसे है बड़ा, क्रोधहिं तू पहचान।
अंधा हो जाता मनुज, करता पाप महान्।।

५. स्वार्थ — मैं, मेरा परिवार ही, ज़र ज़मीन ही प्रधान।
स्वार्थ सिद्धि की सोचता, पाये न सम्मान।।

६. मित्रद्रोह — मित्रों से ईर्ष्या करे, सुख न मिले जहाँन।
पातक है सबके बड़ा, देते क्यों नहीं ध्यान।।

गृहमहिमा के ६ सूक्त

१. मन मुदित होय घर में आते, ऊर्जा से सुमति मेधा पाता हूँ।
कल्याणक, मैत्रीभाव चक्षु से, इनके रेस से भर जाता हूँ।।

२. धन धान्यों से भरपूर गृह, घी, दूध युक्त सुख दाता है।
ये हैं घनिष्ठ सौन्दर्य युक्त, समझें तो मन रम जाता है।।

३. हों मधुर शिष्ट रहने वाले, सौभाग्य खुशी पा जाते हैं।
भूखा प्यासा भयभीत न हो, प्रीतिभोज का आनन्द पाते हैं।।

४. घर से बाहर जब जाते हैं, तो ध्यान निरन्तर आता है।
उन घरों से सहृदयता रहती है, वे जाने आवाहन कर्ता है।।
५. दुधारू गायों का वास यहाँ, भेड़ बकरी आदि पशु रहते हैं।
जिन रसों से अन्न निखरता है, अमृत सम स्वाद भी होते हैं।।
६. धनवान मित्र आते घर में, संग बैठ के भोजन खाते हैं।
गृहवासी हों स्वस्थ स्वच्छ, नीरोगी पुष्ट कहलाते हैं।।

६ शत्रु ६ समाधान

काम उपासना से मिटे, क्रोध हटे संत्संग।
लोभ त्याग से जात है, जहर भरा अंग अंग।।
मोह की उत्तम औषधि, एकान्त वास तू जान।
मद भिक्षा से दूर हो, मत्सर भक्ति पयान।।

६ मुखी रुद्राक्ष

छह मुख के रुद्राक्ष का, रूप षडानन जान।
जो धारण करते इसे, प्रतिभा बड़े सुजान।।
बुद्धि और स्मृति बड़े, धारक हो धैर्यवान।
बोलने की क्षमता बढ़े, जग में हो सम्मान।।

षट्-चक्र (कोष)

गुदाद्वार वृषण मध्य में, चक्र है मूलाधार। – पृथ्वी
नाभि से कुछ नीचे है स्वाधिष्ठान अपार।। – अप
नाभि के स्थान पर है, मणिपुर चक्र सुजान। –अग्नि
हृदय स्थान को मानिए, अनाहतचक्र महान।। –वायु
कंठ स्थान प्रतिष्ठित है, विशुद्धि चक्र ज्ञान। – आकाश
भ्रूमध्य में स्थित रहे, आज्ञाचक्र को जान।। – मन

षष्ठी सूर्य व्रत

कार्तिक शुक्ला छठ को, व्रत स्त्रियों का होत।
पति पुत्र कल्याण हित, ऐश्वर्यों का स्रोत।।

सूर्यास्त क्षण पूजा करे, नदी जलाशय जाय।
रात्रि को कीर्तन प्रभु, सूर्य को अर्घ्य चढ़ाय।।

षट्कर्म– गृहणी के होते हैं

देव, अतिथि पूजन करे, तुलसी पूजन मान।
गोग्रास नियमित करे, अर्घ्य और दीपदान।।

जैन धर्म में ६ कर्म

देव पूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय नियमित जान।
संयम से यदि काम ले, तप और करते दान।।

संन्यासियों के ६ कर्म

भिक्षाटन और जप करे, शौच और स्नान।
ध्यान प्रभु का नित करे, देवार्चन को मान।।

हठयोगियों के ६ कर्म

धौति, वस्ति, नेति कर, नौलि कपाल भाति।
त्राटक की साधना करे, शक्ति मिले बहु भाँति।।

छह वीर छह-शंख

श्रीकृष्ण का पांचजन्य, अर्जुन का देवदत्त।
भीमसेन का पौंड्र, ध्वनि करता अभिव्यक्त।।
युधिष्ठिर का अनन्त-विजय, नकुल का सुघोष।
सहदेव ने मणिपुष्पक को फूंका पूरे जोश।।

६ चीजें बिना आग के जलाती रहती है

नीच घराने नौकरी, बुरे ग्राम का वास।
क्रोधानन पत्नी मिले, मूरख पुत्र की आस।।
भोजन कुत्सित हो यदि, कन्या विधवा होय।
बिना आग देहा जले, षड् दु:ख कारण होय।।

६ अंक ज्योतिष

छह, पन्द्रह, चौबीस को जन्मे, कोई सुजान।
शुक्र ग्रह का प्रभाव हो, प्रतिभावान तू जान।।

विवाह, सगाई, विलासता, संगीत कला दक्ष होय।
मंगल, गुरु, और शुक्र में, सफल नया कृत होय।।
जीवन में आनन्द सुख, लेते हैं ये भरपूर।
मित्र सहज बन जात हैं, तीन नौ रहे न दूर।।
स्वामी है छह अंक का नीला, हल्का रंग पाय।
आशा का है प्रतिनिधि, प्रकृति प्रेम, मन भाय।।

६ वस्तुएँ शाश्वत नहीं होती

बादल की छाया नहीं, दुर्जन प्रीति न शात।
सिद्ध अन्न न होत है, नारी अशाश्वत दिखात।।
यौवन सदा न रहत है, इस शरीर के माहिं।
धन ने साथ न दिया है, जग में चले हंसाहि।।

कुल की परीक्षा ६ प्रकार से करे

घर सामान को देखकर, जन्मभूमि और वंश।
कैसा है आचार, अन्न, आच्छादन का अंश।।

जीव के ६ गुण

इच्छा शक्ति जीव में, उद्देश्य ज्ञान प्रभाव।
प्रयत्न शील जीवन बने, सुख दुःख में सम भाव।।

६ प्रकार से वनस्पति की सृष्टि हुई

बिना फूल के फलों से, पीपल आदि बढ़ जात।
एक बार फूलें फलें, केलादि नष्ट हो जात।।
लता बड़े सहयोग से, वृक्ष सहारे जाय।
कठोर छिलकों से युक्त जो, बेल, केथ कहाय।।
आम आदि फूले फलें, अन्य लाभ मिल जात।
छह प्रकार की वनस्पति, जग में परे लखात।।



सप्तम अंक

गायत्री महामंत्र की ७ शक्तियाँ

वेदमाता स्तुति करें, गायत्री मंत्र है महान।
आयुष दीर्घ मिले सुजन, प्राण शक्ति हनुमान।। १।।
प्रजा पशु दोनों मिलें, संतति, पशु धन जान।
कीर्ति चारो ओर हो, विश्वामित्र राम सुजान।। २।।
द्रविणम बिन मांगे मिले, गाँधी, बुद्ध, नानक शान।
द्विजों को पावन करे, तेजस मिले महान।। ३।।
ब्रह्मवर्चस बड़ी शक्ति है, आचार्य, वशिष्ठ सम मान।
निशि दिन वन्दन मैं करूँ, सद्बुद्धि करो प्रदान।। ।४।।

७ वस्तुएँ अभिमान का कारण

उत्तम कुल, धन, ज्ञान हो, सुन्दर पाये शरीर।
वीर, दान, तप सात ये, अहं त्याग मतिधीर।।

सप्तपदी

सप्तपदी की प्रेरणा, सुनो ध्यान में लाय।
परम पिता तव साथ हैं, गौर गणेश मनाय।।

१. विष्णु की है साक्षी, पाले सब संसार।
अन्न सदा घर में रहे, प्रथम चरण का सार।।

२. जीव ब्रह्म रवि चन्द्रमा, पृथ्वी और आकाश।
द्वितीय चरण संग संग धरो, बल वृद्धि की आश।।

३. साक्षी हैं सब शक्तियाँ, गुण तीनों त्रय लोक।
तृतीय चरण मिल के धरो, धनवृद्धि इहलोक।।

४. चौथा पग रखो युगल, ब्रह्म, वेद, युग चार।
सुख सम्पत्ति घर में बढ़े, करो प्रेम व्यवहार।।

५. पाँच प्राण भूतों सहित, चरण पाँचवां धार।
प्रजापालन की रीति का, यश गाए संसार।।

६. षड्‌रस षड् ऋतुओं सहित, कार्तिकेय महाराज।
छठा कदम दोनों रखो, ऋतु अनुकूल कर काज।।

७. सप्तऋषि पत्नी सहित, सात द्वीप, सागर सात।
कदम सातवां तुम रखो, करो मित्रवत् बात।।

७ ईश्वर कृत आश्चर्य

आकाश है बिन खंभ के, बाल हथेली नाय।
समुद्र के ढक्कन नहीं, घोड़ी के स्तन नाय।।
माता पिता नहीं देवता, जीभ में हड्डी कहाँ।
रक्त बालों में न दिखे, ईश का आश्चर्य यहाँ।।

७ मुखी रुद्राक्ष

सप्त मातृका स्वरूप है, सात रूप रुद्राक्ष।
धन कीर्ति सुख पात हैं, ऋषियों की है साक्ष्य।।

७ सप्तबदरी

सात क्षेत्र में बट रहा, बदरीनाथ स्थान।
आदि, ध्यान, भविष्य, वृद्ध, योग, नृसिंह प्रधान।।

सप्त धातुएँ

१. रसधातु
रस से धातु पुष्ट हो, प्रथम धातु कहलाय।
शरीर को धारण करे, पोषक तत्त्व कहाय।।
सारभाग आहार का, अतिसूक्ष्म रस जान।
व्यान वायु तन में रमे, धातु तृप्ति तू मान।।

२. रक्तधातु
रुधिर मूल शरीर का, रुधिर देह आधार।
रक्षा हर कीमत करो, रक्त प्राण का सार।।
शुद्ध खून का लाल रंग, गुंजा, कमल समान।
मांस धातु की पुष्टि हो, जीवन करे प्रदान।।

३ मांस-धातु
अधिक अंश हैं मांस का, स्थिर दृढ़ तन होय।
मांस पेशी बिन हड्डियाँ, क्रियाशील न होय।।

विविध क्रिया इस देह की, सकुचे फैले सुजान।
मांस धातु के कारणे, पोषण तन का मान॥

४. मेद धातु — मांस धातु अणु भाग से, मेद धातु बन जात।
मेद घृत के सदृश है, देह स्निग्ध बनात॥
अवयव को पोषण करे, संधि होय गतिमान।
श्लैष्मिक कला निर्मित करे, मेद धातु प्रमाण॥

५. अस्थि धातु — शरीर को स्थिर करे, नाम अस्थि संस्थान।
ढाँचा बनता हड्डी का, पाये रूप सुजान।
पृथ्वी, आकाश, वायु का, अधिक अंश ही मान।
शरीर को धारण करे, मज्जा पुष्टि पहचान॥

६. मज्जा धातु — द्रव्य रूप प्रधान जो, चिकनाई से युक्त।
दीर्घ अस्थि के मध्य में, पीलापन उपयुक्त॥
क्षुद्र अस्थि में लालिमा, अणु मज्जा बन जाय।
मज्जा धातु शुक्र है, तन को बल मिल जाय॥

७. शुक्र धातु — शुक्र कहाँ स्थिर रहे, इस शरीर दरम्यान।
सब शरीर में व्याप्त है, शक्ति करे प्रदान॥
जैसे दूध में घृत वसे, गुड़ गन्ने में जान।
शुक्र एक आधार है, ओजस करे प्रदान॥

७. सप्त घृतमातृकाएँ

सात दिव्य माता कहीं, घृत मातृका जान।
पूजन यज्ञ मण्डप तले, देता शक्ति महान॥

१. कीर्ति — कीर्ति शक्ति है बड़ी, फैली जग दरम्यान।
साधक की रक्षा करे, पाये शान्ति सुजान॥

२. लक्ष्मी — जग के भौतिक कार्य में, आती है उपयोग।
कभी भूलकर न करो, मातृ शक्ति का भोग॥

३. धृति — धारण करने योग्य जो, धृति मातृ का नाम।
शक्ति ऐसी दो मुझे, पाऊँ मन विश्राम॥

४. मेधा	प्रतिभा जागृत होत है, मेधा शक्ति ललाम। मेधावान नर ही करे, जग में ऊँचे काम।।
५. सिद्धि	कार्य सफल हो जगत में, मन पाये आराम। साधना से सिद्धि मिले, सिद्ध पुरुष का काम।।
६. प्रज्ञा	प्रज्ञा बुद्धि पा मुक्त हो, ऋषि सम उसको जान। पा लेता संसार में, श्रेष्ठतम ज्ञान-विज्ञान।।
७. सरस्वती	वीणा वदिनी सरस्वती, कर शिक्षा का विस्तार। सभी कला ज्ञाता बने, ज्ञान की तुम भण्डार।।

७ करन्यास

१. मुख	ऐसी शक्ति दो प्रभु, बोलू अच्छे बोल। स्वाद जीभ का हानिप्रद, भोजन को ले तोल।।
२. नाक	प्राण शक्ति का स्रोत है, करता स्वास्थ्य प्रदान। गंध को ग्रहण करो, दुर्गंध भी विद्यमान।।
३. आँख	नयनों की कर साधना, अग्नि तत्त्व है जान। आँखें होय पवित्र तो, दृष्टि दूर की मान।।
४. कान	ईश गीत प्रभु की कथा, सुने श्रवण मन लाय। दोऊ कान पवित्र हों, यह ही पुण्य कहाय।।
५. भुजाएँ	हे प्रभु दोनों बाहुएँ, शक्तिमय हो जाय। रक्षा के हित में लगे, निर्बल करें सहाय।।
६. जंघाएँ	जंघाओं में ओज हो, दौड़ दौड़ कर काम। ईश्वर से है प्रार्थना, सत्पथ तीरथ धाम।।
७. सारे शरीर	हृष्ट पुष्ट हों अंग सब, कृपा करो जगदीश। अंगन्यास मैं कर रहा, चाहूँ तव आशीष।।

७ सात आज्याहुतियों

१. प्रजापति	प्रजापिता सृष्टि रची, अद्भुत रचनाकार। प्रथम आहुति आपको, स्वीकारो दातार।।
२. इन्द्र	देवराज ऐश्वर्य दो, इन्द्रिय हो उद्धार। द्वितीय आहुति दे रहे, लेना तुम स्वीकार।।

३. अग्नि — अग्नि ज्योति ऊपर उठे, ऊर्जा सबको देत।
आहुति अर्पण कर रहे, अग्नि पुरोहित देत॥

४. सोम — चौथी आहुति सोम हित, अमृत का भण्डार।
अमर होत, पीता इसे, करियेगा स्वीकार॥

५. भूः — प्राण शक्ति का स्रोत है, आहुति करूँ प्रदान।
शक्ति आपकी कर सके, जन जन का कल्याण॥

६. भुवः — वायुदेव को समर्पित, आहुति घृत की मान।
ज्ञान ज्योति के रूप में, स्वीकारो भगवान॥

७. स्वः — सूर्य देव के तेज को, धारण करे जहान।
प्राणीमात्र रक्षा करो, सुखी होय इंसान॥

प्रियव्रत के ७ पुत्रों के सात द्वीप

१. जम्बूद्वीप (आग्नीध्र)

जम्बूद्वीप भूलोक में, खारा समुद्र चहु ओर।
जामुन वृक्ष की सघनता, द्वीप बड़ा घन घोर॥

२. प्लक्ष द्वीप (इध्मजिह्व)

वन पाकर के वृक्ष हैं प्लक्ष द्वीप कहलाय।
सूर्यदेव ही उपास्य हैं, इक्षुरस समुद्र दिखाय॥

३. शाल्मलि द्वीप (यज्ञबाहु)

इसके चहु ओर दो गुना, शाल्मलि दीप स्थान।
चन्द्र उपासक मानते, सुरा समुद्र दिक् जान॥

४. कुश द्वीप (रमणीक, हिरण्यरेता)

इसको घेरे में लिए, कुश द्वीप दुगना जान।
अग्नि पूजक हैं यहाँ, घृत समुद्र विद्यमान॥

५. क्रौञ्च द्वीप (धृतपृष्ठ राजा)

घृत समुद्र को घेरता, क्रौञ्च द्वीप स्थान।
वरुण देव पूजा करें, क्षीर समुद्र चौगान॥

६. शाक द्वीप

क्षीर समुद्र की परिधि, शाक द्वीप आ जाय।
पवन देव पूजें सभी, दधि सागर लहराय॥

७. पुष्कर द्वीप (वीति होत्र शासक)

इसको घेरे दीप जो, पुष्कर नाम कहाय।
शुद्धोदक समुद्र से घिरा, ब्रह्म प्राप्ति फल पाय॥

सात चिरंजीवी

अश्वत्थामा, बलि, व्यास, विभीषण और हनुमान।
कृपाचार्य परशुराम ये, सातों अमर सुजान॥

सात ऋषि

सात ऋषि प्रमुख हैं, गौतम, भरद्वाज नाम।
विश्वामित्र, जमदग्नि, अत्रि, कश्यप, वशिष्ठ प्रणाम॥

सात समुद्र

१. लवणोद समुद्र नमकयुक्त जल से भरा, लवण समुद्र कहलाय।
जम्बूद्वीप चारों तरफ, इससे घिरा दिखाय॥

२. ऐक्षवोद समुद्र प्लक्ष द्वीप को घेरता, ऐक्षवोद समुद्र कहलाय।
लवण समुद्र सम है बड़ा, जल ही जल दर्शाय॥

३. सुरोद समुद्र ऐक्षवोद से दो गुना, रूप विशाल दिखात।
शाल्मलि के चतुर्दिक, सुरोद नाम कहा जात॥

४. घृत समुद्र सुरा समुद्र को घेरता, इससे दूना जान।
घृत समुद्र ने नाम से रखते इसका मान॥

५. क्षार समुद्र क्रौञ्च पहाड़ की छाव में, क्रौञ्च द्वीप का वास।
क्षार समुद्र से है भरा, ऊपर है आकाश॥

६. दधि मण्डोदक क्षार समुद्र को घेरता, शाकद्वीप है नाम।
दधि मण्डोदक है यही, छठा समुद्र अभिराम॥

७. स्वादूदक पुष्कर द्वीप से है घिरा, स्वादूदक कहलाय।
लोकालोक पर्वत परे, प्राकृतिक छटा दिखाय॥

सात पर्वत

पर्वत सात बताएँ हैं, हिमालय, निषध अटूट।
माल्यवान, परियात्रिक, विंध्य, गंधमादन और हेमकूट।।

सात ऋषि (महाभारत)

मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह क्रतु को जान।
पुलहस्त्य और वशिष्ठ हैं, सातो को पहचान।।

सप्त पालात

(१-३ तक अपोमय स्तर, ४-७ तक अग्निमय स्तर)

१. अतल (मयासुर पुत्र बल स्वामी)

मयासुर पुत्र स्वामी बना, बल है जिसका नाम।
अपोमय स्तर मानते, अतल तलो का धाम।।

२. वितल (हाटकेश्वर शंकर भवानी के साथ निवास)

भवानी शंकर साथ में, युग्म भाव दरसाय।
हाटकेश्वर स्थान है, वितल नाम कहाय।।

३. सुतल (बलि राजा का स्थान)

सुतल जगत प्रसिद्ध है, अधोलोक से जान।
शक्तिवान राजा बलि, का है यह स्थान।।

४. तलातल (मयासुर का राज्य)

अग्निमय स्तर कहत, तलातल भव्य स्थान।
मयासुर का राज्य था, सुख का न अवसान।।

५. महातल (क्रोध वश नामक सर्प समुदाय निवास)

महातल लोक का नाम है, अग्नि सम तेज जान।
क्रोधवश नाम सर्प के, परिजनों का यह स्थान।।

६. रसातल (दैत्य और दानव)

दैत्य रसातल में रहें, उत्पाती कहलात।
दानव इनके साथ रहें, बसे यहाँ दिन रात।।

७. पाताल (नागों के अधिपति का निवास)

प्राणाग्निमय लोक है, पाताल नाम कहाय।
नागों का यहाँ वास है, अधिपति ये कहलाय।।

सात जगह मौन रखें

भोजन, भजन, शौच में, मुख को राखो बन्द।
लघु शंका, स्नान, यजन, विषय सात प्रतिबंध।।

विवाह पूर्व ७ गुणों का विचार

खानदान, गृह सहायक, स्वभाव हो कैसा जान।
विद्या, धन, आयुष लखो शारीरिक स्थिति मान।।

७ अंक ज्योतिष

सात अंक का अधिष्ठाता, नेपचून ग्रह को मान।
चन्द्र भाँति वरुण ग्रह, दो सात सहयोगी जान।।
भाग्योदय होता सुजन, नदी समुद्र तट जान।
यात्रा, कविता, धर्मरुचि, मन की बात पहचान।।
रवि सोम शुभ होत हैं, करें यदि व्यापार।
उचित लाभ पा जात हैं, अर्थ तंत्र का सार।।
हल्का पीला मैरुन मिले, रंग सात पहचान।
क्रियात्मक दृष्टि बने, विकास योजना जान।।

सात लोक

१. भूः (वैज्ञानिक पृथ्वी मण्डल के नाम से पुकारते हैं)

भूलोक को सब जानते, पृथ्वीलोक समान।
प्रकृति की छवि छा रही, कण कण में विद्यमान।।

२. भुवः (चन्द्र मण्डल)

भू और सूर्य के मध्य में, ऊर्ध्व लोक कहलाय।
सिद्ध मुनि रहते यहाँ, भुवः लोक बतलाय।।

३. स्वः (सूर्यमण्डल)

सूर्य पार, ध्रुव पर्यन्त है, स्वर्गलोक विस्तार।
चौदह लाख योजन बड़ा, जाने सब संसार।।

४. मह (मानसिक राज्य पर अधिकार)

ध्रुव के पार जो लोक हे, महःलोक विद्यमान।
एक कोटि योजन क्षेत्र है, शास्त्र प्रमाण तू जान।।

५. जन: (इन्द्रिय सुख से विराग)

इससे ऊपर जन लोक है, दो कोटि योजन विस्तार।
ब्रह्मकुमार सनन्दनादि के, निर्मल हैं आचार॥

६. तप: (बुद्धि राज्य पर)

जन लोक से ऊँचा है, तपलोक चौगुना जान।
बिना देह बिन राज के, देव प्रफुल्लित जान॥

७. सत्यम् (प्रकृति राज्य पर अधिकार)

तपोलोक से छह गुना, सत्यलोक ऊँचा जान।
सिद्ध मुनि रहते यहाँ, जन्म मृत्यु ना जान॥

नोट :— १ से ३ तक लोक सबके आश्रय योग्य है।
४-७ तक यह साधारण मनुष्यों के योग्य नहीं।

सात स्वर संगीत

स से स के बीच में, ध्वनियाँ सात सुनात।
षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद॥

सूर्य के ७ रंगों से चिकित्सा (जल द्वारा)

१. काला रंग

बी०पी० कम को ठीक करे, तेज गरम चमकदार।
रंग चिकित्सा जो करे, स्नायु दुर्बल हो क्षार॥
गठिया, वातज रोग और संधि शोथ मिट जात।
साइटिका, लकवा, कटि पीड़ा, रक्ताल्पता दूर भगात॥

२. नारंगी रंग

दमा रोग तिल्ली बढ़े, आंत शिथिल यदि जान।
मूत्र विकार उपदंश में, नारंगी जल कर पान॥

३. पीला रंग

पानी सौम्य पाचक सुनो, अपच तनाव हों दूर।
वासनात्मक आवेश हटें, सद्बुद्धि मिले भरपूर॥
कब्ज अजीर्ण, कृमि रोम में, जिगर उदर गुदाभ्रंश।
तिल्ली वातकफ में, पियो पीत जल अंश॥

४. हरा रंग

कब्जी, त्वचा रोग में, अर्श में करे आराम।
सूर्य तप्त तैल बापरे, श्वेत बाल हों श्याम।।

५. आसमानी रंग

पेचिस, संग्रहणी और ज्वर, सिर में पीड़ा होय।
पथरी, श्वास के रोग और, मूल विकार दूर होय।।

६. नीला रंग

बाल न टूटे, न सेफद हों, मुख छाले मिट जाय।
शिर व गला ठीक करे, कीट नाशक कहलाय।।

७. बैंगनी

दिल दिमाग कमजोर हो, पहुँचाता आराम।
हैजा, अतिसार रोग में, जल करे औषधि काम।।

स्वर्ग के कारणभूत ७ गुण

तप, दान, और शान्ति है, मन, निग्रह कर ध्यान।
लज्जा, सीधापन सदा, प्राणिमात्र दयावान।।

७ 'वार' में जन्मे जातक का फल

१. रविवार

रवि को जन्म शिशु की, तेज प्रकृति होय।
प्रेमी, दानी, चतुर हो, पित्त का रोगी होय।।

२. सोमवार

सोमवार को जन्म ले, शान्त प्रकृति बुद्धिमान।
सुख दुःख को सम मानता, राजा चतुर धैर्यवान।।

३. मंगलवार

बौद्धिकता से दूर रहे, वीर पराक्रमी होय।
प्रकृति गर्म होवे शिशु, जन्म जो मंगल होय।।

४. बुधवार

शान्त मधुर विद्वान हो, सब कोई लोहा मान।
बौद्धिकता में दक्ष हो, कवि लेखक गुणवान।।

५. गुरुवार

प्रकृति शान्त बालक रहे, जन्म लेय गुरुवार
चतुर न्याय, नेतृत्व में, विद्या पाये अपार॥

६. शुक्रवार

शुक्र को जन्मे लाल जो, क्रोध चंचल होय।
वाणी में पटुता रहे, सम्मानित नर होय॥

७. शनिवार

साहसी और कामी बने, दृढ़ प्रतिज्ञ शिशु होय।
तेज प्रकृति का धनी हो, शनि दिन जन्मे जोय॥

७ मुक्ति के आधार

नौका मानव तन बना, केवट श्री भगवान।
रस्सा राम का नाम है, चढ़ निश्चित जप ध्यान॥
समुद्र विराट संसार है, जल है विषय तमाम।
गोद प्रभु की बैठ जा, ध्यान मग्न निष्काम॥

सृष्टि निर्माण में ब्रह्मा की सात सहायक शक्तियाँ

१. गायत्री — वेदों की माता हुई, गायत्री शुभ नाम।
वेद हुए निर्मित यहाँ, ज्ञान मिला अभिराम॥

२. सत्यवती — औषधियाँ पैदा हुई, जगत वनस्पति ज्ञान।
सत्यवती मां कृपा से, जीवन हुआ आसान॥

३. ज्ञानविद्या — सब शास्त्रों की खोज में, ज्ञान विद्या सहयोग।
ज्ञान मूल आधार है, प्रकट भये सब योग॥

४. लक्ष्मी — वस्त्राभूषण आदि सब, लक्ष्मी की सौगात।
धन बिन सब सूना रहे, कोई न पूछे बात॥

५. उमा — शिव की शक्ति अपार है, उमा कहें सब लोग।
शास्त्रों का प्रसार कर, दिया बड़ा सहयोग॥

६. वर्णिका — दुष्प्रवृत्तियाँ शान्त हों, अमन जगत में होय।
रक्षक माता वर्णिका, दैत्य दमन सुख होय॥

७. धर्मद्रवा एक नदी निर्वाण की, गंगा नाम प्रसिद्ध।
स्नान, पान जो भी करे, पाये सुख समृद्धि।।

सात मातृकाएँ (तन्त्रानुसार)

ब्राह्मी, माहेश्वरी, ऐन्द्री, वैष्णवी, कौमारि जान।
वाराही और चामुंडा को, सप्तमातृका मान।।

गंगा की सात धाराएँ

शिव शंकर की जटा से, निकली धाराएँ सात।
नलिनी, ह्लादिनी, पावनी, पूरव में बह जात।
चाक्षु, सीता, सिन्धु जो, पश्चिम बहती धार।
सातवीं भागीरथी कही, दक्षिण दिशा प्रसार।।



अष्टम अंक

माया ठगिनी ठग रही, दु:ख पाये संसार।
कबहु कम से कम रहे, कबहु बड़े अपार॥ १॥
लक्ष्मी देवी चंचला, झोली भरे उदार।
पैसे पैसे के बिना, तरसाती मझदार॥ २॥
अंक आठ माया भरा, सबहिं खिलावे खेल।
घटती बढ़ती ये रहे, न स्थिर न मेल॥ ३॥

आठ एक आठ, माया, आठ ही रही।
आठ दूनी सोलह, माया एक कम भयी॥
आठ तीया चौबीस, माया छह रह गयी।
आठ चौक बत्तीस, ये पाँच है गयी॥
आठ पंजे चालीस, माया चार है गई।
आठ छंग अड़तालीस, वारह है गई॥
आठ सत्ते छप्पन, माया एक कम भई।
आठ अठ्ठे चौसठ, ये तो दस रह गयी॥
आठ नेम बहत्तर, माया नौ हो गयी।
आठ दहाई अस्सी, आठ की आठ है गयी॥

8 × 1 = 8	8 + 0 = 8
8 × 2 = 16	1 + 6 = 7
8 × 3 = 24	2 + 4 = 6
8 × 4 = 32	3 + 2 = 5
8 × 5 = 40	4 + 0 = 4
8 × 6 = 48	4 + 8 = 12
8 × 7 = 56	5 + 6 = 11
8 × 8 = 64	6 + 4 = 10
8 × 9 = 72	7 + 2 = 9
8 × 10 = 80	8 + 0 = 8

सब का जोड़ भी 80
यानी 8 + 0 = 8

आठ सिद्धियाँ

अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा।
प्राप्तिः प्राकाम्यमिशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः।।

१. अणिमा (पूर्व)

अणु में सब व्याप्त है, सूक्ष्म रूप बन जात।
जो साधे सिद्धि मिले, वो अणिमा कहलात।।

२. महिमा (अग्निकोण)

छोटे से वृद्धि करे, महिमा उसकी जान।
दूजी सिद्धि नाम है, महत्त्वपूर्ण तू जान।।

३. गरिमा (दक्षिण)

गौरवमयी जीवन बने, साधक मुक्ति पाय।
वजनदार की बात ही, करती सदा सहाय।।

४. लघिमा (नैऋत्य कोण)

रूप सूक्ष्म दीखे नहीं, लघिमा मान सुजान।
ये परमाणु कहलात है, जाने सब विद्वान।।

५. प्राप्ति (पश्चिम)

जब भी जो कुछ चाहिए, सिद्ध पायें अनुकूल।
मानस में चिन्तन करें, प्राप्त होय सब मूल।।

६. प्राकाम्य (वायव्य कोण)

काम पूर्ति सिद्धि करे, उड़े जमीन तत्काल।
ऋषि वशिष्ठ की सिद्धि ने, विश्वामित्र कीन्ह निहाल।।

७. ईशित्व (उत्तर)

ईश भाव जिसमें भरा शासन करे समान।
साधे इन्द्रिय मन वही, पाता है भगवान।।

८. वशित्व

अष्ट सिद्धि जो साधते, पूर्व ब्रह्म कहलाय।
जग उनके वश में रहे, वशित्व भाव को पाय।।

अष्टांग प्रणाम

देव दर्शन की रीति है, अंग आठ प्रणिपात।
छाती, मस्तक, नेत्र, मन, वचन, जांघ, पैर, हाथ॥

अष्ट वसु

१. ध्रुववसु

ध्रुव वसु माथे वसें, मन में शान्ति होय।
उपलब्धि धनधान्य की, भक्त पायें सब कोय॥

२. अध्वर वसु

सर्वव्याप्त अध्वर वसु, नर शरीर के मांय।
शिव भक्त रक्षा करें, वाणी मधुर सुनाय॥

३. सोमवसु

दाहिने कान में वास है, दोष सकल मिट जात।
सोमवसु तव नाम है, जग सुन्दर कर जात॥

४. जलवसु

जलवसु नाम से जानते, बांये कान है वास।
परिवर्तन बुद्धि करे, पकड़ अनिष्ट कर आस॥

५. वायु वसु

दायीं भुजा विराजते, करें परिष्कृत गात।
जीवन में पवित्रता आऐ, वायु प्राण दे जात॥

६. अग्नि वसु

अग्निदेव वसु रूप है, करें तंत्र से मुक्त।
घातों से रक्षा करें, बांयी भुजा है युक्त॥

७. प्रत्यूष वसु

दायें हाथ के मध्य में, प्रत्यूष वसु स्थान।
चित्तवृत्तियाँ नष्ट हों, अनिष्ट करे पयान॥

८. प्रयास वसु

दायें हाथ कलाई में, प्रयास वसु कर वास।
आत्मबोध पाये मनुज, आनन्द की है आस॥

अष्टछाप कवि

सूर, कुंभन, परमानन्द और कृष्ण, गोविन्द स्वामी जान।
नंददास और चतुर्भुज बने, छीतर अष्टछाप पहचान।।
विट्ठदास गोस्वामी हैं, अष्ट कवि की पहचान।
कृष्ण चरित्र के काव्य पर, विशिष्ट किया संधान।।

कुम्भक प्राणायाम के ८ प्रकार

१. सहित — स्वाँस खींचने में लगे, जितना समय सुजान।
चार गुना कुम्भक करो, दुगना रेचक मान।।

२. सूर्यभेदी — दांये नथने श्वांस लो, बांये से दो निकाल।
शरीर की गर्मी बढ़े, सूर्यभेदी की चाल।।

३. उज्जायी — दोनों नथनों श्वाँस ले, पूरक विधि अपनाय।
रेचक दोनों नथनों से, उज्जायी कहलाय।।

४. शीतली — कागा चौंच सम जीभ कर, बाहर इसे निकाल.
मुख से श्वाँस खींचना, ग्रीष्म ऋतु करे निहाल।।

५. भस्त्रिका — पूरक रेचक तीव्रगति, जैसे धौंकनी होय।
दांये बाँये जोर से, पूरक रेचक होय।।
दुर्बल व्यक्ति न करे, वर्जित शास्त्र बतात।
सिर चकराये यदि, कष्ट सहा न जात।।

६. भ्रामरी — रेचफ क्रिया में वायु का, गूँज भ्रमर सम होय।
मन रमता है गूँज में, चित्त एकाग्र होय।।

७. मूर्छा — पद्मासन धारण करो, दृष्टि भौंहों के मध्य।
रोक मानसिक सोच को, वाह्य ज्ञान हो वध्य।।

८. केवली — पूरक रेचक की क्रिया, बिना ध्यान कर लेत।
वायु रुके अभ्यास कर, दिव्य दृष्टि आयुष नर पा लेत

आयुर्वेद चिकित्सा के आठ अंग

१. शल्य तन्त्र

शल्यकर्म की शस्त्र क्रिया, होती जो सामान्य।
शल्यतंत्र कहलावती, प्रथम अंग ले जान।।

२. शालाक्य तन्त्र

कंधे ऊपर आँख, नाक, कान, ओठ और दाँत।
शल्य क्रिया में विशेषता, शालाक्य तंत्र कहात॥

३. कायचिकित्सा तंत्र

सब शरीर के रोग की, करे चिकित्सा जान।
काय चिकित्सा तंत्र ही, करते विधि विधान॥

४. भूत विद्या तंत्र

भूत विद्या जो जानते, मानसिक कर उपचार।
बाधा मिटती तन्त्र से, शक्ति दिव्य संचार॥

५. कौमारभृत्य तंत्र

बाल रोग स्त्री सहित, करे दूर यह तंत्र।
रोग विशेष को मेटते, कहें कौमारभृत्य तंत्र॥

६. अगद तंत्र

सांप बिच्छु के डसन से, शरीर विषाक्त हो जाय।
साधन आयें काम जो, अगद तंत्र कहाय॥

७. रसायन तंत्र

टूट फूट तन होत जब, शक्ति क्षीण हो जात।
नूतन रस जीवित करे, रसायन तंत्र कहात॥

८. वाजीकरण

धातु हो कमजोर जब, रोग अनेक आ जाय।
पुष्टिकारक औषधि ही, वाजीकरण कहाय॥

आठ अंग (निघण्टु अनुसार)

औषधि के हैं आठ अंग, मूल कंद और पान।
फल-फूल तना बना, गोंद, छाल को मान॥

अष्टांग योग

(यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि)

१. यम

इन्द्रिय समूह संयत रहे, अनुशासित व्यवहार।

ब्रह्म ही सब कुछ है यहाँ, यम ही नाम आधार।।
(इसके पाँच भाग हैं, जो अध्याय- ५ में दिये हैं।)

२. नियम

काम नियम से जो करे, दूजा योग कहाय।।
नियमबद्ध सृष्टि चले, ये कानून कहलाय।।
प्रकृति की छाया तले, बसे सुखी संसार।
जो मनमानी करत हैं, पाते दु:ख अपार।।
पाँच तरह के नियम हैं, पालन करो सुजान।
शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान।।
(उक्त पाँच नियम के अंग है जिन्हें पंचम अंक में देखें।)

३. आसन

आसन से सिद्धि मिले, नाड़ी शुद्ध हो जात।
स्वास्थ्य बढ़े, आलस मिटे, क्षमता तन बढ़ जात।।

४. प्राणायाम

स्वाभाविक गति प्राण की, रोके चतुर सुजान।
विषयासक्ति और पाप से, हो निवृत्त ले ज्ञान।।
प्राण शक्ति बढ़ जात है, आयुष बढ़े प्रमाण।
श्वास गति को रोकना, प्राणायाम ही जान।।
दोष नष्ट होवे सहज, करता जो प्राणायाम।
सतत प्रक्रिया जो करे, तन मन हो आराम।।
आधिव्याधि व्यापे नहीं, तन होता है पुष्ट।
चक्र सभी चैतन्य हों, सुषुम्ना करते तुष्ट।।

५. प्रत्याहार

इन्द्रियाँ हों अन्तर्मुखी, त्याग बाह्य स्वरूप।
विषय वासना मुक्त हो, प्रत्याहार का रूप।।

६. धारणा

स्थूल शरीर मन सूक्ष्म हो, ध्येय हेतु लग जाय।
चित्त बाह्य विषय-मुक्त हो, धारणा कहलाय।।

७. ध्यान

ध्यान धारणा में लगे, एक चित्त हो जाय।
एकहि ध्यान प्रवाह हो, ध्यान वही कहलाय।।

८. समाधि

स्वर्ण निखरता क्षार से, कान्ति स्वयं पा जात।
मन मैल जब दूर हो, ध्यान इष्ट ह्वै जात।।
ध्यानाकार को छोड़ चित्त, ध्येय को जब पा जाय।
चर्म सीमा हो ध्यान की एकाग्र चित्त हो जाय।।

बौद्ध धर्म की साधना के आठ अंग

१. सत्यविश्वास

सत्य रूप विश्वास से, धारण करते योग।
प्रथम अंग साधक कहे, ये करने के योग।।

२. नम्र वचन

नम्र वचन जो बोलते, सबके प्रिय हो जात।
इसमें कुछ भी न लगे, संयम से सध जात।।

३. उच्च लक्ष्य

लक्ष्य सदा ऊँचा रखो, यही सयानो काम।
जीवन सुखमय होत है, मिले सदा आराम।।

४. सदाचरण

सदाचार बिन जीव को, न मिलता विश्राम।
सद् आचरण धारण करो, सबसे पहला काम।।

५. सद्वृत्ति

अच्छी करनी जो करे, अच्छे हों परिणाम।
स्वर्गमयी जीवन मिले, कोई न आवे काम।।

६. सद्गुणों में स्थिति

सद्गुण की स्थिति बने, दुर्गुण हों सब दूर।
प्रेम सदा मन ऊपजे, आवें, नाहिं गुरूर।।

७. बुद्धि का सदुपयोग

बुद्धि सबके पास है, ज्ञानी करें सदुपयोग।
दु:खी सदा रहते हैं वे, जो करते दुरुपयोग॥

८. सद्ध्यान

ईश ध्यान् सद्भाव से, प्रभु के दर्शन होत।
साधना के है आठ अंग, यही मूल हैं स्रोत॥

आठ प्रकार के विवाह

ब्राह्मो दैवस्तथैवार्ष प्राजापत्यस्तथाऽऽसुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव, पैशाचश्चाष्टमोऽधमः॥ (मनुस्मृति)

१. ब्राह्म — वस्त्राभूषण से सज्जित कर, कन्या करते दान।
ब्राह्म विवाह में वर चुने, शीलवान विद्वान॥

२. दैव — विवाह मण्डप में ऋत्विक, कर्त्ता यज्ञ सुजान।
दैव विवाह में अलंकृत, जो कन्या करता दान॥

३. आर्ष — यज्ञ कर्म हित वृषभ या, गौ, वर से लेवे दान।
आर्ष विवाह की रीति है, विधिवत् कन्या दान॥

४. प्राजापत्य — वरवधू दोऊ मिल करें, गृहस्थ धर्म निर्वाह।
वर पूजन, कन्यादान करें, प्राजापत्य कहाय॥

५. आसुर — स्वेच्छा से कन्या या, परिजनों को देता धनदान।
कन्या से होता विवाह, आसुर विवाह तू जान॥

६. गान्धर्व — कन्या-वर अनुराग से, बने यदि संयोग।
गान्धर्व विवाह कहें इसे, ऐसा ही था योग।

७. राक्षस — कन्या से बल पूर्वक, माता पिता को मार।
राक्षस विवाह कहावता, कोई न सुने गुहार॥

८. पैशाचिक — नींद मद्य उन्मत त्रिया, एकान्त करे सम्बंध।
पैशाचिक विवाह जानिए, दु:ख जीवन पर्यन्त॥

उक्त विवाह के परिणाम (प्रथम ४ शुभ)

ब्राह्म दैव, आर्ष प्रजापत्य, उत्तम विवाह कहात।
इनसे जो सन्तति मिले, सात्विक, शील कहलात॥

शतायु को प्राप्त होय, यशस्वी, धनवान।
सुन्दर कृत्यों से सदा, जग में पाये मान॥

शेष ४ अशुभ

गान्धर्व, आसुर, राक्षस, पैशाच निम्न कहात।
क्रूर आसुरी वृत्ति की, संतति नीच कहलात॥
वेद, धर्म न मानते, निन्दित सब स्थान।
ऐसे विवाह नकारिए, बनिए चतुर सुजान॥

आठ गुणों का मिलान (ज्योतिष)

वर्ण, वैश्य, नक्षत्रगुण, योनि ग्रहगुण मान।
गण, राशिगुण का मिलन, नाड़ी गुण पहचान॥

श्री विदुर जी द्वारा कथित आर्य जाति के आठ गुण

१. शान्त — शान्त भाव मन में रहे, सुखमय जीवन मान।
आर्य जाति का प्रथम गुण, शान्ति चतुर्दिक् मान॥

२. तितिक्षु — द्वन्द्वों में जो सहनशील, उन्हों तितिक्षु जान।
दिव्यता के भण्डार वे, करते जग उत्थान॥

३. दान्त — उदार भाव भरपूर है, सदा नियन्त्रित होय।
प्राकृतिक भौतिक जगत उनको सुखमय होय॥

४. सत्यवादी — सत्य वचन पालन करे, सतवादी बन जात।
बिना सत्य मिथ्या जगत, नाव पार नहीं जात॥

५. जितेन्द्रिय — इन्द्रियों को जो जीतता, जितेन्द्रिय कहलाय।
संयम से शक्ति मिले, स्वामी खुद बन जाय॥

६. दाता — दाता देता सभी को, समता के अनुदान।
मानव उसका अंश है, तू भी देना जान॥

७. दयालु — जो दयालु रहते सदा, करते पर उपकार।
उनका जीवन धन्य है, आर्य श्रेष्ठ संसार॥

८. नम्र — अष्टम गुण को नमन है, सब नर एक समान।
आर्य जाति विख्यात जग, सब करते सम्मान॥

आठ मुखी रुद्राक्ष

अष्ट मुखी रुद्राक्ष को, जानो गणेश की मूर्ति।
धन धान्य वृद्धि मिले, विजय, न्याय आपूर्ति।।

आठ लोकपाल

पूर्व दिशा के लोकपाल, इन्द्रदेव महाराज।
हाथी ऐरावत सोहे, अभ्रमु पत्नी साज।।
पूर्व दक्षिण अग्नि है, पुंडरीक कपिला वाम।
दक्षिण में यम साक्षी, वामन, पिंगला नाम।।
दक्षिण पश्चिम सूर्य हैं, कुमुद अनुपमा होय।
पश्चिम में वरुण देव हैं, अंजन-अंजनावती दोय।।
उत्तर पश्चिम वायु का, पुष्पदंत, शुभदंती स्थान।
उत्तर दिशा कुबेर की, सार्वभौम-अंजली मान।।
उत्तर पूर्व में सोम हैं, सुप्रतीक ताम्रकर्णी जान।
आठ लोक के पाल हैं, हाथी पत्नी महान।।

आठ दिशाएँ

पूर्व में रक्षा करे, इन्द्र वाराह भगवान।
अग्नि कोण पूजा करे, अग्नि, गरुड़ध्वज जान।।
दक्षिण यम, पद्मनाभ है, नैर्ऋत्य, मधूसूदन, दैत्य जान।
पश्चिम वरुण गोविन्द हैं, वायु, जनार्दन पहचान।।
उत्तर कुबेर, श्री पति, ईशान ऊर्जा, महेश्वर जान।
आठ दिशाएँ पूज्य हैं, देवों के दिव्य स्थान।।

अष्ट विनायक

श्री मोरेश्वर, वल्लालेश्वर, गणपति हैं दातार।
गजमुख, चिन्तामणि नाम है, करते दूर विकार।।
गिरिजात्मज शुभ नाम से, पूजे सब संसार।
विघ्नेश्वर विघ्न हरें, सिद्धिविनायक तार।।

अष्टगंध

आठ सुगन्धित द्रव्य ले, उस का घोल बनाय।
दिव्य यन्त्र पूजा करत, मंत्रादिक लिखवाय॥
चन्दन, अगर, देवदारु को, सिल पर घिसो सुजान।
केसर, गौरोचन, शैलज लो, जटामांसी कर्पूर जान॥

अष्टावक्र

कहोड़ नाम के विप्र थे, पत्नी सुजाता नाम।
बालक गर्भ से टोकता, शुद्ध मंत्र परिणाम॥
श्राप दिया शिशु को तभी, था वह प्रतिभावान।
पिता पराजित जब हुए, जल में डुबाया जान॥
जनक के दरबार में, पहुँचे चतुर सुजान।
राजा और पण्डितों को, दिया सत्य का ज्ञान॥
संगमा नामक नदी में, किया जाय स्नान।
अंग सभी सीधे भये, किया वहाँ जलपान॥

अष्टमूर्ति

क्षिति मूर्ति शिव को कहें, जलमूर्ति भव मान।
अग्नि मूर्ति रुद्र की, वायुमूर्ति उग्र जान॥
आकाश मूर्ति भीम सुन, पशुपति मूर्ति यजमान।
चन्द्र मूर्ति महादेव हैं, सूर्य मूर्ति है ईशान॥
अष्टमूर्ति के नाम से, कहें सभी विद्वान।
जानें जाकी भावना, फल देते भगवान॥

महानाद के भेद

१. ऊँगली कान संयोग से प्रदीप्त अग्नि होय।
धुनि सुनने में आत है, घोष कहावत सोय॥
२. घोष होने के बाद में, कांसा टूटे शब्द होय।
ध्वनि होती कठोर है, राव कहें सब कोय॥
३. बाँस ध्वनि को श्रवण कर, मन सबका हरषाय।
सौम्य वर्षा सम नाद है, स्वन सबको हुलसाय॥

४. भ्रमरी सम गुञ्जार हो, व्योम मध्य एक समान।
उद्गम स्थल शब्द का, शब्द नाद का मान॥

५. वाक्य प्रस्फुटित होत जब, जाने ध्वनि संसार।
वर्ण भेद ध्वनि निकलती स्फोट होय अपार॥

६. वीणा का स्वर गूंजता, पंचम तार आघात।
करे तरंगित देह मन, शब्द ध्वनि पा जात॥

७. सभी तार ध्वनि ऊपजे वीणा झंकृत होय।
नाद जो पैदा होत है, झंकार कहें सब कोय॥

८. बादल गरजें व्योम में, मंदिर घण्टा बाज।
दोनों सम ये नाद हो, ध्वंकृत ध्वनि का राज॥

आठ अंग गोदावरी के

ब्रह्म गिरि को सिर कहें, पुणतांबे मुख मान।
पैठण उपमा कंठ से, मंजरथ हृदय स्थान॥
शंख तीर्थ नाभि प्रमुख, मंथन कटि को जान।
जानु धर्मपुरी को कहें, चरण राजमहेन्द्री मान॥

गायत्री के आठ अंग

गायत्री के आठ अंग हैं, नाद, बिन्दु, संधि जात।
कला, ज्योति, रूप, रेखा, स्वर वर्णवृत्ति कहात॥

गायत्री के आठ छन्द

आर्षी, दैवी, आसुरी, प्राजापत्य को जान।
याजुषी और साम्नी कही, आर्ची ब्राह्मी पहचान॥

आठ प्रकार की लक्ष्मी के स्वरूप

१. आद्यलक्ष्मी

सर्व प्रथम रचना समय, उद्भव शक्ति महान।
आद्यशक्ति के नाम से, कहते शास्त्र पुराण॥

२. विद्या लक्ष्मी

ज्ञान शक्ति की स्त्रोत हुई, किया दूर अज्ञान।
विद्यालक्ष्मी की कृपा, अविद्या करे पयान।।

३. सौभाग्य लक्ष्मी

सौभाग्य लक्ष्मी देत है, अच्छा भाग्य सुजान।
जो इसकी पूजा करे, सौभाग्यशाली जान।।

४. अमृत लक्ष्मी

अमरकरत है जीव को, जो अमृत कर पान।
गायत्री अमृत कहें, अमृत लक्ष्मी जान।।

५. काम लक्ष्मी

कार्यों में सिद्धि मिले, सफल होत इंसान।
काम लक्ष्मी नाम शुभ, ना आये व्यवधान।।

६. सत्यलक्ष्मी

सत्यलक्ष्मी रूप है, जाने चतुर सुजान।
धारण जो करता इसे, वह हो ईश समान।।

७. भोग लक्ष्मी

भोग सकल जन भोगते, बिना भोग न पार।
भोग लक्ष्मी ध्यान कर, माँ का पायें प्यार।।

८. योग लक्ष्मी

जीवात्मा का मिलन जब, परमात्मा से होय।
योग लक्ष्मी को पूजिए, सिद्धि सुयोग होय।।

आठ के लिए मार्ग छोड़ना चाहिए

वाहन, वृद्ध और रोगीजन, भारवाहक नर होय।
राजा, स्नातक, नारी और दुल्हा सन्मुख होय।।

अष्टधातु

सोना चाँदी तांबा और, सीसा जस्ता होय।

रांगा, लोहा, पारा ये, अष्ट धातु शुभ होय।।

आठ भुजा का मकान

आठ भुजाओं से घिरा, भवन कोई बनवाय।
सुख शान्ति पाये सदा, कष्ट सभी मिट जाय।।

आठ शूल

वातज, पित्तज, कफज है, सन्निपातज, आभजमान।
वात, पित्त, श्लैष्मिक सुनो, वात-पैत्तिक पहचान।।

८ अंक ज्योतिष

आठ अंक का अधिष्ठाता, शनिग्रह मंदचर जान।
चित्त उदास, एकाकीपन, लक्ष्यपूर्ति धर ध्यान।।
जीवन हो संघर्ष मय, उद्यम करे जो महान।
शनि रवि, और सोम दिन, नये कार्य शुभ जान।।
माया का है अंक यह, उछल कूद नित होत।
वकील या इंजीनियर, वायु रोग पीड़ित होत।।
स्वामी भूरे रंग का, अंक आठ शुभ मान।
ध्यान संगठन में लगे, क्षमता जागृत जान।।



नवम अंक

नौ का अंक पूर्णांक है, घट, बढ़ कभी न होय।
जैसे ब्रह्म की शक्ति है, सदा एक सी होय॥
पढ़ो पहाड़ा नौ का, आये जोड़ सुजान।
पूर्णाङ्क नौ ही आयेगा, सांख्य योग सम जान॥

९ का पहाड़ा पढ़िए

नौ एकम नौ हुआ, योग नौ ही आत।
नौ के दुगने अठारह, एक आठ नौ पात॥
नौ की गुणा तीन से, अंक सत्ताईस आत।
दोनों को जोड़ो सुजन, दो सात नौ आत॥
नौ चौक छत्तीस भये, तीन और छह को जोड़।
योग नौ ही होत है, इससे मुख न मोड़॥
नौ को पाँच से गुणा कर, पैंतालीस ही होय।
चार पाँच को जोड़ ले, नौ का ही अंक होय॥
नौ छक्का चौवन कहें, पाँच चार नौ जान।
नौ सत्ते तिरेसठ हुए, छह और तीन पहचान॥
नौ अठ्ठे बहत्तर गिने, सात दो नौ कहलाय।
नौ नेम इक्यासी गिन, आठ एक नौ हो जाय।
नौ दहाई नब्बे होय, नौ और शून्य का योग।
पूर्णांक ही कहलावता, नौ ही कहे सब कोय॥

एक सौ आठ का योग भी, नौ का अंक कहाय।
माला की मणिकाएँ भी एक सौ आठ कहलाय॥
सम्मानित के नाम से, पूर्व लिखें एक सौ आठ।
उनसे भी जो हों बड़े, कहें श्री एक हजार आठ॥
योग एक हजार आठ का, नौ ही होत सुजान।
नौ का अंक पूर्णांक है, चमत्कार ही जान॥

9 × 1 = 9	9 + 0 = 9
9 × 2 = 18	1 + 8 = 9
9 × 3 = 27	2 + 7 = 9
9 × 4 = 36	3 + 6 = 9
9 × 5 = 45	4 + 5 = 9
9 × 6 = 54	5 + 4 = 9
9 × 7 = 63	6 + 3 = 9
9 × 8 = 72	7 + 2 = 9
9 × 9 = 81	8 + 1 = 9
9 × 10 = 90	9 + 0 = 9

सब का जोड़ भी 90
यानी 9 + 0 = 9

गायत्री मंत्र में नौ शब्द– यज्ञोपवीत में नौ धागे

१. तत्

पहला धागा तत् हमें, ईश्वर की याद दिलाता है।
वह ही दुनियाँ का मालिक है, यह सत्य तथ्य बतलाता है।

२. सुवितुः

जग को देता जो प्राण शक्ति, तेजस्वी है जिसका स्वरूप।
ऊर्जा प्रकाश फैलाता जो, दूजे धागे का मर्म अनूप।।

३. वरेण्यं

ऐसे तेजस का वरण करें, जो अन्तर्मन में ज्योति भरें।
तीजा धागा शिक्षा देता, अच्छाई से हम प्यार करें।।

४. भर्गो

तप से शुद्धि होती मन की, निर्मलता खुद आ जाती है।
होते हैं, पाप नष्ट इससे, धागे की सीख कहाती है।।

५. देवस्य

पंचम धागा है देवस्वरूप, परमात्मा ही साक्षी मानो।
जग सारा उस पर निर्भर है, इष्ट साक्ष्य उसको जानो।।

६. धीमहि

जो ध्यान ईश का करता है, एकाग्र चित्त हो जाता है।
अन्तःकरण में धारण करना, छठा सूत्र बतलाता है।।

७. धियो

बुद्धि जिसके है पास अरे, बलवान भी वही कहाता है।
कारज सारे सरते उसके, धियो सप्तम सूत्र कहलाता है।।

८. योन:

वो ही ईश्वर है सब जग का, सब कुछ हम को दे देता है।
यज्ञोपवीत का अष्टम सूत्र, नर को पवित्र कर देता है।।

९. प्रचोदयात्

सत् मारग पर चलना हमको, नवम सूत्र समझाता है।
इस महामंत्र को जप बंदे, धागों में मूर्ति दर्शाता है।।

९ प्रकार का विनियोग

१. ऊँकार ध्यान बीज है, ईश्वर का है नाम।
पहले दृष्टा ऋषि है, सुमिरे सुबह और शाम।

२. ब्रह्मा जी ने तप किया, भौतिकी सिद्धी पाय।
घोर तपस्या पुन: आध्यात्मिक शक्ति पाय।।

३. गायत्री आदि शक्ति है, महा भगवती तात।
प्रथम शक्ति कहते इसे, महाकाली विख्यात।

४. छंदो में गायत्री छंद, प्रथम छंद कहलाय।
गायन करते है सभी, काव्य सभी को भाय।।

५. साधक करते साधना, मिलती शक्ति अपार।
शक्ति नंदा नाम है, सुख ही है आधार।।

६. अन्दर जागे चेतना, बीज प्रस्फुटित होय।
रक्तदंतिका शक्ति है, अधिष्ठातृ कहे सब कोय।।

७. अग्नि तत्त्व का वास है, बिन सूना संसार।
जागृत हो तो प्राण है, नहीं तो सब बेकार।।

८. ऋग्वेद इसका रूप है, ये है शक्तिमान।
ज्ञान और विज्ञान करे, पाते सभी सुजान।।

९. कृपा महाकाली करे, प्रथम शक्ति की पुंज।
साधक को सिद्धि मिले, बने ज्योति की पुंज।।

नौ दुर्गा पूजन (नवरात्र पर्व में)

१. शैलपुत्री

नव दुर्गा में प्रथम है, शैलपुत्री का नाम।
जिसकी पूजा अर्चना, आती सबके काम॥ १॥
जन्म हिमालय गृह लिया, वाहन वृषभ बनाय।
दांये हाथ त्रिशूल है, बांये कमल खिलाय॥ २॥
दुर्गा दुर्ग विनाशिनी, भव सागर से तार।
धन ऐश्वर्य की दायिनी, महामोह को मार॥ ३॥
भक्ति, मुक्ति की शक्ति दो, जग का कर कल्याण।
जागृत मूलाधार हो, पाये पद निर्वाण॥ ४॥
श्रद्धा भक्ति से भगत, पूजे ध्याये मात।
सप्तशती के पाठ से, अन्तर्तम मिट जात॥ ५॥

२. ब्रह्मचारिणी

दूजी है ब्रह्मचारिणी, नवदुर्गा की शक्ति।
ब्रह्मचर्य व्रत धारती, ब्रह्मा तप अनुरक्ति॥ १॥
भगवती का तप वेद है, तत्त्व ज्ञान भण्डार।
ब्रह्मा निर्मित जो करे, पाये शक्ति अपार॥ २॥
दांये हाथ माला जपे, वाम कमण्डल सुहाय।
ज्योतिर्मय इस जगत की, दिव्य रूप दर्शाय॥ ३॥
ब्रह्मचारिणी मात तुम, कर नारी उद्धार।
स्वाधिष्ठान चक्र जगे, जन जन पाये प्यार॥ ४॥
ध्यान तुम्हारा प्रेम से, जो नित करता मात।
त्याग और वैराग्य से, संयम, तप पा जात॥ ५॥

३. चन्द्रघण्टा

तृतीय चन्द्रघण्टा कहें, चमक चन्द्र सी होय।
विग्रह का पूजन करे, निर्भय रहें सब कोय॥ १॥
शान्ति देती चन्द्र सम, मिलता मन आराम।
अर्ध चन्द्रघण्टा सदृश, मस्तक सोहे अभिराम॥ २॥

दायें हाथ खड्ग बाण हैं, गदा शूल और चक्र।
बायें शंख भुशुण्डि, परिघ, मस्तक धनु है वक्र॥ ३॥
सिंहवाहिनी शक्ति है, दुष्ट दलन अवतार।
भक्तों की झोली भरे, हरती दुःख अपार॥ ४॥
मातेश्वरी के ध्यान में, मग्न होय जो कोय।
मणिपुर चक्र जागता, कवच पढ़े जो कोय॥ ५॥

४. कूष्माण्डा

कूष्माण्डा के नाम से, रूप चतुर्थ दिखाय।
अण्ड में ब्रह्माण्ड है, यही जगत कहलाय॥ १॥
सृष्टि नहीं थी जिन दिनों, अंधकार था व्याप्त।
तेरे ईषत हास्य से, रचना हुई पर्याप्त॥ २॥
आदि स्वरूपा शक्तियाँ, अष्ट भुजा हैं विशाल।
कमल, कमण्डल, अरु कलश, गदा चक्र धनु माल॥ ३॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि दें, तप की हो आगार।
वाहन इनका सिंह है, अक्षय शक्ति अपार॥ ४॥
कूष्माण्डा बलि है प्रिय, नाम मातु विख्यात।
चक्र अनाहत जागता, तपें भक्त दिन-रात॥ ५॥

५. स्कंदमाता

स्कंदमाता नाम से, पंचम रूप कहात।
स्कन्दकुमार हैं गोद में, कार्तिकेय कहलात॥ १॥
चार भुजा धारण करें, दो में कमल खिलाय।
दांयी भुजा में पुत्र है, बांयी भुज वरदाय॥ २॥
शुभ्र वर्ण अद्‌भुत छवि, शोभा कही न जात।
दो दो वाहन हैं तेरे, सिंह मयूर दिखात॥ ३॥
निष्ठा से स्तुति करें, मन वांछित फल होत।
परम शान्ति पाये मनुज, विशुद्ध चक्र जागृत होत॥ ४॥
कमल का आसन है तेरा, पद्मासनी है नाम।
अपने भक्तो के सदा, करती पूरण काम॥ ५॥

६. कात्यायनी

कात्यायन ऋषि जन्म ले, जगत किया उद्धार।
षष्ठम कात्यायनी बनी, दुर्गा शक्ति अपार॥ १॥
कात्यायन ऋषि पूज कर, महिषासुर किया विनाश।
दुष्ट दमन की नीति का, शक्ति में रहता वास॥ २॥
स्वर्ण सदृश माँ वदन है, शोभा कही न जात।
अभय मुद्रा, वर मुद्रारूप, दांये हाथ दिखात॥ ३॥
बांये हाथ शोभित कमल, खड्ग करे संहार।
सिंहवाहिनी शक्ति को, पूजें सब संसार॥ ४॥
जो भी जन श्रद्धा सहित, माँ की ज्योति जगाय।
आज्ञाचक्र जागे तभी, रोग शोक भग जाय॥ ५॥

७. कालरात्रि

माँ दुर्गा की शक्ति है, काल रात्रि है नाम।
सप्तम दिन पूजें सभी, पूरण हों सब काम॥ १॥
काला रंग शरीर का, बिखरे बाल दिखात।
तीन नेत्र ब्रह्माण्ड सम, बिजली चमक लखात॥ २॥
माला श्वेत चमक रही, नाक है, ज्वाल समान।
गर्दभ वाहन मातु का, रूप भयंकर जान॥ ३॥
दांयी ओर के हाथ दो, वर-अभय रूप दर्शात।
बांये हाथ कांटा खड्ग, शुभकारी है मात॥ ४॥
कालरात्रि के ध्यान से, भानुचक्र जग जाय।
भूत पिशाच अरु अग्नि भय, दूर सभी भग जाय॥ ५॥

८. महागौरी

वृषभपीठ शोभित रहें, महागौरी तब नाम।
दिवस आठवें पूजते, मस्तक चन्द्र ललाम॥ १।
चार भुजा मणिकान्ति सम, शंख चक्र, धनु बाण।
भक्तों को सुख बाँटती, रखतीं उनकी आन॥ २॥
कानों मध्य कुंडल सोहें, शोभा कही न जाय।
हाथ त्रिशूल धारण करो, डमरु नाद सुनाय॥ ३॥

दो हाथों से बाँटती, ताप तीन मिट जात।
सुख, शान्ति धन धान्य से, हरती पातक मात॥४॥
सोमचक्र जागे सुगम, कवच पाठ का होय।
संकट से मुक्ति मिले, कामना पूरण होय॥५॥

९. सिद्धिदात्री

आदि शक्ति माँ भगवती, नवम रूप तू जान।
अष्ट सिद्धि नव निधि दें, चतुर्भुजा है महान॥१।
दांये चक्र ऊपर गदा, करे सृष्टि संचार।
वाम हाथ शोभित कमल, शंख ध्वनि उच्चार॥२॥
कुण्डल कानों बीच हैं, केयूर हार गलमाल।
परम शक्ति आनन्दमयी, भक्तहिं करे निहाल॥३॥
धर्म अर्थ देती सदा, मोह का करती नाश।
अज्ञानी बालक तेरे, काम का करो विनाश॥४॥
निर्वाण चक्र जाग्रत करें, स्तोत्र पढ़े जो कोय।
ऋद्धि सिद्धि पाते भगत, बाधा मिटे जो होय॥५॥

यज्ञोपवीत के नौ धागे, नौ गुण

१. विवेक

लो विवेक से काम तुम, जो चाहो कल्याण।
प्रथम सूत्र उपवीत का, देता है यह ज्ञान॥१॥

२. पवित्रता

जीवन पावन हो तेरा, ईश्वर करे निवास।
धागा दूजा नित तुम्हें, देता है विश्वास॥२॥

३. शान्ति

मन में शान्ति राखिए, जग अशान्ति के बीच।
तीजी लड़ यह कह रही, कमल खिले हैं कीच॥३॥

४. साहस

ब्रह्म फाँस में फँस गये, पवनपुत्र हनुमान।
मर्यादा का सूत्र है, चौथा साहस जान॥४॥

५. धैर्य स्थिरता

जो स्थिर रहते सदा, करते ऊँचे काम।
विजयी हों हर काम में, सुख हो आठो याम॥५॥

६. कर्त्तव्यनिष्ठा

कर्त्तव्यों का पालना, छठा सूत्र बतलात।
ईश्वर से यह कम नहीं, गायत्री जप तात॥६॥

७. बलिष्ठता

जिसमें शक्ति है नहीं, उनके बिगड़े काज।
सप्तम धागा कह रहा, बल ही पूजा जात॥७॥

८. समृद्धि

दीन हीन की दशा पर, करता नहीं विचार।
माया से माया मिले, अष्टम सूत्र सुधार॥८॥

९. सामूहिकता

एकाकी न रह सका, ईश्वर जग दरम्यान।
हो समूह पाया अमन, जनेऊ में नौ गुण जान॥९॥

नवग्रह

१. सूर्य

कमलासन कमल हाथों में, गल रत्नमाल सुहाय।
सप्त अश्वरथ, ताम्र रंग, स्वर्ण मुकुट झलकाय॥
परब्रह्म ओंकार है, सूर्यदेव भगवान।
गायत्री महामन्त्र है, सन्मति करे प्रदान॥
सूर्य ग्रह राशि सिंह है, सतोगुण क्षत्रिय मान।
रक्तवर्ण पुर्लिंग पिता, पित्तक्रूर तिक्त जान॥
जगत प्राण गायत्री जप, करो सूर्य का ध्यान।
आक काष्ठ से हवन कर, रक्तवस्त्र कर दान॥

२. चन्द्र

गौर वर्ण निज अश्व रथ, वस्त्राभूषण श्वेत।
स्वर्ण मुकुट गदा हाथ में, दूजे वर मुद्रा देत॥

सौलह कला से युक्त हो, श्रीकृष्ण लीन्ह अवतार।
शान्ति सोमव्रत से मिले, शिव स्तुति आधार॥
चन्द्र कर्क राशि रहे, वैश्य सतोगुणी मान।
क्षारीय रस, वातप्रकृतिमा, सौम्य श्वेत पहचान॥
मन का देर कहावता, तन मन करता शान्त।
पलाश से ग्रह शान्त हो, कभी न होना भ्रान्त॥

३. मंगल

चार भुजाधारी प्रभु, वर मुद्रा गदा त्रिशूल।
लाल रोम और वस्त्र हैं, स्वर्ण मुकुट मेषवाहनाकूल॥
मंगल ग्रह पूजा करत, भौमयंत्र ताम्र बनवाय।
निश्चित संख्या तप करे, ऋण से मुक्ति पाय॥
मंगल ग्रह मेष वृश्चिक राशि, तम क्षत्रिय बलवान।
लाल, पुरुष भाई क्रूर है, कटु, तिक्त पहचान॥
पित्त, प्रकृति मंगल करे, शिव पूजा हनुमान।
समिधा खैर से यजन कर, भौम मंत्र कर गान॥

४. बुध

गल माला सिर मुकुट है, पीतवस्त्र भुजा चार।
खड्ग, गदा और ढ़ाल है, वर मुद्रा सिंह सवार॥
बुध नाम बुद्धि प्रखर, चन्द्रवंश विस्तार।
विष्णु इनके देवता, ईशान कोण आधार॥
बुध ग्रह कन्या मिथुन है, वैश्य रजोगुणी जान।
हरा नपुंसक बन्धु सम, मिश्रभाव, त्रिधातु रस खान॥
पूज्य देव विष्णु सदा, करे जगत कल्याण।
अपामार्ग से यज्ञ कर, हरा वस्त्र कर दान॥

५. गुरु

कमलासन गुरुबृहस्पति, स्वर्ण मुकुट है विशाल।
दण्ड पात्र रुद्राक्ष वर, सोहे गल बिच भाल॥
देवगुरु पद शंकर दिया, दैत्य भागते जाय।
शरणागत जो आवता, सन्मार्ग उन्हें दिखाय॥

गुरु मीन, धनु राशि, ब्राह्मण सात्विक जान।
पीतरंग पुर्लिंग संतति, शुभ, कफ, मृदु पहचान।।
देवगुरु रक्षा करें, साधें भक्त के काज।
पीपल काष्ठ के यजन से, खुश हों गुरु महाराज।।

६. शुक्र

दैत्यों के गुरु श्वेत रंग, मुकुट शीश गल माल।
श्वेत कमल आसीन हैं, हाथ रुद्राक्ष की माल।।
आशीष मुद्रा दण्ड से, देव पराजित जान।
रस औषधि और मंत्र से, शिष्य दे जीवन दान।।
शुक्र तुला वृष राशि पर, वैश्य जाति रज मान।
श्वेत रंग स्त्रीलिंग है, वात अम्ल को जान।।
शुक्राचार्य शिव तप किया, पाया संजीवनी ज्ञान।
गूलर समिधा शांति कर, यज्ञ सफल तू जान।।

७. शनि

स्वर्ण मुकुट सिर सोहता, देह नीलमणि जान।
नीलवस्त्र गल माल है, धनु त्रिशूल वर बाण।।
कृष्णवर्ण रथ लौह का, वाहन महिष गीध जान।
मृत्युञ्जय का जाप कर, नीलम पहन सुजान।।
शनिग्रह राशि मकर कुंभ, शूद्र तामसी मान।
नीलवर्ण, क्लीव, भृत्य, क्रूर, कषाय वात श्लेश जान।।
ब्रह्मा यम हैं, देवता, दृष्टि सन्मुख न होय।
शमी समिधा से हो हवन, शनिग्रह शान्ति होय।।

८. राहु

मुखाकृति है डरावनी, सिर मुकुट गल माल।
काले वस्त्र ये पहनते, सिंहासन बना विशाल।।
वर मुद्रा त्रिशूल कर, ढाल और तलवार।
ब्रह्मा सभा विराजते, ग्रह है मण्डलाकार।।
कन्या कर्क के स्वामी है, अन्त्यज तम की खान।
धूम्र पुरुष क्रूर शत्रु हैं, रस कषाय वायु तान।।

राहु ग्रसे रवि चन्द्रमा, गगन अंधेरा छाय।
दूर्वाघास से यज्ञ कर, मृत्युञ्जय जपवाय॥

९. केतु

सिर मुकुट काले वस्त्र हैं, धूम्र विकृत मुख होय।
वर मुद्रा धारे गदा, गृद्ध सवारी होय॥
छायाग्रह जाने इसे, पड़े प्रभावित होय।
ध्वजा सदृश केतु लखें, दाद और खुजली दोय॥
मीन मकर स्वामी कहें, शूद्र तामसी जान।
केतु धूम्र पुर्लिंग क्रूर ग्रह, कषाय वायु व्यवधान॥
विष्णु चक्र सिर राहु का, धड़ केतु कहलाय।
कुशाओं से कर हवन, महामृत्युञ्जय जपाय॥

नवरात्र पर्व

चैत्र और आश्विन माह में, शुक्ल पक्ष में मान।
प्रथम नौ नौ दिन तक, नव दुर्गा व्रत ध्यान॥

नौ रत्न

१. माणिक्य

माणिक्य रत्न है प्रतिनिधि, सूर्य ग्रह तेजस जान।
हृदय रोग और शूल में, इसको अनुपम मान॥
पाण्डुरोग, मस्तक सबल, नेत्र दोष भग जात।
कहते हैं विद्वान सब, पहनकर रोग मिटात॥

२. मोती

मोती सीप में जन्मता, नेताचन्द्र का होय।
रक्त कमी पूरी करे, नेत्र ज्योतिबृद्धि होय॥
तनाव, उन्माद रक्तचाप अरु, दर्द छाती दरम्यान।
मोती जो धारण करे, पाये लाभ सुजान॥

३. मूंगा

मंगल ग्रह का प्रतीक है, मूंगा, रत्न महान।
नाड़ी दोष के रोग को, करता ठीक सुजान॥

हड्डी हों कमजोर यदि, सर दर्द, उन्माद।
वायु कफ, हृदय रोग को, करता है यह शाद॥

५. पन्ना

बुध रत्न पन्ना हरा, मस्तक करता शक्त।
सौम्य गुणौ से युक्त है, दमा रोग हो मुक्त॥
बोली जिनकी तोतली, नेत्र रोग मिट जात।
जो इसको धारण करें, याददास्त बढ़ जात॥

५. पुखराज

गुरुग्रह के कारज सरें, पहने जो पुखराज।
स्तन रोग विकलांगता, लिवर रोग का राज॥
स्थूल शरीर को कम करे, बबासीर मिट जात।
गुरु की कृपा बनी रहे, यह है सुख की बात॥

६. हीरा

हीरा जन्म अनमोल है, इसका रखना ध्यान।
शुक्र रत्न हीरा पहन, नील चमक तू जान॥
गल मुख रोग शमन कर, करे वीर्य को पुष्ट।
हीरा भस्म सबल हृदय, मिटे प्रमेह ब्रण कष्ट॥

७. नीलम

मोरकंठ रंग रूप का, नीलम बेंगनी जान।
क्रूर पाप ग्रह शमन करे, पहनो इसे सुजान॥
योनि रोग, क्षय कुष्ठ दिल, ज्वर दमा करे आराम।
नपुंसकता को दूर कर, बने निरोगी धाम॥

८. गोमेदक

राहु ग्रह का प्रतिनिधि, गोमेदक शुभ नाम।
गोमूत्र सम पीत लाल, वर्ण रंग है श्याम॥
बीजमंत्र का जप करे, यजन सूर्य अर्घ्यदान।
बबासीर पथरी उदररोग, संतति पाये सुजान॥

९. लहसुनिया

चमके बिल्ली नेत्र सम, सूत्र मणि कहलाय।
भूतप्रेत पागलपन गठिया, रोग अनेक नशाय॥

शत्रु घटे ग्रह शान्त हो, ध्वजा केतु लहराय।
अभिमंत्रित धारण करे, परम शान्ति सुख पाय।।

नव धातु

सोना, चाँदी, ताँबा है, जस्ता सीसा जान।
रांगा, और कांसा निरख, लोहा पीतल मान।।

नवग्रह यज्ञ हेतु नौ वृक्षों की समधाएँ

१. अर्क आक, आंकड़ा, मदार (व्याधिनाश)

अर्क वृक्ष के फूल की, माला शिवहि चढ़ाय।
श्वास कास के रोग में, कोपलें व्याधि नशाय।।
अतिसार, संग्रणी में, आँख, दाँत और कान।
हैजा, चर्म और अर्श में, मूल गणेश विद्यमान।।

२. पलाश (ढ़ाक किंशुवा) शान्ति हेतु

सुआ चौंच सम फूल शुभ, पीत रंग शान्ति प्रदाय।
चर्म रोग, दाह शमन हो, कुष्ठ दूर हो जाय।।
मूत्र रोग, रक्त शुद्धि में, उदररोग करे नाश।
वीर्य वृद्धि, कृमिनाश कर, देवें सबको आश।।

३. खैर (धन)

कत्था बनता खैर का, कल्याणक धनवान।
मेद कृमि कफनाश कर, ज्वर प्रमेह अवसान।।
शुक्र वृद्धि और कास ब्रण, खदिर काम में आय।
रक्तपित्त, बल-दंतदृढ, पाण्डुरोग मिट जाय।।

४. अपामार्ग (कार्य सिद्धि)

अपामार्ग विष नाशकर, कार्य सिद्धि मिल जाय।
उदर रोग अतिसार अरु, दमा कास मिट जाय।।
बबासीर कान दर्द में, दाँत करे दृढ़वान।
पुरुषजनेन्द्रिय ठीक हों, स्त्रीरोग अवसान।।

५. पीपल (संतान वृद्धि)

वृक्षों में पीपल प्रमुख, पूजे सब संसार।
प्राणवायु क्षय कुष्ठ में, वंध्यत्व दूर अपस्मार।।
रुधिर दोष, कफ व्रण हरे, वदगांठ भगंदर आराम।
धातु पुष्टि संतति मिले, सर्पविष हो नाकाम।।

६. उदूम्बर (गूलर) (संयम)

फल शीतल गर्भरक्षा करे, योनि रोग मिट जात।
सीना, गुर्दा, तिल्ली दर्द मिटे, मधुमेह दूर भगात।।
रक्त रोधक, ब्रण को भरे, धातु बढ़े विष नाश।
अस्थि जुड़े विष दूर हो, शुष्क कास का नाश।।

७. शमी (पापनाश)

रक्त पित्त नाशक शमी, कठिन तितीक्षा मान।
भस्म सहायक बालों मे, फलियां शक्ति महान।।
गर्भपात अवरोध में, फल आता है काम।
कुष्ठ अर्श, खांसी भ्रम, पहुँचाता आराम।।

८. दूर्वा (दीर्घायु)

दूर्वा दीर्घायु करत, पूजन आवे काम।
मूर्छा भूत ग्रह बाधा में, करती है आराम।।
दाह मिटे तृप्ति मिले, त्वचा रोग मिट जात।
अपस्मार उन्माद में, कास रक्त रुक जात।।

९. कुशा (साहस)

रक्तप्रदर और पीलिया, दमा आमातिसार।
हिचकी, पित्त और तृषा में, सर्व सिद्धि आधार।।
पवित्री पहन तर्पण करे, ग्रहण में शुद्धि होय।
कुशा के आसन बैठिए, कुशाग्र बुद्धि होय।।

साहित्य के नौ रस

१. श्रृंगार रस (रति)

इक दूजे को मोहित करने, सुन्दर सी सज्जा करते हैं।

बोली, मीठीं मुस्कान भरी, नयनों से लज्जा मरते हैं।।
स्त्री-पुरुष रति रस डूबे, आस्वादन योग्य कहाता है।
मन के संस्कार उभरते हैं, तो शृंगार रस कहलाता है।।

२. हास्य (हास भाव)

जो सहज चेष्टा न करते, बोली हँसने की कहते हैं।
पहनावा विकृत देखकर, जो भाव हास्य के जगते हैं।।
हँसने की कला स्वास्थ्यवर्धक, खुशियाँ सब तक पहुँचाती है।
हास्य रसी कविताएँ तो, टेंशन को दूर भगाती हैं।।

३. करुण (शोक भाव)

प्रिय विछोह या द्रव्य नाश, मन करुणा से भर जाता है।
दीन हीन कष्टों से पीडित, करुण भाव उपजाता है।।
जगते हैं भाव जब हृदय में, उद्दीपन भाव हो जाता है।
ईश्वर करुणा के रूप प्रकट, दुखियों के दुःख मिटाता है।।

४. रौद्र रस (क्रोध भाव)

जहाँ विवाद की हो स्थिति, झगड़ा बढ़ता ही जाता है।
अपराध असाधारण होते, तन मन दूषित हो जाता है।।
मन में उत्तेजना जगती है, अपमान सहा नहीं जाता है।
मन्यु मन में जग जाता है, वही रौद्र रस कहलाता है।।

५. वीर रस (उत्साह)

जब भी होती अनीति जग में, मन लड़ने में लग जाता है।
चाहे युद्ध क्षेत्र या कठिन, कार्य, उत्साह स्वयं जग जाता है।।
उल्लास पूर्ण अभिव्यक्ति से, वीर रस जागृत हो जाता है।
तब धैर्य, शौर्य की शक्ति का, स्वरूप सामने आता है।।

६. भयानक रस (भय)

जब जीव डरावनी वस्तु देख, खुद को कमजोर मानता है।
भूतों प्रेतों के किस्से सुन, निज रूप से भय दिखाता है।।
स्मरण मात्र से रूह कांपे, तब वह असाध्य हो जाता है।
भयानक रस तब पैदा होता, मानव तन घबरा जाता है।।

७. बीभत्स रस (ग्लानि/जुगुप्सा)

जो चीज अरुचिकर होती है, मन दूर सदा ही रहता है।
देखें तो घृणा पनपती है, सुनना भी दुष्कर होता है।।
बीभत्स लाश को गीध काग, कुत्ते शृंगाल नोंच खाते हैं।
ग्लानि से मन भर जाता है, बीभत्स रस पा जाते हैं।।

८. अद्भुत रस (आश्चर्य)

अचरज की घटना जो होती, संशय में नर पड़ जाता है।
शुक्राणु बिना नारी में जब, प्रजनन बालक हो जाता है।।
बालकपन कौतुक किया हनुगत रवि मुख पाया।
आश्चर्य भरी दुनिया सारी, अद्भुत रस कहाया।।

९. शान्त रस (निर्वेद)

जहाँ राग द्वेष नहीं होता है, सुख शान्ति वहाँ हो जाती है।
सुख दुःख को जो सम माने, निर्वेद मुक्ति हो जाती है।।
जो तत्त्व ज्ञान के ज्ञाता हैं, भव सागर से तर जाते हैं।
वैराग्य भाव पाकर अनन्त, रस शान्त स्वयं पा जाते हैं।।

नवपत्रिका

केला, अनार, धान और हल्दी पत्र ले साथ।
अशोक, मानकच्चू, जयन्ती, कच्चू बेल हों हाथ।।
नवदुर्गा की पूजा में, पल्लव चढ़े सुजान।
श्रद्धा भक्ति से भगत, माँ का करते ध्यान।।

नवधा भक्ति

श्रीराम जी ने शबरी को नवधा भक्ति का ज्ञान दिया

१. प्रथम भक्ति संतन्ह कर संगा।

संत संग रहना

संत सदा परहित जियें, करें सदा उपकार।
कष्ट सहज सहते स्वयं, सबसे करते प्यार।। १।।
जप, तप, त्याग निरत रहे, कसें तितीक्षा मान।
चिन्तन और स्वाध्याय से, पाते ज्ञान महान।। २।।

तत्त्वों के ज्ञाता मुनि, लोभ मोह से दूर।
ऐसों की संगत करो, पाप होहिं सब दूर॥ ३॥
प्रथम भक्ति जो भी करे, रक्षक हो भगवान।
संत स्वभाव से भक्त को, मिलता सच्चा ज्ञान॥ ४॥

२. दूसरि रति मम कथा प्रसंगा॥

कथा व्यथा को दूर कर, देती है आराम।
कथा प्रेरणा हेतु है, पढ़े सुबह अरु शाम॥ १॥
वेद व्यास विद्वान थे, लिखे अठारह पुराण।
कठिन संस्कृत ज्ञान को, किया बड़ा आसान॥ २॥
श्रेष्ठ प्रसंगों से भरा, ग्रन्थ सरस्वती पुत्र।
रोचक गाथा रच दई, पढ़े इन्हें सर्वत्र॥ ३॥
दूजी भक्ति प्रभु कथा, श्रद्धा से पढ़ पाय।
परम औषधि है कथा, जिह्वा जाप कराय॥ ४॥

३. गुरु पद पंकज सेवा, तीसरि भगति अमान।

गुरु ब्रह्मा और विष्णु है, गुरु महेश्वर मान।
गुरु साक्षी परब्रह्म है, करते नमन सुजान॥ १॥
अंधकार को दूर कर, देते सदा प्रकाश।
ऐसे गुरु की कृपा ही, आती मन को रास॥ २॥
ईश्वर को देखा नहीं, गुरु पाये श्री राम।
गायत्री की सिद्धियाँ, बाँटी आठो याम॥ ३॥
गुरु में भेद न मानिए, होती शक्ति अपार।
अहं हटे गुरुवर मिलें, चरण पूज्य हो पार॥ ४॥

४. चौथि भगति मन गुनगन, करइ कपट तजि गान॥

ईश्वर का गुणगान कर, मुक्त होय ये जीव।
उनके गुण धारण करो, पके भक्ति की नीव॥ १॥
ईश्वर एक विचारणा, स्फुरणा को मान।
अविनाशी वह नित्य है, प्रेममयी तू जान॥ २॥
सत, चित और आनन्द है, सत शिव सुन्दर जान।
भाव संवेदना से भरा, करता जग कल्याण॥ ३॥

आदर्शों का समुच्चय, सबसे बड़ा सुजान।
चौथी भक्ति गुण गाइए, कपट त्याग अभिमान॥ ४॥

५. मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा।
पंचम भजन सो वेद प्रकासा॥
भज अन के मिलते बने, भजन करो निष्काम।
भज सेवायाम भक्ति है, पहुँचाती है आराम॥ १॥
ईश प्रेम के गीत तू, नित प्रति भज तज काम।
कारज तेरे सिद्ध हों, प्रभु का नाम ललाम॥ २॥
मन अशान्त हो जब तेरा, भज ले इष्ट सुजान।
वह ही पार लगावता, जब मुश्किल में हो जान॥ ३॥
भजन भाव में डूबता, दृढ़ विश्वासी मान।
वेद ईश की वाणी है, भक्ति पाँचवीं जान॥ ५॥

६. छठ दम शील विरति बहु करमा।
निरत निरन्तर सज्जन धरमा॥
इन्द्रिय निग्रह जो करे, शक्ति वान बन जा।
शालीनता बिन मोल है, चरित्र उच्च हो जाय॥ १॥
नैतिक जीवन मूल है, राष्ट्र करे उत्थान।
ऐसी शिक्षा ही करे, लोगों में पहचान॥ २॥
एक साधना ही बने, जीवन लक्ष्य महान।
कार्य बने सिद्धि मिले, निशि दिन हो उत्थान॥ ३॥
सज्जन जैसा आचरण, धर्म यही सुखधाम।
छठी भगति धारण करे, यही सयानो काम॥ ४॥

७. सातवैं सम मोहि मय जग देखा।
मोते संत अधिक करि लेखा॥
जग में रमता राम है, राम जगत मे जान।
समता की दृष्टि लखे, वह ही चतुर सुजान॥ १॥
ऊँच नीच के भाव को, त्यागो निराभिमान।
ईश्वर तो सम रूप है, सूकर गाय समान॥ २॥
ऋषि मनीषी जगत के, ईश्वर की संतान।

हिलमिल सब से चालिए, मूल मंत्र ये जान॥ ३॥
सप्तम भगति कर मना, करें राम कल्याण।
संत सभी के पूज्य हैं, प्रभु से ज्यादा मान॥ ४॥

८. आठवें, जथा लाभ संतोषा।
सपनेहुँ नहि देखें पर दोषा॥

सब कुछ प्रभु का दिया है, उस की किरपा मान।
संतोषी होता सुखी, पाये पद निर्वाण॥
मनीराम समझाइ ले, नित नव खेल खिलाय।
आत्मज्ञान संतोष बिन, कोऊ न मानव पाय॥
भौतिक युग में दु:खी हैं, साधन बढ़ते जात।
नहीं साधना कर सकें, बड़े बहुत उत्पात॥ ३॥
निज नयनों में तिल तुम्हें, जानहिं तोऊ न लखात।
पर दोषों को देख मत, आठवीं शिक्षा तात॥ ४॥

९. नवम सरल सब सन छल हीना।
मम भरोस हियैं हरष न दीना॥

जीवन जीना है कला, जाने सब संसार।
सादा जीवन जो जिए, होवें उच्च विचार॥ १॥
सरल मार्ग परचलिए, राज मार्ग कहलाय।
पगडंडी में फँस गए, लक्ष्य कठिन पहुँचाय॥ २॥
कपट रहित व्यवहार हो, सभी मित्र बन जाय।
हृदय भरोसा राम का, काम सुगम हो जाय॥ ३॥
हर स्थिति में दृढ़ रहे, साधक वही कहाय।
विषादों से मुक्ति मिले, नौवीं भगति कहाय॥ ४॥

श्रीमद्भागवत पुराण में नवधा भक्ति

श्रवणं कीर्तनं विष्णो: स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं, सख्यमात्मनिवेदनम्॥ ७/५/७३

१. श्रवण भक्ति (परोक्ष राजा परीक्षित)

कथा कहानी ईश की, नाम रूप गुणगान।

सुने जो श्रद्धा भक्ति से, जानो धन्य सुजान॥ १॥
मधुर गीत के भाव से, तन मन सब बिसराय।
श्रवण भक्ति से भक्तजन, गद्गद खुद को पाय॥ २॥
सत्पुरुषों के ग्रन्थ का, श्रवण करे धरि ध्यान।
जीवन में परिष्कार हो, दुर्गुण हों अवसान॥ ३॥

२. कीर्तन भक्ति (नारद, मीरा, नरसी, चैतन्य, नानक आदि)

नाम कीर्तन जो करें, रटता बारम्बार।
अन्तर्मन से निकलती, ध्वनियाँ करें प्रहार॥ १॥
बार बार के जपन से, शब्द अमर हो जात।
लौटे फिर आकाश से, दिव्यरूप बन जात॥ २॥
तोते जैसी रटन कर, तन हो सुवा समान।
कीर्तन भक्ति दूजी कही, भक्त होय भगवान॥ ३॥

३. स्मरण भक्ति (ध्रुव)

स्मरण भक्ति में लीन हो, सुधबुध सब बिखराय।
हरक्षण हरपल ध्यान में, ईश्वर ही दरसाय॥ १॥
स्तुति में करुणा जगे, प्रभु को अपना मान।
विषय त्याग वैराग्य से, सुख को सेवक जान॥ २॥
ईश्वर सुमिरे भक्त को, भक्त भजे भगवान।
निज भक्तों की लाज का, रखते हैं वे ध्यान॥ ३॥

४. पाद सेवन भक्ति (केवट, शबरी, भरत जी)

चरण कमल रज राम की, शिला अहिल्या होय।
चरणपादुका सीस धरि, पूजा उनकी होय॥ १।
प्रभु चरनन पूजा करे, भक्त पाये मन शान्ति।
चरणामृत सेवन कर, दूर होय सब भ्रान्ति॥ २॥
गुरु के चरण पूजत ही, पाप, ताप मिट जात।
पाद सेवन की भक्ति है, शिष्य शक्ति पा जात॥ ३॥

५. अर्चन भक्ति (गजेन्द्र, सुदामा, शबरी आदि)

अर्चन पूजन जो करे, प्रभु के पद को पाय।
श्रद्धा निष्ठा वृद्धि हो, भक्ति रस पा जाय॥ १॥

पूजन सामग्री सहित, इष्ट का अर्चन होय।
एक चित्त प्रभु को सुमिर, मन आनंदित होय॥ २॥
प्रेम विह्वल पूजा करे, अक्षत तिलक लगाय।
पुष्प कलावा जल सभी, पंचोपचार कहाय॥ ३॥

६. वंदन भक्ति- अक्रूर जी

वंदन प्रभु के चरण में, शत शत हो शत बार।
शरण पड़े की लाज रख, आया तेरे द्वार॥ १॥
ध्यान योग्य प्रभु ही सदा, वो ही पालन हार।
श्रद्धा से वंदन करूँ, दृश्य विराट अपार॥ २॥
श्रीकृष्ण की वन्दना, करता सब संसार।
वन्दन पंचम भक्ति है, जीव होय भवपार॥ ३॥

७. दास्य भक्ति (अंगद, हनुमान, लखन)

दास्य भाव मन में जगे, प्रभु भक्ति मिल जाय।
बिना कृपा के दास को, आगे कौन बढ़ाय॥ १॥
दास को न कुछ सोचना, करना स्वामी काम।
देवे सो ले लीजिए, दमड़ी लगे न छदाम॥ २॥
तन मन धन जो देत हैं, सर्व समर्पित होत।
दास्य भक्ति को पात है, वही प्रेरणा स्रोत॥ ३॥

८. सख्य भक्ति (सुग्रीव, सुदामा, उद्धव, अर्जुन, श्रीदामादि)

प्रभु प्रभाव से पूर्ण हो, महिमा और गुणगान।
तुम ही सखा हमारे हो, कैसे करूँ बखान॥ १॥
स्वामी सखा में भेद ना, सही समर्पण जान।
सखा भूलता यदि कहीं, स्वामी देता ज्ञान॥ २॥
मित्र संदेशा पाइके, मित्र सुखी हो जाय।
सख्य प्रेम उपजै हदै, प्रेमाश्रु बहि जाय॥ ३॥

९. आत्मनिवेदन (गोपियाँ, बलि)

दुःख-सुख, हानि-लाभ में, धैर्य धरे इंसान।
मान और अपमान को, माने एक समान॥ १॥

एक भरोसा राम का, निर्भय रहे प्रसन्न।
प्रभु समर्पित कर रहे, आत्मनिवेदन मन॥ २॥
भक्ति न छूटे हे प्रभो, मुक्ति की न आस।
यही प्रार्थना कर रहा, जब तक सांस मे सांस॥ ३॥

शरीर के नौ द्वार

नौ द्वारे का पींजरा, तामें पक्षी पौंन।
रहने में अचरज बड़ा गये अचम्भा कौन॥

दरवाजे नव महल के, आत्मा करे निवास।
जब तक साँस में सांस है, तब तक ही है आस॥
तब तक ही है आस, न जाने कब रुक जाये।
पंच तत्त्व का पुतला, अब न खेल खिलाए॥
कहें फूल मुरझाय, जीव अग्नि में साजे।
कैसे करें बखान, खुले है नव दरवाजे॥

नेत्र द्वय (२)

सूरज चन्दा की तरह, नयना दोऊ विशाल।
दोऊ प्रकाश फैलावते, अखियाँ करे निहाल॥ १॥
जैसी जा की दृष्टि हो, वैसो ही परे लखात।
जैसो चश्मा पहन लो, वैसो ही जगत दिखात॥ २॥
दो दरवाजे निकलती, आत्मा बड़ी बलवान।
दोनों आखों छिद्र से, मृत्यु क्षण क़रे पयान॥ ३॥

नाक - २

सदा नाक ऊँची रहे, ये सम्मानित बात।
कटी नाक नकटा हुआ, कोई न पूँछे बात॥ १॥
सूर्यचन्द्र नाड़ी द्वय, चले निरन्तर धाय।
वाम स्वर पानी पिये, दायें भोजन खाय॥ २॥
आत्मा गति जाने नहीं, कब कहाँ भग जाय।
नाक द्वार दो पाइके, निकले जीव नशाय॥ ३॥

मुख- १

एक द्वार मुख को कहें, सारे चतुर सुजान।
मुख मण्डल में व्याप रहे, राम कृष्ण भगवान॥ १॥
विराट रूप की छटा लख, कौशल्या, यशुमति दंग।
काक भुशुण्डि अर्जुन लखे, रूप विराट सरभंग॥ २॥
मुख अग्नि का रूप है, शुद्धाहार मधु भाष।
न जाने कब बंद हो, मुख से अन्तिम सांस॥ ३॥

कान- २

दो कानों के छेद हैं, जैसी खिड़की होय।
श्रवण करें प्रभु की कथा, तन मन, गद्गद होय॥ १॥
कान मूंद ले हे सुजन, निन्दा चुगली होय।
व्यर्थ बात सुनि न मना, मनोविकार न होय॥ २॥
अचरज सबसे है बड़ा, प्राण कान से जाय।
पता किसी को न चले, मृतक शरीर रह जाय॥ ३॥

गुप्तेन्द्रियाँ- २

गुप्त बात रहती सदा, नैतिक मानें लोग।
गोपनीय कुछ तत्त्व हैं, अद्‌भुत इनका योग॥ १॥
दोनों इन्द्रिय के मिले, संतति पाये सुजान।
संयम से जो काम लें, उपजे शक्ति महान॥ २॥
जीव अंत में जात है, इन्द्रिय या मलद्वार।
वैज्ञानिक की समझ से, रूप, रंग आकार॥ ३॥

नौ मुखी रुद्राक्ष

नाथ सम्प्रदाय पूज्य है, ब्रह्म रूप ही जान।
भैरव स्वरूप कहावता, शिव का धरते ध्यान॥
नवग्रह, दुर्गा रूप में, शक्ति करे प्रदान।
धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य और मिले प्रतिष्ठा मान॥

नौ कन्याएँ पूज्य होती हैं

नौ प्रकार की कन्या, पूजा योग्य कहलाय।
गंध पुष्प भक्ष्य, भोज्य, वस्त्राभूषण चढ़ाय।।

१. कुमारी

आयु हो दो वर्ष की, पूजा योग्य कहाय।
प्रथम कुमारी नाम से, नवदुर्गा कहलाय।। १।।
सब देवों के रूप में, पूजा वंदन होय।
जगमाता को नमन है मैं पूजत हूँ तोय।। २।।

२. त्रिमूर्ति

तीन पुरों की वासिनी, ज्ञानरूप आधार।
तीन वर्ग, आयु त्रय, पूजे सब संसार।। १।।
तीन लोक में बस रही, आनन्दित सब होय।
त्रिमूर्ति देवी बनी, मैं पूजत हूँ तोय।। २।।

३. कल्याणी

चार वर्ष की आयु में, कल्याणी कहलाय।
कलायुक्त जीवन तेरा, करुणा हृदय समाय।। १।।
करुणा में शिव वास है, भक्ति करे सब कोय।
माँ कल्याणी दिव्य हो, मैं पूजत हूँ तोय।। २।।

४. रोहिणी

रोहिणी शक्ति का रूप है, पंच वर्षीय कहाय।
अणिमा गुण आधार है, प्रथम र कार ही आय।। १।।
माँ लक्ष्मी के रूप में, अनन्त शक्ति होय।
रोहिणी कन्या को सतत, मैं पूजत हूँ तोय।। २।।

५. कालिका

काल चक्र की शक्ति हो, कला रूप में व्याप्त।
करुणा से पूरित हृदय, मिलप्यार पर्याप्त।। १।।
माँ करती कल्याण तुम, भक्ति करे जो कोय।
कालका षट आयुषी, मैं पूजत हूँ तोय।। २।।

६. चण्डिका

सात वर्ष की देवी को, न्यौते सब संसार।
कन्या रूप में देखिए, वहे प्यार की धार॥ १॥
चण्ड मुण्ड को मारती, माया शौर्य होय।
चण्डिका तुम महादेवी, मैं पूजत हूँ तोय॥ २॥

७. शाम्भवी

शिव की शक्ति हो तुम्हीं, करो सदा कल्याण।
जन जन में आनन्द भर, दो शान्ति अनुदान॥ १॥
अष्ट वर्षीय शक्ति में, पावन तेजस होय।
सब भूतों में रम रही, मैं पूजत हूँ तोय॥ २॥

८. दुर्गा

दुर्गा माँ का ध्यान धर, जो चाहे कल्याण।
शक्ति अपरिमित मातु में, संगठन की पहचान॥ १॥
दुर्गम कारज सारती, भक्त भजे नित तोय।
दुष्ट डरें तव रूप से, मैं पूजत हूँ तोय॥ २॥

९. सुभद्रा

दस वर्षीय मा सुभद्रा, स्वर्ण कान्तिमय जान।
सुन्दर रूप तेजस भरा, प्रतिबिम्बित जग मान॥ १॥
सौभाग्य देती हो सदा, सुख कण कण में होय।
सुभद्रा देवी नाम है, मैं पूजत हूँ तोय॥ २॥

नव शक्तियाँ

सूर्य बिम्ब सम प्रभा है, माया अपरम्पार।
जया वराहपीठ पर, सूक्ष्मा का चमत्कार॥ १॥
विशुद्ध और नंदिनी, शक्ति की भण्डार।
सुप्रभा, विजया, पूज्य हैं, सर्वसिद्धिदा प्यार॥ २॥

आयुर्वेद में नौ विष

आयुर्वेद के ग्रन्थ में, नव विष पाये जात।
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जात कहात॥ १॥

ब्राह्मण विष श्वेत रंग, काम रसायन आय।
क्षत्रिय रक्तवर्ण है, तन को पुष्ट बनाय॥ २॥
वैश्य जाति पीला वदन, कुष्ठ रोग मिट जात।
शूद्र विष काला वर्ण, शरीर नष्ट कर जात॥ ३॥
शोधन करके खाय जो रोग मुक्त हो जाय।
विष ही विष को मारता, प्राण शक्ति आ जाय॥ ४॥

१. वत्सनाभ

बछड़े की नाभि सदृश, पत्र संभालू समान।
दूजा वृक्ष न पनपता, वहाँ वत्सनाभ तू जान॥
आसाम और नेपाल में, शिखर हिमालय स्थान।
दो गज लम्बा नील क्षुप, कंदफूल फल जान॥

२. हारिद्र

हारिद्र भयानक जानिए, गांठ जमीं में होय।
हल्दी सम जड होत है, नाम हारिद्र होय॥

३. सक्तुक

तीसरा बिष सक्तुक कहा, चूर्ण ग़ांठ में होय।
सक्तुक वही कहावता, अधिक जान न कोय॥

४. प्रदीपन

कान्ति आग समान है, रंग लाल तू जान।
तीव्र दाह पैदा करे, प्रदीपन विष को मान॥

५. सौराष्ट्रिक

सौराष्ट्रक गुजरात में, पैदा इसको जान।
सौराष्ट्रिक विष नाम है, कहते हैं विद्वान॥

६. शृंगिक

गाय सींग में बांध दो, दुग्ध लाल हो जात।
द्रव्य तत्त्वज्ञाता इसे, शृंगिक विष बतलात॥ १॥
ऊँचे शिखर कश्मीर में, पौधा चार फिट होय।
करतलाकरा पत्ते सोहें, फल कंगूर सम होय॥ २॥

फूल नील और श्वेत हैं, मूल शुद्ध हो जाय।
पीड़ा शोथ, कफ नाश हो, वातज्वर भग जाय।। ३।।

७. कालकूट

पृथुमाली मारा गया, बना पीतल सम वृक्ष
उस पर आया गोंद जो, कालकूट कहे दक्ष।।
शृंगवेर, कोंकण, मलय, अहिक्षेत्र में होय।
देव असुर के युद्ध में, रुधिर से पैदा होय।।

८. हलाहल

ताल पत्र सम पत्ते हो, अंगूर गुच्छ फल जान।
तीव्र विष की बयार से, पास वृक्ष जल जान।।
हलाहल समझो इसे, दक्षिणी समुद्र स्थान।
किष्किंधा हिमालय में, कोंकण उत्पत्ति आन।।

९. ब्रह्मपुत्र

मलय पर्वत पे होत है, ब्रह्मपुत्र विष जान।
कपिल वर्ण इसका सुनो, सार कपिल ही मान।।

नौ धान्यो के नौ ग्रह

गेहूँ रवि, चावल चन्द्र ग्रह, अरहर मंगल जान।
जौ के बुध, गुरु चना, मूंग शुक्र पहचान।।
काले तिल शनि दान कर, उड़द राहु ग्रह हेतु।
कंगू केतु ग्रह को चढ़ें, नव धान्य है सेतु।।

नौ नाद (शिव उमा संहिता)

घोष कांचन, शृंग और घण्टा वीणा नाद।
दुंदुभि, वेणु शंख है, नवम मेघ का नाद।।

ब्राह्मण के नौ गुण (मानव मात्र)

१. शुचि

शुचिता जीवन में बसे, मानव होरे धन्य।
कृपा ईश की जब मिले, पाये भक्ति अनन्य।।

२. तपस्वी

तप की पूंजी के बिना, शक्ति कैसे आय।
बिना शक्ति के बावरे, जीवन विरथा जाय।।

३. संतुष्ट

संतुष्टि के बिन यहाँ, जीव सुखी न होय।
भटके जहाँ तहाँ यह शान्ति न पाये कोय।।

४. सत्यवक्ता

सत पाले कोई सूरमा, सत बोले विद्वान।
सत के बिन जीवन नहीं, नित सत का कर पान।।

५. शीलवान

शील बिना जीवन विफल, मन में करो विचार।
शीलवान नैतिक बनें, पाये शक्ति अपार।।

६. दृढ़ प्रतिज्ञ

संकल्पों को साधते, दृढ़ प्रतिज्ञ वे लोग।
कर्म सभी पूरण करे, यही सफलता योग।।

७. दाता

दाता हो भगवान सम, सबका पालन हार।
वर्षा हो अनुदान की, खुशियाँ होत अपार।।

८. धर्मात्मा

धर्म राह पर जो चले, रक्षक हों भगवान।
श्रेष्ठ कर्म को जो करे, धर्मात्मा तू जान।।

९. दयालु

दया भाव मन राखिए, याद का उल्टा होय।
दीन हीन की दशा पर, द्रवित दयालु होय।।

जम्बूद्वीप में ९ नौ वर्ष हैं (नव खण्ड)

१. इलावृत वर्ष

जम्बूद्वीप नाभि वसे, चौकोर रूप कहाय।
वहीं सुमेरु पास है, लाख योजन नभ माय।।

बत्तीस योजन चोटी है, सोलह हजार योजन मान।
तीन पर्वत है उत्तरदिशा, नील, श्वेत शृंगवान।।

२. रम्यक वर्ष

रम्यक वर्ष के नाम से द्वितीय विभाग तू जान।
स्वर्णमयी कान्ति दिखे, यह इसकी पहचान।।

३. कुरु वर्ष

कुरुवर्ष शुभ नाम है, तीजा विभाग ही जान।
ये दोऊ सीमित रहें, नील श्वेत शृंगवान।।
फैला दीखे अग्र से, क्षार समुद्र रेख जान।
दो हजार योजन चौड़ा है, नदी समुद्रों की खान।।

४. हरिवर्ष	तीन वर्षों के विभाग, सही वर्णन ही जान।
५. किंपुरुष	निषध हिमालय, हेमकूठ, इनकी सीमा मान।
६. भारतवर्ष	इलावृत पश्चिम भाग में, माल्यवान पर्वत नाम।
	पूर्व में गंधमादन है, दो हजार योजन आयाम।।
७. केतु माल	दोनों वर्षो का क्षेत्रफल, दो पर्वत सम जान।
८. भद्राश्व	एक नाम माल्यवान, दूजा गंधमादन मान।।
९. हिरण्मय	इलावृत के दक्षिण में, निषध हेमकूट पहाड़।
	हिमालय की विशालता , योजन दस हजार।।

इन नौ विभागों के उपास्य नौ हैं

१. श्री शंकर (इलावृत वर्ष)

इलावृत वर्ष विराजे हरि, शंकर भवानी साथ।
दूजा पुरुष न दीखता, गया तो नारी बन जात।।
भूत भावन स्वरूप है, बंधन करते मुक्त।
तीन विकार से मुक्त हो, उत्पत्ति प्रलय से युक्त।।

२. हयग्रीव (भद्राश्व)

भद्राश्व वर्ष में वासुदेव, हयग्रीव मूर्ति पुजाय।
प्रलय काल तम प्रधान था, दैत्यों ने वेद चुराय।।

ब्रह्मा कीन्हीं प्रार्थना, रसातल से लाए निकाल।
भद्राश्व स्तुति करत, पाप मुक्ति तत्काल।।

३. नृसिंह (हरिवर्ष)

नृसिंह रूप में वास करें, नष्ट पाप हो जाय।
दानव श्रेष्ठ प्रह्लादजी, दर्शन हित प्रकटाय।।
राग द्वेष तृष्णा अरु, मन के सब संताप।
जन्म मृत्यु के चक्र को, काटें हरते पाप।।

४. काम देव (केतुमाल वर्ष)

कामदेव रूप हरि हैं यहाँ, केतुमाल वर्ष विश्राम।
लक्ष्मी अधीश्वरी यहाँ की, जपें उन्हीं का नाम।।
इन्द्रियों के स्वामी प्रभु, हृदय में करे निवास।
सर्व समर्थ मायापति, अद्‌भुत लीला रास।।

५. मत्स्यावतार (रम्यक वर्ष)

मत्स्यावतार धारण किया, रम्यक वर्ष हरि आय।
सभी देव वंदन करें, मनु निरन्तर ध्याय।।
प्रलय काल में नाव को, आप लगाएँ पार।
पुरुषों में उत्तम ऋषि, योग साधना अपार।।

६. कच्छप अवतार (हिरणमय वर्ष)

योगेश्वर श्री हरि लिया, कच्छप रूप अवतार।
अर्यमा पूजा स्तुति करे, नमन है बारम्बार।।
अर्थ स्वरूप जगत है, असंख्य नाम से जान।
दृश्य और अदृश्य सभी, तत्त्व दृष्टि पहचान।।

७ वाराह (उत्तरकुरु वर्ष)

यज्ञ पुरुष के नाम से, वाराह हरि अवतार।
पृथिवी तब पूजन करे, हृदय कमल रस धार।।
हिरण्याक्ष ने सम्पदा, भूमि में दीन्हा दबाय।
वराह हरि अवतरित हो, वापस कीन्हा सहाय।।

८. श्री राम सीता जी (किंपुरुष वर्ष)

श्री राम जी किंपुरुष में, सीता शोभा पाय।
हनुमत स्तुति करते हैं, सबके मन को भाय।।
श्री हरिरूप श्री राम जी, मर्यादा पुरुष कहाय।
कथा श्रवण मन लाय जो, पाप नष्ट हो जाय।।

९. आदि पुरुष श्री हरि (भारत वर्ष)

आदि पुरुष के रूप में, मैं हरि करूँ निवास।
नारद तुम पूजा करो, मेरे पास कर वास।।
सत रज तम फल पात है, भारत जन्मे लोग।
वर्णाश्रम व्यवहार से, भोगें निज निज भोग।।

नव ब्रह्मा

भृगु, पुलस्त्य और पुलह हैं, क्रतु अंगिरा जान।
मरीचि दक्ष अत्रि और, वसिष्ठ को नौ ब्रह्मा मान।।

विक्रमादित्य की सभा के नौ पण्डित

धन्वंतरि, क्षपणक हुए, अमरसिंह था नाम।
शंकु, वेताल भट्ट थे, विद्वत्ता के धाम।
घटखर्पर, कालीदास ने, नाटक लिखे महान।
वाराहमिहिर ज्योतिष निपुण, वररुचि ज्ञानी जान।।

९. सूक्त (दीर्घायु की प्रार्थना)

(अथर्ववेद पैप्पलाद शाखा ६/१८)

१. मरुद्गणों से विनय है, पूषा बृहस्पति महान।
धन प्रजा से सींचो मुझे, दीर्घायु करो प्रदान।।
२. आदित्य देव की रश्मियाँ, अग्नि इन्द्र भगवान।
धन, प्रजा से सींचों मुझे, दीर्घायु करो प्रदान।।
३. अग्नि ज्वाला प्राण भर, पूषा ऋषि ज्ञान वान।
धन, प्रजा से सींचों मुझे, दीर्घायु करो प्रदान।।
४. गन्धर्व और अप्सरा भी, भग और देवता मान।
धन, प्रजा से सींचों मुझे, दीर्घायु करो प्रदान।।

५. पृथ्वी, आकाश लोक है, अन्तरिक्ष बड़ा महान।
धन, प्रजा से सींचों मुझे, दीर्घायु करो प्रदान॥
६. सभी दिशा-प्रदिशाओं में, ऊँचे नीचे स्थान।
धन, प्रजा से सींचों मुझे, दीर्घायु करो प्रदान॥
७. कृषि से अन्न पैदा हो, औषधि सोम शुभ जान।
धन, प्रजा से सींचों मुझे, दीर्घायु करो प्रदान॥
८. नदियाँ और सिन्धु सींचते, समुद्र मेखला जान।
धन, प्रजा से सींचों मुझे, दीर्घायु करो प्रदान॥
९. सजल और कृष्ट औषधि, सबमें शक्ति समान।
धन, प्रजा से सींचों मुझे, दीर्घायु करो प्रदान॥

नौ गुण चारों वर्णों के लिए

१. गुस्सा न करना

गुस्सा करना ठीक नहिं, होता चतुर सुजान।
इससे बचना दूर हर घड़ी, होता है शैतान॥

२. सत्य बोलना।

शक्ति सत्य में है भरी, धारे जो संसार।
ईश्वर का यह रूप है, सच को कर स्वीकार॥

३. बाँटकर खाना-पीना

खाओ पियो मिलबाँटकर, यही आत्मीय व्यवहार।
समता को जागृति मिले, सुख नित नया अपार॥

४. सहन शीलता

सहनशील का गुण सदा, देता शक्ति महान।
बने संतुलन यहाँ पर रखना इसका ध्यान॥

५. स्वपत्नी से संतति

पत्नी के प्रति प्रेम कर, ये धार्मिक व्यवहार।
शक्ति धारा नारि है, ईश्वर का आभार॥

६. शौच

जीवन हो पावन तेरा, पवित्र होंय विचार।
निर्मल तन मन दोऊ हों, करना सद आचार।।

७. किसी से द्रोह न करें

राग द्वेष से दूर हो, द्रोंह न करना तात।
इनसे बच के जो रहे, होवे न आघात।।

८. सरलता

जीवन जिनका हो सरल, सादा हो व्यवहार।
सरलता से पार हो, नैय्या जग मझधार।।

९. नौकरों का पालन पोषण

आश्रित भृत्यों का सदा, रखना चाहिए ध्यान।
सन्तुष्टि से प्राप्त हो, व्यवहारिक ज्ञान।।

अकबर के नौ रत्न

१. मानसिंह

अकबर के नव रत्नों में, मान सिंह का नाम।
विश्वसनीय जनरल हुआ, किया लगन से काम।।

२. टोडरमल

वित्तमंत्री का पद रहा, टोडरमल था नाम।
भूमि व्यवस्था तंत्र में, किया व्यवस्थित काम।।

३. तानसेन

गायन वादन दक्ष थे, तानसेन था नाम।
ब्राह्मण कुल में जन्म ले, किया भजन का काम।।

४. फैजी

संस्कृत से बड़ा प्रेम था, वेद गणित का ज्ञान।
नलदमयन्ती कुरान का, फारसी में तर्जुमान।।

५. बीरबल

बीरबल ज्ञान अथाह था, सोच समझ करे बात।

प्रश्नों के उत्तर सही, फौरन देत बतात॥

६. अब्दुल फजल

अकबरनामा था लिखा, राज गतिविधि होय।
सलाहकार थे बने, सलाह लेय सब कोय॥

७. अब्दुल रहीम खानखाना

दरबार में दीवान थे, कवि फारसी विद्वान।
हिन्दी संस्कृत प्रेम था, रहीम बड़े रहमान॥

८. फकीर अजैउद्दीन

साधु भाव इनका रहा, थे प्रधान-सलाहकार।
आन्तरिक मशले हल करे, सब से करतें प्यार॥

९. मुल्ला दो प्याजा।

काम शीघ्र पूरे करें, सलाह लेत दरबार।
चर्चा बीरबल से करे, सही सलाह दरकार॥

नवनिधियाँ

१. पद्म

सोना, चाँदी, ताम्र और, अन्य धातु आगार।
यज्ञादिक शुभ कार्य में, देते दान अपार॥
सौ नील संख्या है, पद्म नाम शुभ जान।
कुबेर की नव निधि में, प्रथम नाम पहचान॥

२. महापद्म

मोती मूंगा, मणि सभी, पद्मराग मणि मान।
संग्रह विक्रय जो करे, योगीजन कर दान॥
आश्रम हेतु खर्चा करे, सात पीढ़ी दे तार।
सौपद्म संख्या कही, महापद्म का सार॥

३. मकर

तमोगुणी निधि नाम है, जापर दृष्टि होय।
अस्त्र शस्त्र वह क्रय करे, क्षत्रि से मैत्री होय॥
धन का व्यय जो करे, पुत्र न देवे साथ।

मकर संख्या नाम है, मृत्यु पा होय अनाथ।।

४. कच्छप

इसकी दृष्टि जा पे पड़े, होत तमोगुणी रूप।
पुण्यात्मा से व्यवहार कर, अविश्वसनीय स्वरूप।।
रत्नों का संग्रह करें, कछुआ समेटे अंग।
पृथ्वी में है गाढ़ता, एक पीढ़ी रह संग।।

५. मुकंद

इससे रजोगुण ही बढ़े, वाद्ययन्त्र विस्तार।
नाच गान में खर्च करे, समझे सुख अपार।।
भोग वस्तु अर्पित करे, नाम मुकंद जान।
संख्या सीमित है यहाँ एक मनुष्य तक मान।।

६. नन्द

रज तम गुण से युक्त है, धातु रत्न और धान्य।
स्वजन और अतिथि को, आधारभृत ही मान्य।।
सहन करे अपमान न, याचक को सब देत।
पूर्व मित्र से प्रेम नहीं, दूजे प्रेम कर लेत।।

७. नील

दस खरव का नील एक, सत, रजगुण का धाम।
वस्त्र धान्य, फल-फूल और मूंगा मोती सीप काम।।
बाग बगीचे पुलों का करवाता निर्माण।
चन्दन फूल को भोगता तीन पीढ़ी रह जान।।

८. शंख

रज तम से युक्त है, गुण स्वामी में बनाय।
एक व्यक्ति सीमित रहे, दूजे पास न जाय।।
पाले अपना पेट खुद, नहीं किसी को देय।
शंख निधि को जानिए, सौ महापद्म गिन लेय।।

९. खर्व

दस खरव संख्या जानिए, खर्च कहें, सब लोग।
पद्मिनी नाम विद्या कही, लक्ष्मी का उपयोग।।

नव नाथ

१. मत्स्येन्द्र नाथ

कविनारायण अवतारलियो, मत्स्येन्द्र रूप में आय।
शिव जी के उपदेश को, श्रवण किया मन लाय।।
अण्डा समुद्र तट रखा, बगुला चौंच दई मार।
मत्स्येन्द्र रोदन किया, कामिक मछेरा सुनी पुकार।।
ब्रह्मविद्या ज्ञाता हुए, तप कठोर में मग्न।
दत्तात्रय दीक्षा दियो, नाथपंथ नव रत्न।।
शिव से पा आशीष बहु, मंत्र विद्या और वेदान्त।
तीर्थाटन, अनुष्ठान से शक्ति, पा हुए शान्त।।
कौप्तज्ञाननिर्णय लिखा, मंत्र सांवरी सिद्धि जान।
हनुमान से विजय मिली, दाया योग महान।।

२. गोरखनाथ

हरिनारायण के रूप में, गोबर से प्रकटे गोरखनाथ।
दीक्षा ले तीरथ चले, शिष्य गुरु एक साथ।। १।।
मत्स्येन्द्र गुरु ने ली, शिष्य परीक्षा जान।
भिक्षा ला भोजन करूँ, लागी भूख महान।। २।।
गोरख ब्राह्मण घर गया, अलख शब्द उच्चार।
भोज सामग्री आई ले, ब्राह्मणी कहे आभार।। ३।।
गुरु ने भोजन पालिया, दो बड़ों की भूख अपार।
पुनः याचना हेतु वह गये ब्राह्मणी के द्वार।। ४।।
आँख के बदले बड़ा लिया, आये गोरखनाथ।
गुरु ने देखा शिष्य को, सफल शिष्य तू तात।। ५।।
सभी शास्त्र का ज्ञान दे, सांवरी विद्या दीन्ह।
मृत संजीवनी पाइके, मंत्र सिद्धि कर लीन्ह।। ६।।

३. जालन्धरनाथ

अन्तरिक्ष नारायण ने लिया, जालन्धर का रूप।
यज्ञ कुण्ड से प्रकट भये, गोद सुरोचना अनूप।। १।।

मकड़ी जाला देखकर, किया जालंधर विचार।
मोह छोड़कर सुन रहा, आत्मोन्नति की पुकार॥ २॥
गहन वन की अग्नि से, जल भी जलता जात।
लौ पहुँची जालंधर तक, उठो पुत्र गई रात॥ ३॥
दत्तात्रय से भेंट भई, चौदह विद्या दी दान।
तीर्थाटन गुरु साथ में, लिया मंत्र सांवरी ज्ञान॥ ४॥
वारह वर्ष तक तप किया, शिव दर्शन कर वाय।
ब्रह्मा विष्णु आशीष से, सिद्धि सब पा जाय॥ ५॥

४. कानीफानाथ

प्रबुद्धनारायण हस्ति उदर, कान में बैठे जाय।
सोलह वर्ष की आयु थी, कान से बाहर आय॥ १॥
जालंधर नाथ ने साथ ले, अग्निदेव शिव भेंट।
कानीफा के कान में, फूंका मंत्र अमेट॥ २॥
दूर हुआ अज्ञान तब, जगत ब्रह्ममय जान।
अग्निदेव निजलोक गये, शिव की आज्ञा मान॥ ३॥
वाताकर्षण संजीवनी, विद्या सभी सिखात।
देवों ने आशीष दिया, हुए कानीफानाथ॥
भूत प्रेत वैताल और, वीरभद्र बावन वीर।
नाग अश्वत्थ वृक्षतल, सिद्धि पा हुआ बलवीर॥

५. चर्पटीनाथ

पिप्पलायन नारायण हैं, चर्पटी नाथ का रूप।
कुश में जन्म बालक बने, रोये अधिक अनूप॥ १॥
सत्यश्रवा करुणा जगी, लिया बाल को साथ।
घर आ पत्नी को दिया, नाम चर्पटी नाथ॥ २॥
ब्रह्मा से पैदा हुआ, नारद करते प्यार।
दत्तात्रय से दीक्षित हुए, नाथ पंथ अनुसार॥ ३॥
बद्रीकाश्रम में तप किया, तीर्थाटन गिरिनार।
नौ करोड़ सात लाख मंत्र रच, पायी शक्ति अपार॥ ४॥
मर्त्य और पाताल में, सैर करी ब्रह्म लोक।

ब्रह्मा से आशीष ले, नारद रूप अवलोक॥५॥
सोम यज्ञ किया इन्द्र ने, लिया चर्पटी भाग।
यजन पूर्ण कर आ गये, ले समाधि किया त्याग॥६॥

६. नागनाथ

आविर्होत्र नारायण ने, नागनाथ रूप लिया धार।
नागकन्या थी पद्मिनी, अण्ड रूप साकार॥
तेजस्वी बालक हुआ, वटवृक्ष खोह मांहि।
कोशधर्म एक विप्र था, पाला मन हुलसाहिं॥
सुरादेवी गौदी लिया, रखा नागनाथ नाम।
दूर दरिद्रता तब हुई, खुशियाँ छाई धाम॥
यज्ञोपवीत धारण किया, दिया शास्त्र का ज्ञान।
मेधावी बालक हुआ, भोजन परीसा जान॥
दत्तात्रय ने मंत्र दिया, इच्छित भोजन पात।
खुद मत खाना तुम इसे, अन्यों का खिलवात॥
शिव के आज्ञा पाइके, नाथपंथ दीक्षा धार।
घोर तपे सिद्धि मिली, तीर्थाटन का सार॥

७. भर्तृहरि

दुमिल नारायण ने लिया, भर्तृहरि का अवतार।
भिक्षा पात्र से जन्म ले, बालक रोय अपार॥१॥
गुफा प्रवेश हरिणी किया, जन्में दो सुकुमार।
तीजा भिक्षा पात्र से, खुशियाँ हुई अपार॥२॥
जयसिंह भाट पत्नी सहित, बालक लिया उठाय।
काशी गंगा स्नान कर, विश्वनाथ दर जाय॥३॥
भर्तृहरि को पहचान कर, आशीष शिव का पाय।
जंगल बिच बेहोश था, सूर्य देव पहुँचाय॥४॥
भाट भाटिनी खुश हुए, भर्तृहरि को पाय।
पिंगला के भर्तृहरि हुए, आसक्ति और रास॥५॥
दूर देश हिरण ले गया, कठिन शिकार न आस।
प्यास से तड़फे भर्तृहरि, पहुँचे आश्रम पास॥६॥

दत्तात्रेय दीक्षा दई, दिया शिष्य को ज्ञान।
गोरखनाथ सही ज्ञान दे, जगत मिथ्या जान॥७॥
शिव आशीष पाया तभी, पाताल कीन्ह निवास।
गुरु कृपा से अमर है, पाया अमरपद वास॥८॥

८. रेवण नाथ

चमस नारायण का रूप है, रेवण नाथ कहाय।
रेवा नदी के तीर पर, रोदन खूब मचाय॥१॥
सहन सारूज्य किसान ने, बालक लिया उठाय।
घर में अब दो हो गये, खेलें और खिलाय॥२॥
रेवण चन्द्रमा वार्ता, दत्तात्रेय सुन लीन्ह।
ब्रह्मा जी के पुत्र हो, आठ सिद्धियाँ दीन्ह॥३॥
रेवण महिमा सिद्धि से, करता नित उपकार।
रेवण सिद्ध हुआ तब, मस्त्येन्द्र कीन्ह विचार॥४॥
दत्तात्रेय से भेंट कर, मंत्र दिया तत्काल।
जगत ब्रह्ममय भासता, अद्वैत कीन्ह निहाल॥५॥
सात बालक जीवित कियें, गायें यश संसार।
बारह वर्ष बाद दीक्षा दई, विद्या पाई अपार॥

९. गहनीनाथ

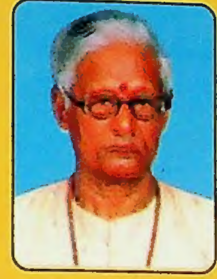
मत्स्येन्द्र-गोरख गुरु शिष्य थे, पिता पुत्र सम प्यार।
मिट्टी पुतला बन गया, संजीवन मंत्र उच्चार॥१॥
कनक गिरि ग्राम में, मधु नाम विप्र निवास।
गंगापत्नी नाम था, ले बालक रख पास॥२॥
करभाजन नारायण ही, गहनी रखा नाम।
कनकगिरि समारोह में, मिले सभी सुख धाम॥३॥
विद्या पा वापस हुए, ब्रह्मगिरि त्र्यम्बक स्थान।
घोर तपस्या तब करे, शंकर दीन्हा ज्ञान॥४॥
शक संवत हजार में, समाधिस्थ गहनीनाथ।
गौरी पीर में पुजने लगें, गैनी और गैबी नाथ॥५॥

९ अंक ज्योतिष

मंगल ग्रह अधिष्ठाता है, अंक मूल नौ जान।
साहस कर होते सफल, यह उनकी पहचान।।
खेती और जायजाद में, लेन देन होशियार।
दुर्घटना, आघात में, संयम ही एक सार।।
मंगल, गुरु और शुक्र भी, तीन छह शुभ होय।
झगड़ों से बचते रहें, फंसे प्रेम दु:ख होय।।
गहरा भूरा या नीला, नौ अंक का स्वामी जान।
ज्ञानी और विद्वान् हो, क्रियाशील पहचान।।



लेखक परिचय



नाम	श्री फूलचन्द्र शर्मा
जन्म	27 जुलाई 1938
स्थान	मु०पु० बहजोई, जिला – मुरादाबाद, उ०प्र०
शिक्षा	प्रारम्भिक से इंटर 1960 तक बहजोई संस्कृत काशी की प्रथमा परीक्षा 1654 भारतीय विद्या भवन बम्बई, संस्कृत भाषा परिचय कला I.G.D. Bombay, Arts Diploma, 1959 S.G.D. Final Diploma, Allhabad, 1960 * राष्ट्रभाषारत्न – राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, 1966 * आयुर्वेद रत्न हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 1972 * D.N.Y.S अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद्, नई दिल्ली 2003. Member of Ayush Medical Association, New Delhi Member of International Naturopathy Org., New Delhi * दिल्ली विश्वविद्यालय– कला स्नातक 1970 * National Council for Rural Higher Education, 1961 Certificate in Sanitary Inspector's course * Department of Industries U.P. (Electrician) 1959
सेवाकार्य	सन् 1964 से परम पू० गुरुदेव के मिशन में मथुरा से जुड़ा, 1 अप्रैल 1971 में महीदपुर (उज्जैन) म०प्र० सिटी में गुरुजी से दीक्षा ली। नवम्बर 1961 से 1985 तक राजस्थान चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में निरीक्षक पद पर कार्य किया। स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति लेकर 1 अप्रैल 1985 से 2001 जून तक का समयदान शान्तिकुंज, हरिद्वार को दिया। रामगंजमंड़ी, कोटा की मातृशक्ति स्मारिका, बकानी एवं झालावाड़ में जागृति स्मारिका, 2006 में सम्पादन, सहयोग एवं लेखन। गुरुसत्ता की सूक्ष्म प्रेरणा से कविता दोहे रूप में आरम्भ हुई, परिणामत: प्रकाशित हुई पुस्तकें 1. सत्यनारायण की प्रेरक कथा, 2. गीता-ज्ञानामृतम्, 3. अंक तत्त्व ज्ञान, 4. सुख-शान्ति के सूत्र तथा अन्य लघु पुस्तकें आप सज्जनों के सामने हैं।
सम्पर्क सूत्र	श्री वीरेन्द्र शर्मा, श्रद्धा आयुर्वेद केन्द्र, 8/483, राजीव कोलोनी, गली नं० 6, सुभाष नगर, बरेली-243001 (उ. प्र.)
दूरभाष	09411469277/09359107397